व्यंजना

2022-23

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'ए'+ ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2022-23

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

श्रीमती मौसमी डे

कथाकार प्रेमचंद की स्नातक प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानी 'सवा सेर गेहू' पर आधारित फ़िल्म का प्रदर्शन

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2022-23

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित

'A +' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक

डॉ. आर. एन. सिंह

प्राचार्य

संपादक मंडल

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. मौसमी डे

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय.....03

02. प्राचार्य की कलम से 04

03. बेईमानी की परत (व्यंग्य) ---------- हरिशंकर परसाई 06

04 गीतकार शंकर शैलेंद्र - ---------- गरिमा कहार.....09

05. 100 years : Past T.S. Eliot's ---------- Dr. Trilochan Kour Sandhu 12

06. विलक्षण रचनाकार : रांगेय राघव ---------- मो. सारिक अहमद खान 14

07. कविताएं ----------आलोक प्रजापति, संगीता घृतलहरे, दीक्षित कुमार, प्रीति तुलावी 17-20

08. महान क्रांतिकारी : नेताजी सुभाषचंद्र बोस - -------- मो. आदिल 21

09. चतुर किसान (लघु कथा)- ---------- जयराम 25

10. सोशल मीडिया और युवा - ---------- लक्ष्मी देवांगन 26

11. A Journey to AITSC-2022- ---------- Abhishek Nema 28

12. राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका ---------- संगीता घृतलहरे 32

13. प्रसिद्ध भौतिकी वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन - ------- लक्ष्मी देवांगन 35

14. कविताएं - ----------नम्रता, युगांश सांवरिया, शिल्पा निषाद, प्रीषिता ताम्रकार 37-40

15. सिर्फ एक कोशिश और (कहानी) ---------- डेनिस कुमार 41

16. स्मार्टफोन - ---------- ------- अंकुश शुक्ला 44

17. My NSS Journey ---------- Manasi Yadu 46

18. Dream of TSC ---------- Kritika Dewangan- 49

19. मटपरई कला ---------- जय कुमार 53

20. बसंत मन का उल्लास है, हृदय का हुलास है - ----- डॉ. ओमकुमारी देवांगन 55

21. प्राचीन शिव मंदिर, घटियारी (गंडई) - ----------प्रीषिता ताम्रकार 59

22. मिलेट मिशन (मोटे अनाज) -2023- ---------- यामिनी साहू 61

23. व्यंग्यकार हरिशकंर परसाई - ---------- तनु बघेल 64

24. संस्कृत साहित्य की महान विभूति : महाकवि कालिदास - संध्या बघेल 67

25. शंकर शैलेंद्र की कविताएं 74

26. शताब्दी स्मरण-.....76

आवरण चित्र - इतिहास विभाग द्वारा आयोजित मटपरई शिल्प कला कार्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कला शिल्प

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

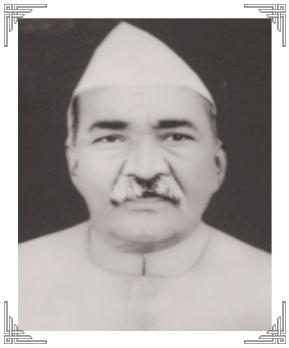

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नही मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े। शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया । ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था । तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया । स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे । शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

प्राचार्य की कलम से

शिक्षण सत्र् 2022-23 में अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राओं का महाविद्यालय परिवार के मुखिया के रूप में मैं हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागगत करता हूँ। मुझे आप सब को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारा महाविद्यालय नैक (मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) बेंगलुरु द्वारा मूल्याकित छत्तीसगढ़ प्रदेश के एकमात्र एवं प्रथम 'ए प्लस' ग्रेड की अधिमान्यता को बकरार रखा है। महाविद्यालय की इस गरिमा को बनाए रखने का श्रेय महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य, वर्तमान एवं भूतपूर्व छात्र-छात्राओं, वर्तमान एवं भूतपूर्व प्राध्यापकों, प्राचार्यों, सम्माननीय पालकों, अभिभावकों, उच्च-शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन, सम्माननीय जनप्रतिनिधि गण एवं महाविद्यालय से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े समाज के विभिन्न वर्गों के नागरिकों को जाता है। सत्र 2021-22 में हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों, एन.सी.सी., एन. एस. एस., रेडक्रॉस तथा खेल से जुड़े छात्र-छात्राओं ने अकादमिक, सांस्कृतिक, खेलकूद एवं अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठता का परिचय दिया है। महाविद्यालय के विभिन्न विभागों से छत्तीसगढ़ राज्य लोकसेवा आयोग 2020-21 में सहायक प्राध्यापक भर्ती परीक्षा में 100 से अधिक विद्यार्थियों का चयन हुआ है, इसके साथ ही राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में प्रशासनिक पदों पर महाविद्यालय के विद्यार्थी चयनित हुए हैं। मैं इन सभी को अपनी ओर से बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। सत्र 2022-23 में एन.सी.सी., एन.एस.एस. के विद्यार्थियों ने गणतंत्र दिवस परेड, राष्ट्रीय एकता कैंप एवं थल सेना कैंप में अपनी प्रभावी उपस्थिति से महाविद्यालय के गौरव को बढ़ाया है। इसी तरह खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय के बहुत से विद्यार्थियों ने देश के प्रतिष्ठित संस्थाओं में केंपस इंटरव्यू के माध्यम से रोजगार प्राप्त किया है। यही नहीं एन.सी.सी., एन.एस.एस., युवक रेडक्रॉस से जुड़े विद्यार्थियों ने समाज के बीच जाकर शिक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के साथ ही समाज में सद्भावना एवं परस्पर सहयोग की भावना पैदा करने हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया है। महाविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा अकादमिक गतिविधियों को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया है। उल्लेखनीय है कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ रोजगार मूलक शिक्षा देने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के स्व सहायता समूहों द्वारा स्वनिर्मित उत्पाद की प्रदर्शनी तथा विक्रय, गढ़वा मूर्ति शिल्प कला, मटपरई कला, बांस शिल्प कला कार्यशाला आयोजित कर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने का कार्य किया गया, महाविद्यालय के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है। इन कलाओं को सीखकर विद्यार्थी स्वयं अपना रोजगार का जरिया बनाकर अर्थोपार्जन कर सकते हैं वहीं दूसरों को भी रोजगार प्रदान कर सकते हैं।

शैक्षणिक सत्र 2022 -23 में विद्यार्थियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए उच्च-शिक्षा विभाग द्वारा 40 सहायक

प्राध्यापक के पद स्वीकृत किये गए हैं। अधोसंरचना विकास के तहत नवनिर्मित स्वायत्तशासी भवन तथा कन्या छात्रावास भवन का लोकार्पण, बॉटनिकल गार्डन तथा जूलॉजिकल पार्क का निर्माण किया गया है। नियमित तथा अमहाविद्यालयीन विद्यार्थियों की संख्या को देखते हुए पेयजल की व्यवस्था हेतु वाटर टैंक का निर्माण, खेल मैदान का उन्नयन जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। इसी क्रम में विद्यार्थियों के शारीरिक स्वस्थता के लिए जिम का निर्माण किया गया है जिसका लाभ विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों को मिल रहा है।

वर्तमान शिक्षण सत्र से विद्यार्थियों हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं जैसे - प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कोचिंग कक्षाओं का संचालन, प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों का क्रय, अध्ययन-नोटस हेतु डिजिटल लाइब्रेरी के समुचित उपयोग हेतु निरंतर प्रोत्साहन, तथा कक्षा से बाहर निकल कर प्रायोगिक ज्ञान के लिए शैक्षणिक भ्रमण का अवसर प्रदान किया गया।

ग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर रोजगारोन्मुखी मूल्य आधारित नए पाठ्यक्रमों, सर्टिफिकेट तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। विद्यार्थियों की संख्या को देखते हुए 20 नये अतिरिक्त अध्यापन कक्ष के निर्माण की माँग शासन से की गई है। माननीय विधायक जी ने अपनी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए इस कार्य को यथाशीघ्र पूर्ण कराने का आश्वासन दिया है ।

सितंबर 2022 में महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन हुआ। इसकी तैयारी के लिए महाविद्यालय के प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने बहुत कठिन परिश्रम किया तथा विद्यार्थियों, भूतपूर्व विद्यार्थियों तथा पालकों से अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ जिसका परिणाम है कि यह महाविद्यालय अधिकतम अंक हासिल कर 'ए प्लस ग्रेड' के दर्जे व गरिमा को बनाए रखने में समर्थ हुआ। इसके लिए मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि हमारे विद्यार्थी अपनी लगन तथा परिश्रम से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे, जिससे हमारा महाविद्यालय न केवल छत्तीसगढ़, अपितु देश के प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में अपनी पहचान बनाए रख सके। अंत में मैं पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित .....

(डॉ. आर.एन. सिंह)
प्राचार्य

2022-23

व्यंग्य

बेईमानी की परत

हरिशंकर परसाई

कपड़ा पहिनते, पहिनते छोटा हो जाता है, यह मैं भूल चुका था। कई सालों में ऐसी घटना ही नहीं घटी थी। मैं उनमें से नहीं रहा, जो इस साल पैंट सिलवाते हैं और अगले ही साल उसे पत्नी की पुरानी साड़ी की किनार से बाँधने लगते हैं। उच्चवर्गी और मध्यवर्गी में यही अन्तर है। उच्चवर्गी का पैंट जब छोटा होता है, तो वह उसे आगे के लिए छोड़ देता है। पर मध्यवर्गी का कुछ 'आगे' के लिए नहीं होता, इसलिए वह स्त्री की फटी साड़ी की किनार खोजने लगता है।

ठंड शुरू होने पर मैंने गरम शेरवानी निकालकर पहिनी तो देखा कि बटने नहीं लगती। पिताजी जब मेरे कपड़े सिलाने देते थे, तो दर्जी से कह देते थे जरा बढ़ते शरीर का बनाना। जब से अपने कपड़े बनवाने का जिम्मा खुद लिया है, हर बार दर्जी से कहना चाहता हूँ जरा घटते शरीर का बनाना। शरीर जब तक दूसरों पर लदा है, तब तक मुटाता है। जब अपने ही ऊपर चढ़ जाता है, तब दुबलाने लगता है। जिन्हें मोटा रहना है, वे दूसरों पर लदे रहने का सुभीता कर लेते हैं - नेता जनता पर लदता है, साधु भक्तों पर, आचार्य महत्वाकांक्षी छात्रों पर और बड़ा साहब जूनियरों पर।

मुझे ऐसा कोई आसन नहीं मिला। फिर भी कुछ मोटा हो जाने की इच्छा मरी नहीं। जब भी सफर करता, रेलवे प्लेटफार्म पर वजन तोलने की मशीन में दस पैसे डालकर वजन का टिकिट निकालता। टिकिट के दूसरे तरफ भाग्य फल लिखा है, जो अकसर दस पैसे के बदले में की गयी चापलूसी होता है। इस देश की मशीन भी चापलूसी करना सीख गयी है। सिर्फ दस पैसे में कुछ ऐसी बातें कहती है - 'आपके विचार बहुत ऊंचे हैं। आप उनके अनुसार कार्य करेंगे, तो सफल होंगे। मैं कहता हूँ - सिस्टर, कभी तो सच बोला करो। यह कोई तुम्हारा 'स्टैण्डर्ट' कि सिर्फ दस पैसे में - मशीनों की राय पर मैं ज्यादा भरोसा नहीं करता,

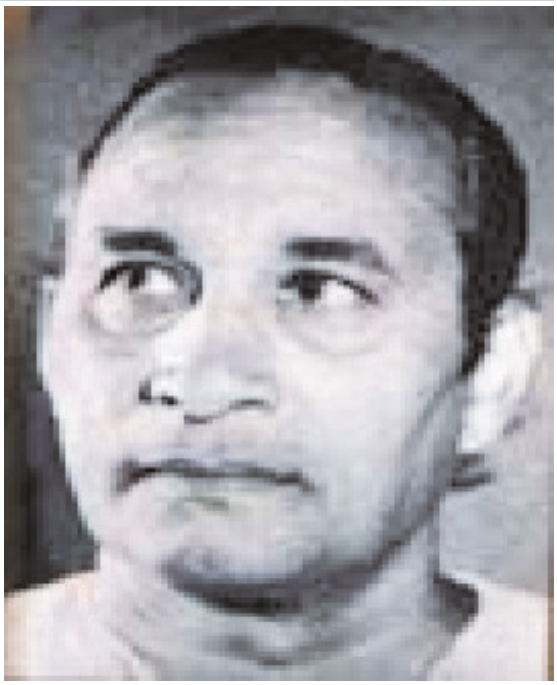

विशेषकर उन पर जो आदमी को तौलने के लिए जगह-जगह रखी हुई है। इनके मुँह में दस पैसे डाल दो तो तारीफ का एक वाक्य बोल देती है। इसीलिए मैं किसी इनाम के लिए कभी किताब नहीं भेजता। और समीक्षकों के घरों में पुत्र जन्म होते रहते हैं, पर मैं बधाई के कार्ड नहीं लिख पाता। नतीजा यह कि वजन बढ़ता भी है, तो किसी मशीन की टिकिट पर रिकार्ड नहीं होता। जमाने में वजन से ज्यादा उसके रिकार्ड का महत्व है। इसीलिए चतुर लोग दूसरे की गोद में बैठकर अपने को तुलवा लेते हैं, और बढ़े वजन का टिकिट जेब में रखे रहते हैं।

इस बार जरूर वजन बढ़ा है। अब मशीन की धांधली नहीं चलेगी। मुटाई के अहसास से शरीर में ऐसी सनसनी पैदा की कि जो हुआ फैलकर शेरवानी को तार-तार कर दूं और ठण्ड उधाड़े बदन गुजार दूं।

फिर मैं झेपा भी। वजन बढ़ना तो लड़कपन की हरकत है। कोई प्रौढ़ आदमी भी इस जमाने में क्यों मोटा होगा? लोग क्या सोंचेगे? अनाज की दुकानों के सामने थैला हाथ में लिये कतार में खड़ा आदमी सूख रहा है। जब तक उसका नम्बर आता है, दाम बढ़ जाते हैं और घर से लाये पैसे कम पड़ जाते हैं। साधारण आदमी भी जहाजों के टाइम याद रखने लगा है। अमेरिका से जहाज आयेगा तो उसमें हमारे लिए गेहूं होगा, जापान से आयेगा तो चावल होगा। अमेरिका में जहाजी कर्मचारियों की हड़ताल से भारतीय जन चिन्तित हो जाता है। भुखमरी से हममें अन्तर्राष्ट्रीय चेतना आ गई। अगर अकाल पड़ जाये, तो हर भारतीय अपने को विश्व मानव समझने लगेगा।

यह वक्त भी कहीं मोटे होने का है। मैं शर्म से कमरे में छिपा बैठा रहा, जैसे कुमारी गर्भ को छिपाती है। मेरे देशवासियों, मुझ बेशर्म को माफ करना। भारत माता, क्षमा करना, तेरा यह एक कपूत मोटा हो गया। मैं तीसरी पंचवर्षीय योजना का एक झूठा आंकड़ा हूं, जो तुम्हें धोखा दे रहा है। सुब्रमन्यम, माफ करना यार, तुम्हारी खाद्य - व्यवस्था के

बावजूद मैं मोटा हो गया। टी.टी भाई, तुम भी मुझे माफ करो। मैने तुम्हारी अर्थनीति का अपमान किया है। कन्हैयालाल मुंशी, अजितप्रसाद जैन साधोवा पाटिल मेरे पिछले खाद्य मंत्रियों तुम्हारे सामने में शर्मिन्दा हूं। चिन्तमन देशमुख और मोरारजी भाई, मेरे भूतपूर्व अर्थ मन्त्रियों, मैं तुम्हें मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा। मैं पिछले 15 वर्षों की उलझी अर्थ नीति और खाद्य-नीति के प्रति अपराधी हूं।

ग्लानि से दुबला होने में देर लगती है और पानीदार ही दुबला होता है। मुझे इस बढ़े शरीर की व्यवस्था करनी ही होगी। शेरवानी को खुलवाना ही पड़ेगा। मैंने छोटे भाई से कहा वह बहुत खुश हुआ और मुहल्ले में जितने लोगों को सूचित कर सकता था, कर आया कि मेरा भाई मोटा हो गया है। मैं डरा कि अभी लोग आयेंगे और कहेंगे - सुना है साहब, आप मोटे हो गये। बधाई है। ईश्वर सबको इसी तरह मोटा करे।

लेकिन शाम तक मैने लज्जा-भाव को जीत लिया। इसमें क्या शर्म की बात है। मोटा हुआ है, तो मेरा ही शरीर हुआ है। मेरे कारण कोई दूसरा तो मोटा नहीं हुआ। मैं इशारे से इस उपलब्धि को बताने भी लगा। दोस्त ठण्ड की बात करते तो मैं बीच में कह देता हाँ, ठण्ड सिर पर आ गयी और हमारे गर्म कपड़े छोटे पड़ गये। बटने नहीं लगती।

दो-तीन दिनों में यह बात फैल गयी और मेरे एक बुजुर्ग रिश्तेदार यह कहते मेरे घर आये लड़के ने बताया कि तुम मोटे हो गये। मैंने सोचा, देख आयें।

दुर्बलता का मैं अभ्यस्त हो गया था। गर्वपूर्वक दुबला रह लेता था। कोई ऋषि मोटा नहीं हुआ। वे सब सूखे और क्रोधी होते थे। कोई उनके चरण न छुए तो उसे शाप देकर बन्दर बना देते थे। पर न मैं वैसा दुबला था, न वैसा क्रोधी। मैं 'आजानुभुज' और 'आकण्उटांग' वाला हूं याने बैठने में टांगे कण्ठ तक आ पहुँचती है। सोचता था, भुजाओं और टांगों का जो अतिरिक्त भाग है, वह बाकी शरीर में चिपका दिया जाय तो ठीक हो जाय। पुराने जमाने में सुन्दरियों के लिए ऐसी सर्जरी होती होगी कि इस अंग का कुछ काटकर उस अंग में चिपका दिया। प्रमाण चाहिए तो बिहारी की यह पंक्ति काफी है - कटि को कचन काटि कै, कुचन मध्य धरि दीन। (इससे दोनों ठीक हो गये) एक और

तरह की सर्जरी है, जिसमें बिना चाकू के पेट काटा जा सकता है। वर्तमान सभ्यता में इस रक्तहीन सर्जरीने काफी उन्नति की है। जो दस पाँच के पेट काट सके उसका पेट बड़ा हो जाता है। वे सारे पेट उसके पेट में चिपक जाते हैं। इस विद्या के विद्यालयों में मुझे प्रवेश नहीं मिला, वरना मै भी यह सर्जरी सीख लेता और पेट बढ़ा लेता।

यो हमारी पूरी दार्शनिक ट्रेनिंग देह के खिलाफ जाती है। देह की सेवा बड़ी हीन बात मानी गयी है। दो-तीन साल पहिले एक मठाधीश स्वामीजी ने हमें यह बात अच्छी तरह समझा दी थी। वे अच्छे पुष्ट और गौरवर्ण सन्यासी थे। तख्त पर बैठे थे और देह की तुच्छता पर ऐसा जोरदार प्रवचन कर रहे थे कि हमें अपने शरीर से घृणा होने लगी थी। जो अच्छी से अच्छी चीज के प्रति नफरत पैदा कर देते हैं। वह कह रहे थे- यह मलमूत्र की खान, यह गन्दा शरीर मिथ्या है, नाशवान है, क्षणभंगुर है। मूरख इसे स्वादिष्ट पकवान खिलाते हैं, इसे सजाते है, इस पर इत्र चुपड़ते हैं। वे भूल जाते हैं कि एक दिन यह देह मिट्टी में मिलेगी और इसे कीड़े खायेंगे। इतने में एक सेवक केसरिया रबड़ी का गिलास लाया और स्वामीजी ने उसे गटक लिया। मेरे पापी मन में शंका उपजी। पर पास में बैठे एक भक्त ने समझाया यह मत समझ लेना कि स्वामीजी स्वादिष्ट रबड़ी खाते हैं। अरे, वे तो कीड़ों मकोड़ों के खाने के लिए देह को पुष्ट और स्वादिष्ट बना रहे है। इस मृत देह को कीड़े खायें, तो उन्हें भी मजा आ जाय यही सोचकर स्वामीजी रबड़ी पीते हैं। श्रद्धाहीन सोचते हैं कि स्वामीजी माल खाते हैं, यह नहीं जानते कि वे तो कीड़ों के लिए 'डिनर' बनाने में लगे हैं।

वह उपदेश आज काम आया। सन्तोष भी हुआ कि अगर स्वामीजी का 'मेनू' पहिले दर्जे का है तो मेरा भी दूसरे का तो हो ही गया। मैं मिथ्या गर्व से बच गया। जो खुशी थी, वह लोगों के सवालों ने छीन ली। लोग पूछने लगे मोटे हो रहे हो। क्या बात है? मैं क्या जवाब देता। कह दिया - स्वास्थ्य का ख्याल रखता हूं। वह जो स्वामी शिवानन्द की किताब है न, उसी के मुताबिक चल रहा हूं। उसमे लिखा है - समय पर भोजन करना चाहिए, मदिरा आदि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए, मिर्च मसाले नहीं खाना चाहिए, मन में बुरे विचारों को नहीं आने देना चाहिए। किसी को सन्तोष नहीं हुआ। लोग कहते मजाक छोड़ो। सच बताओ, मोटे क्यों रहे हो। पीठ पीछे जब कोई यह प्रश्न करते , तो वह कंटीला हो जाता। वे आपस में कहते वह आजकल मुटा रहा है। क्या बात है? मैं इस सवाल से घबड़ा उठा। मैं जब दुबला था, तब किसी ने प्रधानमंत्री से नहीं पूछा कि यह शख्स दुबला क्यों है। किसी ने संविधान नहीं देखा कि इसमें नागरिकों के कर्तव्यों में दुबला होना लिखा है या नहीं। हम सबने दुबले होने को अपनी नियति मान लिया है। कोई मोटा हो जाता है, तो हजार अंगुलियां उठने लगती है। लोग यह समझ रहे थे कि या मैं गाँजा शराब के 'स्मगलिंग' में लगा हूँ या किसी संस्था का मंत्री बनकर चन्दा खा रहा हूं, या कहीं से काला पैसा ले रहा हूं, या घूसखोरी के लिए किसी का एजेण्ट हो गया हूं। रोटी खाने से कोई मोटा नहीं होता, चन्दा या घूस खाने से मोटा होता है। बेईमानी के पैसे में ही पौष्टिक तत्व बचे हैं।

पिछले 17 सालों से मोटे होने वालों ने ऐसी परम्परा डाली है कि ईमानदार को मोटे होने में डर लगता है। स्वस्थ रहने की हिम्मत नहीं होती।

मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया है कि जिनकी तोंदे इन 17 सालों से बढ़ी है, जिनके चेहरे सुर्ख हुए है, जिनके शरीर पर माँस आया है, जिनकी चर्बी बढ़ी है - उनके भोजन का एक प्रयोगशाला में विश्लेषण करने पर पता चला है कि वे अनाज नहीं खाते थे, चन्दा, घूस, काला पैसा, दूसरे की मेहनत का पैसा या पराया धन खाते थे। इसलिए जब कोई मोटा होता दिखता है, तो सवाल उठते हैं। कोई विश्वास नहीं करता कि आदमी अपनी मेहनत से ईमान का पैसा कमाकर भी मोटा हो सकता है।

बेईमानी की तरह यह थोड़ा-सा मांस मेरे ऊपर चिपक गया है। मेरे दुश्मनों, एक वैज्ञानिक तथ्य तुम्हारे सामने है। मैं मोटा होकर कमजोर हो गया हूँ। मेरी बदनामी उड़ाने का ऐसा सुनहरा अवसर तुम्हें कभी नहीं मिलेगा। तुम जल्दी करो। मेरा क्या ठिकाना है? मैं चार दिनों बाद फिर दुबला हो जाऊंगा। तब हाथ मलते रह जाओगे।

000

गीतकार शंकर शैलेंद्र

गरिमा कहार
एम.ए. (हिन्दी) III सेमेस्टर

हिंदी सिनेमा के लोकप्रिय गीतकार तथा प्रगतिशील कवि शंकर शैलेंद्र का जन्म 30 अगस्त 1923 को रावलपिंडी पंजाब (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनका मूल नाम शंकरदास केसरी लाल शैलेंद्र था। उनके पिता मूलतः बिहार के आरा जिले के निवासी थे जो रावलपिंडी में फौज में थे । शैलेंद्र का जन्म यहीं रावलपिंडी में हुआ। फौज से रिटायर होने के पश्चात उनके पिता मथुरा में आ बसे । यहीं घर पर ही शैलेंद्र ने उर्दू तथा फारसी की शिक्षा प्राप्त की । उनके बड़े भाई श्री डी.राव रेलवे में नौकरी में थे पिता की मृत्यु के बाद बड़े भाई ने उन्हें पढ़ाया लिखाया। शैलेंद्र जब मथुरा के राजकीय इंटर कॉलेज में पढ़ रहे थे तब 1939 में हाई स्कूल की परीक्षा में पूरे उत्तर प्रदेश में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इंटर कॉलेज में पढ़ते हुए उन्होंने वार्षिकोत्सव में खूब इनाम जीते। पढ़ाई के बाद शैलेंद्र रेलवे की नौकरी में लग गए। कुछ दिनों बाद उनका तबादला मथुरा से मुंबई के पास माटुंगा के इंजीनियरिंग यार्ड में इंटर्नशिप के लिए हो गया । उनके रेलवे यार्ड से प्रगतिशील लेखक संघ का कार्यालय बहुत करीब था, रेलवे के काम से मुक्त होकर वह अपने कवि साथियों के बीच चला जाया करता था। यह कार्यालय पृथ्वीराज कपूर के रॉयल ओपेरा हाउस के ठीक सामने हुआ करता था यहीं उनकी मुलाकात राज कपूर से हुई। एक दिन अपने कवि साथियों के बीच शैलेंद्र 'जलता है पंजाब' शीर्षक कविता पढ़कर सुनाया। कहते हैं कि राजकपूर इससे बहुत प्रभावित हुए और उनसे अपनी फिल्म के लिए गीत लिखने का आग्रह किया। शैलेंद्र ने उनके आग्रह को यह कहकर ठुकरा दिया कि वह अपना गीत नहीं बेचते। लेकिन कुछ महीनों बाद जब उन्हें आर्थिक तंगी हुई तो वह राज कपूर के पास गए और उनसे पैसे उधार मांगे और जब उनके पास पैसे आ गए तो लौटाने गए। राज कपूर ने उनसे पैसे लेने से इन्कार करते हुए उसके बदले अपनी फिल्म बरसात के लिए गीत लिखने के लिए कहा । उन्होंने शैलेंद्र से दो गीत लिखवाए जिसमें -'बरसात में तुमसे मिले हम सजन हमसे मिले तुम' जो बरसात फिल्म का थीम सांग के रूप में स्वीकृत हुआ। इसके बाद उन्होंने फिल्मों के लिए खूब गीत लिखे और शोहरत हासिल किया। उन्होंने लगभग 800 गीत लिखकर उन्होंने फिल्म जगत में खूब नाम कमाया। बरसात, आवारा, गाइड, तीसरी कसम और भी ऐसी बहुत -सी फिल्में हैं जिनके गीत हैं जिसेआज भी लोग गुनगुनाते हैं और शैलेंद्र को याद करते हैं।

शैलेंद्र के गीतों में अपनी मिट्टी की सोंधी महक है तो गरीबों, मजदूरों की मुखर आवाज भी है। एक साथ फिल्मी गीत लिख रहे थे तो अंग्रेजीराज में देश की दुर्दशा

तथा आज़ादी के बाद मजदूरों, किसानों के दुख दर्द को भी वाणी प्रदान कर रहे थे, देश के मज़दूरों, कामगारों के संघर्ष के स्वर में स्वर मिला रहे थे। इस तरह नौकरी, फिल्म जगत और मजदूर आंदोलन के बीच अपना अध्ययन जारी रखते हुए उन्होंने दुनिया के श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन किया, मार्क्सवादी विचारकों के विचारों से परिचित हुए और उनसे जीवन दृष्टि प्राप्त की। सर्वहारा वर्ग के दुख दर्द को अपना मानकर उनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता, पक्षधरता जाहिर की।

आरंभ में हर नए कवि की तरह शैलेंद्र भी प्रेम की भावुक कविताएं लिखते रहे पर जैसे-जैसे वैचारिक रूप से परिपक्वहोते गए उनके गीतों, कविताओं का स्वर बदलता गया।

शैलेंद्र ने मुंबई में रहते हुए महाजनों सूदखोरों के शोषण को देखा था। उन्होंने गरीबी में जीने वाले उधार की जिंदगी जीते गरीबों को देखा था, उन्हें देखकर दुखी होते थे और उनका हृदय तड़प उठता; उनके कंठ से विद्रोही स्वर फूट पड़ते, हजारों की भीड़ में, सभाओं में, जुलूसों में गाते। उन्होंने मजदूरों के आंदोलन के गीत लिखे -

'हर जोर जुल्म की टक्कर में
हड़ताल हमारा नारा है।'

शैलेंद्र का यह गीत आज भी अपनी हक की लड़ाई लड़ते मजदूरों, कर्मचारियों द्वारा आंदोलन के दौरान गाया जाता है । शैलेंद्र ने ऐसे बहुत से गीत लिखे हैं, उनमें 32 जनगीत संग्रह में संग्रहित हैं जो मराठी के लोक गायक अन्नाभाऊसाठे को समर्पित है ।

शैलेंद्र के गीतों में एक तरफ परतंत्र भारत का दृश्य उपस्थित है तो दूसरी ओर आजाद भारत का दृश्य। पहले दौर में वह आजादी के लिए अलख जगाते फिरते हैं तो दूसरे दौर में आजादी के बाद की परिस्थितियों को अपने गीतों और अपनी कविताओं का विषय बनाते हैं। अंग्रेजीराज में मजदूरों, किसानों की स्थिति को देखकर शैलेंद्र को क्षुब्ध होते देखा जा सकता है -

खेतों में खलिहानों में,
मिल और कारखानों में,
चल सागर की लहरों में,
इस उपजाऊधरती के,
उत्तप्त गर्भ के अंदर,
कीड़ों से रेंगा करते,
वह खून पसीना करते।

शैलेन्द्र शोषक पूंजीवादी व्यवस्था को आगाह करते हुए कहते हैं --

'निर्धन के लाल लहू से,
लिखा कठोर कठोर घटनाक्रम,
यूं ही आए जाएगा जब तक पीड़ित धरती से,
पूंजीवादी शोषण का नत निर्बल के,
शोषण का यह दाग न धुल जाएगा,
तब तक ऐसा घटनाक्रम,
यूं ही आए जाएगा।

देश आजाद हुआ तो शैलेंद्र ने आजादी के स्वागत में गीत गाए । '15 अगस्त' कविता में शैलेंद्र आजादी का स्वागत करते हैं -----

'जय जय भारत वर्ष प्रणाम,
युग युग के आदर्श प्रणाम,
शत-शत बंधन टूटे आज,
बैरी के प्रभु रुठे आज,
अंधकार है भाग रहा,
जाग रहा है तरुण बिहान।'

लेकिन आजादी के बाद भी जब लोगों के दुख दर्द

कम नहीं हुए, भूख और बेरोजगारी नहीं मिटी, आर्थिक, सामाजिक विषमता कम नहीं हुई तब कवि हृदय तड़प उठा। आजादी से स्वप्न टूटा, कवि का मोहभंग हुआ । शैलेंद्र ने
उस पर गहरा व्यंग्य किया--

ढोल बाजे ऐलान हुआ
आजादी आई..............
पर बदला कुछ नहीं।
'वही नवाब वही राजे, कोहराम वही है
पदवी बदल गई है किंतु निजाम वही है
परदेसी माल, स्वदेशी पहरेदारी।

कवि शैलेंद्र ने शोषक पूंजीपति चाहे देशी हो या विदेशी किसी को नहीं बख्शा।

कवि शैलेंद्र ने आजादी के बाद की स्थिति को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है --

'आजादी की चाल बिरंगी,
घर घर आया वस्त्र की तंगी
तरस दूध को बच्चे सोए,
निर्धन की औरत नंगी
बढ़ती गई गरीबी दिन दिन,
बेकारी ने मुंह फैलाया।'

26 जनवरी 1950 को नया संविधान बना लेकिन यह संविधान भी नागरिक अधिकारों का संरक्षण नहीं कर पाया। रोटी, कपड़ा, मकान जैसी बुनियादी सवालों पर अधिकारों के लिए जनता को सड़क पर आना पड़ा। कवि ने लोकतंत्र की विसंगतियों के विरोध में लिखा --

'मुझ जैसे यह लाखों हैं जो
मांग रहे हैं रोजी रोटी
कपड़ा बोनस और महंगाई,
मांग रहे हैं जीने का अधिकार
स्वदेशी सरकारों से।'

शैलेंद्र ऐसी व्यवस्था का विकल्प सुझाते हैं वे उन्हें समाजवाद का स्वप्न दिखाते हैं। इसके लिए किसानों, मजदूरों की एकता, संगठन की बात करते हैं।
उनका कहना है यह आजादी अधूरी है -

'आजादी है वही ढाक के तीन पात है बर्बादी है,
तुम किसान मजदूरों पर गोली चलवाओ
और पहन लो खद्दर देशभक्त कहलाए
हमें ना छल पाएगी यह कोरी आजादी ।
उठ री उठ, और किसानों की आबादी।'

शैलेंद्र ने गीत और कविता लिखने के साथ ही फिल्म भी बनाई । सुप्रसिद्ध लेखक 'फणीश्वर नाथ रेणु' की कहानी मारे गए गुलफाम उर्फ़ 'तीसरी कसम' पर फिल्म बनाई । अपनी सारी जमा पूंजी उसमें खपा दी । यहाँ तक की लोगों से कर्ज लिए, लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चल पाई इससे उन्हें काफी निराशा हुई और इसी निराशा में डूबे हुए शैलेंद्र 1966 में इस दुनिया से कूच कर गए।

उनके मरने के बाद उनकी यह फिल्म मास्को विश्व फिल्म महोत्सव में पहुँची और बाद में या फिल्म दर्शकों के बीच खूब सराही गई। लेकिन यह सब देखने के लिए शैलेंद्र जीवित नहीं रहे। यह वर्ष उनका जन्म शताब्दी वर्ष है देश के तमाम लेखक और संस्कृति कर्मी अपने इस गीतकार कवि को स्मरण कर रहे हैं। उनके इस गीत को गाकर जीने का हौसला प्राप्त कर रहे हैं ।

''तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत पर यकीन कर ,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर ।
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर.......''

(संकलित) 000

100 Years : Past T.S.Eliot's "The Waste Land -A Post Pandemic Poem."

- Dr Tarlochan Kaur Sandhu

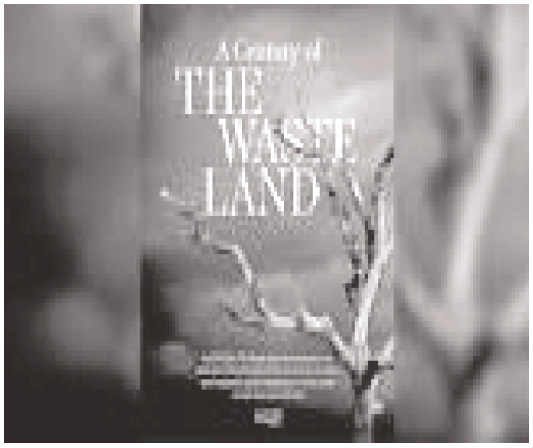

'I had never thought that Death had undone so many'. The line which occurs in "The Waste Land" reverberates in my subconscious grieving for those who lost their lives during COVID-19 Pandemic in the last two years. Thomas Stearns Eliot's" The Waste Land," a magnum opus, a poem of 435 lines, is marking its centenary in the year 2022. Originally published in October 1922 in the first issue of a literary magazine 'The Criterion', the epic is considered to be the most influential, experimental and difficult because of its technique and non-linear structure. However in the poem, there are five movements (sections). Each section has layers of interpretations. The other remarkable work also published in the same year was James Joyce's Ulysseus, equally known for its new form and technique. Eliot's poem brought revolution as it signified the advent of modernism depicting the stark realities and grim future of human kind affected during and after the First World War. The aftermath of the war ridden modern world is symbolically represented as the waste land which is empty, desolate and deprived of new life and growth. It has turned barren, and is sick, diseased for which there is no cure or relief. The poet somewhere was aware of his own physical and mental sickness due to frequent visits and stay in a sanatorium, the attack of Spanish Flu and the spread after the war could be related to the present scenario with the similar sense of despair and loss.

The present world seems to be so futile, bleak and devoid of humanitarian principles, empty of compassion, the best lack conviction, and the very sources of leading a purposeful life.

I have been teaching this poem for the last 30 years and every time I find some new motifs and meanings...I happen to

revisit Eliot's Land. Spiritually barren devoid of all moral, religious and traditional values during this pandemic. Though the covid pandemic is over but in the deluge of this crisis, the fragmented souls of the bedizens, their pain and suffering has lead to a kind of disbelief. The characters are maimed, neurotic, and hysterical and lack mutual faith, live in loveless relationships, no refuge and shelter for many. April is (was) the cruelest month, which brings false hope, if they get shelter, it is only under the rock that is (Temple/Church/) hospitals or finally to the burial ground.

The theme also reminiscent of the front line warriors, doctors and all those who sacrificed, became martyrs because they stood up when no one could dare to come close due to physical distancing norms... But There were also who empathized and resuscitated the "dead to life.", yet the bodies floating in the rivers possible right and the waters....need to be purified, all the rivers, be it the Ganga or the river Thames.As the poet finally journeys from the desert and dry land hears the sound of thunder and showers which bring relief to the dry land and parched souls. The poem ends with a note of belief for the modern human beings to follow the three principles or teachings for leading spiritual and meaningful lives: Datta, Damyata and Shantih, Shantih, Shantih, signify absolute peace that transcends under standing and fragmented life...

विलक्षण रचनाकार : रांगेय राघव

मो. सारिक अहमद खान
एम.ए. (हिन्दी) II सेमेस्टर

रांगेय राघव हिंदी के सर्वोच्च रचनाकारों में से एक है। वे विलक्षण रचनाकार थे जिनके लिए लिखना ही जीवन था। पराधीन भारत में अंग्रेजी साम्राज्य विरोधी चेतना के विकास और स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी रही। उन्होंने न सिर्फ अपने लेखन से बल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर आंदोलन में भाग लिया। भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुराणों पर उनका विस्तृत अध्ययन था। खास तौर से पुरातत्व, इतिहास में उनकी विशेष रूचि थी जो कहीं ना कहीं उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होती है। रांगेय राघव का जन्म उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में 17 जनवरी 1923 में हुआ था। उनका पूरा नाम तिरूमल्लै नंबाकम् वीर राघव आचार्य था, लेकिन उन्होंने अपने पिता रंगाचार्य के नाम से रांगेय स्वीकार किया और अपने स्वयं के नाम राघवाचार्य से राघव शब्द लेकर अपना साहित्यिक नाम 'रांगेय राघव' रखा। उनकी पढ़ाई आगरा में ही हुई। सन् 1944 में सेंट जॉन्स कॉलेज से स्नातकोत्तर और 1948 में आगरा विश्वविद्यालय में गुरु गोरखनाथ पर पीएचडी की।

रांगेय राघव तमिल, तेलगू के अलावा हिंदी, अंग्रेजी, ब्रज और संस्कृत भाषा के विद्यवान थे। उन्हें साहित्य की सभी विधाओं में महारत हासिल थी। उन्होंने मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में उपन्यास, कहानी, कविता, आलोचना, नाटक, यात्रा वृतांत, रिपोर्ताज के अतिरिक्त सभ्यता, संस्कृति, समाजशास्त्र, अनुवाद, चित्रकारी, शोध और व्याख्या के क्षेत्रों में डेढ़ सौ से अधिक पुस्तकें लिखी। अपनी अद्भुत प्रतिभा और असाधारण ज्ञान और लेखन क्षमता के कारण वे अद्वितीय लेखक माने जाते हैं। पन्द्रह साल की छोटी उम्र से ही उन्होंने लिखना शुरू कर दिया था। साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। यही नहीं आजादी के आंदोलन में

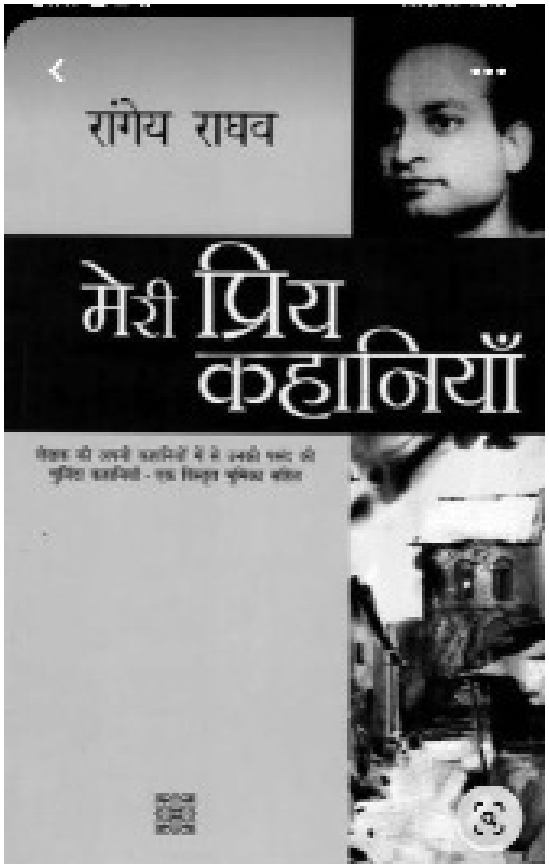

जब भी मौका मिलता, वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मदद करते। अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ पैम्फलेट तैयार करके, उन्हें बांटते। नौजवानी में अंग्रेजी कहानियों से प्रभावित होकर, उन्होंने 'अंधेरी की भूख' नाम की कहानी लिख डाला था। इस संग्रह की ज्यादातर कहानियां भूत-प्रेतों की कहानियां थीं। बाद में वे कविताओं की ओर उन्मुख हुए। शुरुआत में उन्होंने कविताएं ही ज्यादा लिखी। 'अजेय खंडर, रांगेय राघव का पहला खंडकाव्य था। इस खंडाकाव्य में उन्होंने स्तालिनग्राद में लड़े गए युद्ध में सेना की बहादुरी और नाजियों की बर्बरता का वर्णन किया है।

स्तालिनग्राद के संघर्ष को उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ दिया था। 'अजेय खंडहर' के अलावा 'मेधावी' और 'पिघलते पत्थर' कविता संग्रह में भी उन्होंने साम्राज्यवाद, सामंतवाद, शोषण, असमानता और वर्गभेद के विरोध में अपनी आवाज बुलंद की है।

रांगेय राघव ने जर्मन और फ्रांसीसी के कई साहित्यकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया। उनके अनुवाद मूल रचना सरीखे लगते हैं। उन्होंने शेक्सपियर के 15 नाटकों का अनुवाद किया है इसलिए उन्हें हिंदी के शेक्सपियर की संज्ञा दी जाती है। इसके अलावा उन्होंने संस्कृत की रचनाओं का भी हिंदी अनुवाद किया है।

रांगेय राघव जी नारी का बहुत सम्मान करते थे इसकी शुरूआत उनके घर से ही हुई है। वे अपनी मां को बहुत मानते थे। उनके लिए सबसे अधिक आदरणीय उनकी मां थी। वे अपनी हर कृति को सर्वप्रथम अपनी मां को सुना कर उनका सुझाव लेते थे।

रांगेय राघव के अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास उन चरित्रों से जुड़ी महिलाओं के नाम पर लिखे गए हैं जैसे 'भारती का सपूत' जो भारतेंदु हरिशचंद्र की जीवनी पर आधारित है। 'लखीमा की आंखे' विद्यापति के जीवन पर 'रत्ना की बात' तुलसी के जीवन पर, और 'देवकी का बेटा' कृष्ण के जीवन पर आधारित है। इसके अलावा रांगेय राघव ने ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों को स्त्री के नजरिए से देखने की कोशिश की है जबकि उस समय हिंदी साहित्य में आधुनिक स्त्री विमर्श का पदार्पण भी नहीं हुआ था। उनकी कहानी 'गदल' आधुनिक स्त्री विमर्श की कसौटी पर खरी उतरती है। यह कहानी बहुत लोकप्रिय हुई। अनेक विदेशी भाषाओं में इसका अनुवाद भी हुआ। आज भी यह हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है 'गदल' की प्रशंसा करते हुए आलोचक शिवदान सिंह चौहान ने लिखा था 'गदल' को भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट प्रतिनिधि कहानियों के साथ रखा जा सकता हैं। रागंये राघव का पहला उपन्यास 1946 में 'घरौंदा शीर्षक से प्रकाशित हुआ यह विश्वविद्यालय जीवन पर लिखा गया हिंदी का पहला उपन्यास था। 'घरौंदा' उपन्यास से वह प्रगतिशील कथाकर के रूप में चर्चित हुए इसी वर्ष बंगाल के अकाल पर लिखा गया उनका उपन्यास 'विषादमठ' प्रकाशित हुआ।

मोहनजोदड़ो की सभ्यता को केंद्र में रखकर लिखा गया उनका उपन्यास 'मुर्दो का टीला' से उन्हें देशव्यापी प्रसिद्धि मिली। हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में 'मुर्दो का टीला' का विशेष स्थान है।

रांगेय राघव ने आलोचना के क्षेत्र में बहुत अधिक काम किया है 'काव्य कला और शास्त्र', भारतीय चिंतन, 'समीक्षा और आदर्श, काव्य, यथार्थ और प्रगति, हिंदी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका 'भारतीय पुर्नजागरण की भूमिका, तुलसीदास का कथा - शिल्प और 'आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली' उनकी प्रमुख आलोचना संबंधी किताबें हैं। इसके अलावा 'प्रगतिशील साहित्य के मानदंड हिंदी आलोचना में उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। इस पुस्तक में उन्होंने मार्क्सवाद के विषय में अपने विचार दिए हैं। मार्क्सवाद का उन पर गहरा प्रभाव था फिर भी उन्होंने बहुत तार्किकता के साथ लिखा है कि

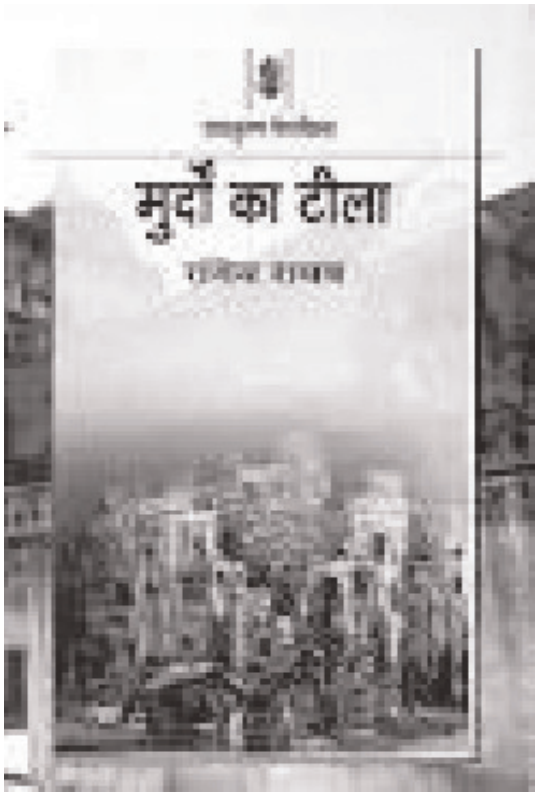

''माक्सवाद यह नहीं कहता कि प्रत्येक देश में एक सा ही विकास होता है। वह यही बतलाता है कि अनेक विभिन्नताओं के बीच एक समता होती है, पर इसका अर्थ यह नहीं होता है कि इंग्लैंड में जो कुछ हुआ, वही सब जर्मनी में भी होना चाहिए या चीन में उसकी पुनरावृति होनी चाहिए।''

यह समझने पर अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती है। जिस देश पर हम विचार करें, पहले उस पर मार्क्सवाद लागू न करें, वरन् उस भूमि को समझें, जिस पर मार्क्सवाद लागू करना हैं। अर्थात जिस देश के विषय में सोचें उसका इतिहास जाने लें। महान सिद्धांत हवा में पैदा नहीं हुए इतिहास के मनन के परिणाम थे।'

(प्रगतिशील साहित्य के मानदंड (पेज - 256)।

रांगेय राघव का मानवता और वैश्विक भाईचारे में गहरा यकीन था। उनके मन में एक ऐसे समाज की कल्पना थी जिसमें असमानता, अत्याचार और शोषण न हो। महिलाओं और दलित, वंचितजनों को उनके अधिकार मिले। एक वर्गविहीन समाज जिसमें न कोई छोटा न कोई बड़ा हो जाति, धर्म, लिंग रंग, भाषा और नस्ल के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो।

12 दिसंबर 1962 कैंसर के कारण उनकी मृत्यु हो गई। वह बचपन से ही बीमार रहते थे। बचपन में वह टाइफाइड मलेरिया आदि से पीड़ित थे। युवावस्था में अनिद्रा के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। अनिद्रा को वह खुद के लिए ईश्वर का दिया हुआ वरदान मानते थे इस संबंध में उनका कथन है कि 'अनिद्रा तो हम साहित्यकारों के लिए वरदान है जितना जागेंगे उतना लिखेंगे।'लेखन कार्य के लिए वे अथक परिश्रम करते थे इस परिश्रम के कारण वह अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं रहे। जिसकी वजह से उनका शरीर कमजोर होने लगा। विभिन्न तरह के उपचार से भी कोई फायदा नहीं हुआ जिससे वह निराश हो गए और जीवन के प्रति अजीब-सी विरक्ति उत्पन्न हो गई परंतु ऐसी स्थिति में भी उन्होंने अपना लेखन कार्य नहीं छोड़ा अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले ही उन्होंने मृत्यु पर एक कविता लिखी थी। ooo

(संकलित)

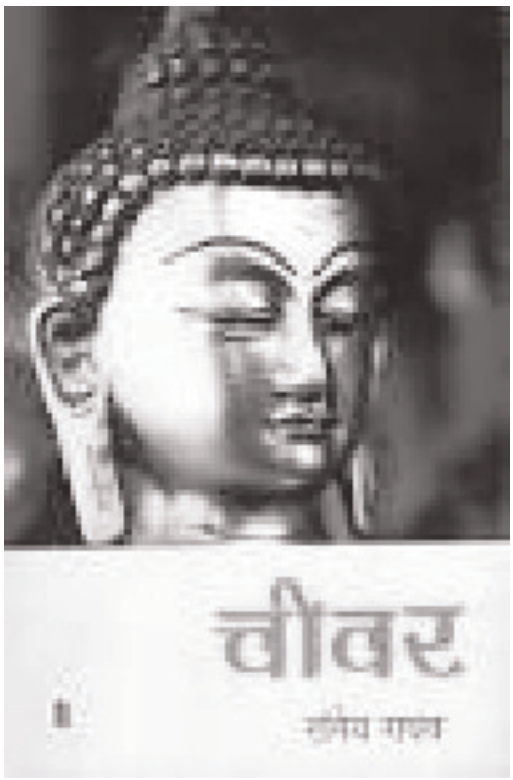

मेरे सुपरहीरो

आलोक प्रजापति
बी.एस-सी., भाग-दो

वो न तो आसमान में उड़ते हैं
और न ही विलेन से लड़ते हैं,
लेकिन मेरे सुपर हीरो
सभी सुपर हीरो में सबसे अच्छे हैं।
मेरे सुपर हीरो के पास
कोई महाशक्ति नहीं है,
लेकिन वह मेरी सभी इच्छाओं को पूरा करते हैं।

दुनिया मेरे सुपर हीरो को नहीं जानती
लेकिन मेरे सुपर हीरो ही मेरी दुनिया है।
बस एक ही दिक्कत है कि
मेरे सुपर हीरो मुझसे झूठ बोलते हैं।
वह झूठ बोलते हैं
कि वह भूखे नहीं हैं,
वह झूठ बोलते हैं कि
वह रोते नहीं हैं
वह झूठ बोलते हैं कि
वह थकते नहीं हैं
वे कहते हैं कि वह खुश हैं
लेकिन वह यह सब मेरी खुशी के लिए करते हैं।

देखो देखो, वर्षा ऋतु आयी

संगीता धृतलहरे
बी.ए. भाग-दो

देखो देखो वर्षा ऋतु आयी,
लेकर अमृत जल लायी
प्यास बुझी धरती की सारी
गर्मी की अस्तित्व मिटाई ।
देखो देखो, वर्षा ऋतु आयी।।

काले-काले बादल देख
खुशियाँ आयी किसान की सारी,
बारी आयी किसान की सारी,
नाच रहे, झूम झूम संग प्यारी,
देखो देखो, वर्षा ऋतु आयी।।

खिल उठे पेड़ पौधे,
मिट्टी की सौंधी सुगंध आयी,
अब मिट्टी में सोना उगाएं,
जगती को समृद्ध बनाएं,
देखो देखो, वर्षा ऋतु आयी।

मजदूरों को मिली रोजी-रोटी,
मिटी किसान की उदासी,
धुल गया पूरा घर-आंगन,
धुल गयी पूरी धरती प्यारी,
निखरी प्रकृति की छवि न्यारी,
देखो देखो, वर्षा ऋतु आयी।।

दाई के मया

दीक्षित कुमार वर्मा
एम.ए. हिन्दी, तृतीय सेमेस्टर

दाई के मया अउ दुलार ह

तभे जनाथे जब ओखर ले

दुरिहा हो जाबे

एक नजर देखे बर आँखी हा तरसत रहिथे

जोर से ओखर अंचरा म

रो लेतेंव कहि के ।

दाई के बिना ये शहर के भीड़ ह

अकेला जनाथे

ओखर गोठ के सुरता

घेरी भेरी आथे।

इहां कोनो संगवारी नई हे

सगा पहुना चिन्हारी नई हे।

कभू भूख अउ पियास म

कभू रो के उदास म

दिन अउ रात पहाथे

फेर दाई ददा के

कमई ल देख के

मोर पांव थम जाथे।

दाई के मया म, मैं

फेर लड़े बर भिड़ जाथंव

नई खवावय तभो ले

रो रो के भात ल खाथंव।।

दुख के बादल

प्रीति तुलावी
बी.एस-सी. भाग-एक (बायो)

दुख के बादल काले काले
देख हृदय विकट घबराए
आंधी आएगी या तूफान
सोच मन उदास हो जाए ।
दुख के बादल काले काले।

दुख की बारिश करे घनघोर
तन माटी भीग भीग जाए ।
मानो ऐसा करे तमाशा
धरती में प्रलय मच जाए ।
दुख के बादल काले काले
देख हृदय विकट घबराए।

महान क्रांतिकारी नेताजी सुभाष चंद्र बोस

(जीवन और संघर्ष के कुछ पहलू)

मोहम्मद आदिल, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

नेताजी सुभाष चंद्र बोस देश की आजादी के आंदोलन के महान क्रांतिकारी थे। जिन्होंने देश की जनता को गुलामी की जंजीरो से आजाद कराने के लिए जीवन भर संघर्ष किया। कुछ दिनों पहले ही 23 जनवरी 2023 को उनकी जयंती का 126 वां वर्ष गुजरा जिसे देश के लाखों लोगों ने मनाया । मैं यहाँ महान नेता जी सुभाषचंद्र बोस पर अपनी समझ के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करना चाहूँगा। उन्ही के शब्दों में ''मैं जब भी उसकी और देखता या उस मां के बारे में सोचता तो उसका उदास चेहरा और उसके फटे पुराने कपड़े मुझे विचलित कर देते। उसकी अपेक्षा खुद को इतनी आरामदायक और सुखमय स्थिति में पाकर मैं स्वयं को अपराधी सा महसूस करता था। मैने सोचा कि इस 3 मंजिला इमारत में रहने का मुझे क्या हक है जबकि इस गरीब भिखारिन के सिर पर ना कोई छत है और न भोजन, न कोई वस्त्र। ऐसे विचारों ने मुझे मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करने पर मजबूर कर दिया।'' (दी इंडियन पिलीग्रिम सुभाषचन्द्र बोस) और फिर शुरू हुआ एक गैर समझौता वादी महान संघर्ष। सुभाष आजीवन इस संघर्ष में तनिक भी इधर उधर नही भटके। तमाम परेशानियों यहाँ तक कि आजादी के आंदोलन में समझौता परस्त ताकतों की ओर से कई अड़चने पैदा की गई लेकिन फिर भी सुभाषचंद्र बोस गैर समझौता वादी धारा का नेतृत्व करते रहे और पूरे साहस के साथ लड़ते रहे।

ऐसे महान व्यक्तित्व का जन्म 23 जनवरी 1987 को कटक के एक परिवार में जानकीनाथ बोस व प्रभावती देवी की नौवी संतान के रूप में हुआ। 5 वर्ष की उम्र में बालक सुभाष ने कटक को प्रोटेस्टेंट यूरपियन मिशनरी स्कूल में अपनी प्राथमिक शिक्षा की शुरूआत की। उस वक्त सुभाष इस बात से पूर्णता अनभिज्ञ थे कि स्कूलों में दी जा दी जा रही शिक्षा दरअसल शासकों के हित साधन के लिए ही है। उनके अपने शब्दों में - ''इसमें संदेह नहीं कि पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया था ताकि हमारे मानसिक ढांचे को हर संभव तरीके से अंग्रेजी बनाया जा सके। शिक्षा का उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा -''अब हम शिक्षित हो रहे हैं। नौकरी करना और पैसा कमाना ही यदि हमारा उद्देश्य रहा तो कैसे हम शिक्षित और सही इंसान कहलाने के काबिल होंगे? (सुभाषचंद्र बोस रचनावली संग्रह खंड1) शिक्षा का उद्देश्य है उन्नत नर-नारी बनाना। अफसोस आज की व्यवस्था ने शिक्षा के उद्देश्य को नष्ट करते हुए पूरी तरह से उसे बदल डाला है। पाठ्यक्रमों एवं शिक्षा पद्धति को इस तरह से ढाला जा रहा है ताकि छात्र तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक गतिविधियों में हिस्सा न ले सके। आज हमारे

जीवन मे चल रही सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों को समझकर उसे प्रभावित करने वाली अपनी भूमिका अदा करना समय की मांग है। सुभाषचंद्र बोस ने कहा था कि 'छात्राणनम अध्ययनम तप' इस बात की दुहाई देकर लोग छात्रों को देश सेवा के काम से अलग रखने का प्रयास करते हैं। क्या मात्र किताबों को पढ़ने या परीक्षा में पास करने को ही साधना कहा जा सकता है? इससे भले ही स्वर्ण पदक की प्राप्ति हो सकती है या अच्छी नौकरी हाथ लग सकती है मगर इंसानियत हासिल नहीं हो सकती। स्टाकिश चर्च कॉलेज की छात्र सभा में बोलते हुए सुभाषचंद्र बोस ने साफ-साफ कहा था कि 'समसामयिक गतिविधियों पर चर्चा करना यदि राजनीति है, तो छात्र और शिक्षकों के लिए राजनीति में शामिल होने के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।'

सुभाष बोस बहुत अध्ययनशील थे। अध्ययन के साथ-साथ ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ चल रही जंग को भी याद करते। क्रांतिकारियों की शहादत उन्हें अपनी तरफ आकर्षित कर रही थी। तभी तो मात्र 19 वर्ष के खुदीराम बोस के साहस बलिदान, उन्नत चरित्र एवं मूल्यबोध से प्रभावित सुभाष चंद्र बोस ने 1911 में जब वे आठवी कक्षा के छात्र थे, खुदीराम बोस की शहादत के मौके पर अपने स्कूल में सामूहिक उपवास रखा। इसी तरह उन्होंने भगत सिंह की शहादत को छात्रों - नौजवानों के समक्ष आदर्श के रूप में पेश किया। जब गांधी जी भगत सिंह के बारे में कह रहे है कि भगत सिंह की पूजा देश को आपार क्षति पहुँचा चुकी है और पहुँचा रही है। जहाँ पर भी यह जुनून सवार है, वही गुंडागर्दी और नैतिक पतन पनप रहे हैं। तो सुभाषचंद्र बोस भगत सिंह के प्रति अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं कि ''भगत सिंह इस देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाग उठे विद्रोह - चेतना क मूल प्रतीक थे। इस चेतना से जो ज्वाला भड़क उठी है। वह शांत नहीं होगी।'' पंजाब के छात्र सम्मेलन में उन्होंने छात्रों के समक्ष भगत सिंह की वह अपील पढ़कर सुनाई जिसे भगत सिंह ने छात्रों और नौजवानों के लिए लिखा था।'

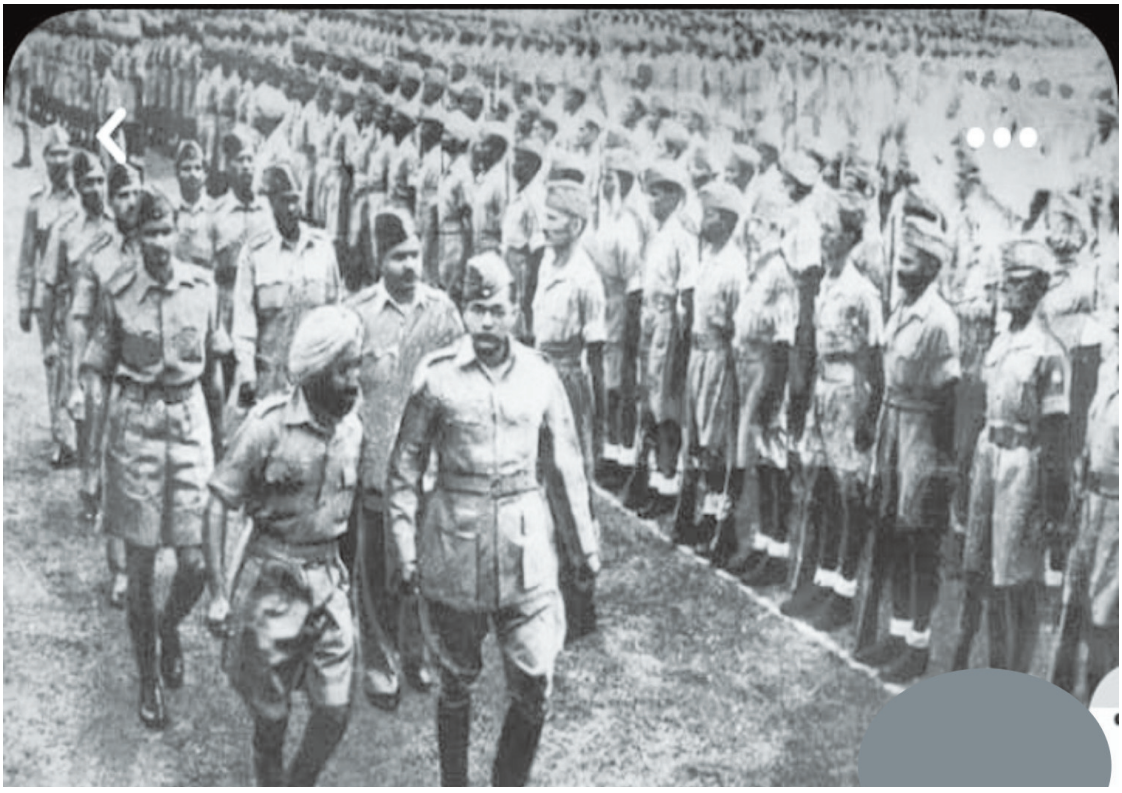

जैसे-जैसे सुभाष बड़े होते गए, उस जमाने के क्रांतिकारियों के विचार तथा जनसाधारण के प्रति उनके दिल में गहरी मोहब्बत और ज़ज़्बात के चलते उनके विचारों में और गहराई आती गई। समाज के प्रति अपने दायित्व की गंभीरता को महसूस करते हुए उन्होंने एक बार अपनी माँ को पत्र लिखते हुए कहा - ''तुम्हारे मुताबिक शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए। क्या तुम हमें महलों में रहने वाले उन रईसों के रूप में देखना पसंद करोगी जिसके पास अनेक नौकर चाकर होते हैं, सैर सपाटे के लिए गाड़िया होती है या कि एक ऐसे आदमी के रूप में जिसे दीन-हीन और गरीब किन्तु सच्चा इंसान कहें''?

दुखद पर सत्य है कि उस जमाने की महान मनीषियों और क्रांतिकारी योद्धाओं की गौरवपूर्ण यादें आज विस्मृति के गर्त में जा चुकी है। आजादी के आंदोलन के बारे में महान क्रांतिकारी शिवदास घोष ने काफी दुख के साथ कहा था, हम अपनी जड़ों से कट गए हैं। संस्कृति का ऊंचा आधार जो आजादी की लड़ाई में निर्मित हुआ था, उस परंपरा को कायम रखने में हम नाकाम रहे। देश की धरती पर उपजी उच्च संस्कृति के सुर के साथ हमने योग सूत्र खो दिया है।'' उसी योगसूत्र की फिर से निर्मित करना होगा। नेताजी की सटीक भूमिका का विश्लेषण कर शिवदास घोष ने कहा था, आंदोलन के दौर में दो परस्पर विरोधी धाराएं - पहला है, एक वह जो साम्राज्यवाद और सामंतावाद के साथ समझौतावादी धारा। दूसरी थी, साम्राज्यवाद व सामंतवाद के खिलाफ गैर समझौतावादी धारा। गांधीजी समझौता, और सुधारवादी राष्ट्रीय प्रवक्ता थे। इसके विपरित सुभाषचन्द्र बोस आम जनता के हिमायती, गैर समझौतावादी क्रांतिकारी धारा के सशक्त प्रतिनिधि थे। नेताजी सुभाष चंद्र बोस (भारत की सांस्कृतिक आंदोलन और हमारा कर्तव्य)। अपनी इस गैर समझौतावादी भूमिका की वजह से ही देश भर की जनता व छात्र और युवा शक्ति के दिल पर उन्होंने जीत हासिल की थी। तरुणों की इस शक्ति के प्रतिनिधि के तौर पर उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में हरीपुरा कांग्रेस अधिवेशन में ऐलान किया।

1. कांग्रेस का पहला लक्ष्य है देश की पूर्ण स्वतंत्रता । अगला लक्ष्य है समाजवाद की स्थापना।

2. मजदूरों और किसानों को आजादी की लड़ाई में शामिल करवाना होगा।

3. जमींदारी प्रथा का खात्मा करना होगा।

उन्होंने मंच से ऐलान किया, जब पूरी दुनिया सामाज्यवादियों की साजिश के शिकंजे में है, तो खड़ा है अकेला समाजवादी सोवियत संघ - इसका अस्तित्व मात्र ही सामाज्यवादियों का दिल दहला देता है। - (क्रॉसरोइस) अब तक कांग्रेस के घोषणा पत्र में ये बातें नहीं थी। सुभाष चंद्र बोस के इस ऐलान से अंग्रेजी सामाज्यवाद भारतीय पूंजीवाद और आतंकित हो उठा। तभी उन्होंने साजिश रचना शुरू किया कि नेताजी अगली बार अध्यक्ष न बन सके। खुद गांधीजी ने नेताजी के खिलाफ पट्टाभि सीतारामय्या को उम्मीदवार बनाया। बावजूद इसके नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जीत हुई।

नेताजी की बढ़ती ताकत को कम करने के मकसद से कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में गांधीवादी गोविंद वल्लभ पंत ने प्रस्ताव लाया। कांग्रेस के संविधान के मुताबिक कार्य समिति के सदस्यों के मनोनयन का अधिकार एकमात्र निर्वाचित अध्यक्ष को ही था। लेकिन पारित पंत प्रस्ताव में कहा गया कि अध्यक्ष के तौर पर नेताजी गांधीजी के बगैर अनुमति के ना कोई फैसला ले पाएंगे और ना ही कार्यकारिणी का गठन कर पाएंगे।

मजबूर होकर 1839 में नेताजी ने कोलकाता में कांग्रेस अधिवेशन बुलाकर अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। यही तो भारतीय पूंजीपति, अंग्रेजी सामाज्यवाद चाहता था। जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस कोलकाता के वेलिंगटन स्क्वायर में अपना इस्तीफा पढ़ रहे थे, तो बाहर जनता एक और सुभाषचंद्र बोस जिंदाबाद तथा दूसरी गांधीवादियों के तीव्र धिक्कार के नारे लगा रही थी। तमाम नेता डरे हुए थे। वह सुभाषचंद्र बोस ही थे जो खड़े रहकर उन सब को सुरक्षित निकलने में मदद करते रहे। उनके विरूद्ध इतना अन्याय अपमान होने के बावजूद सुभाष बाबू ने बड़प्पन, धैर्य, शालीनता और पौरूष का परिचय दिया। उससे रविद्रनाथ टैगोर अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्हें देशनायक की उपाधि से सम्मानित किया। रवींद्रनाथ टैगोर से प्राप्त यह सम्मान दरअसल जनता के सम्मान की ही अभिव्यक्ति थी।

नेता जी ने कहा था, अंग्रेजों को भगा देने से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। एक नई सामाजिक व्यवस्था (वर्ग विहीन समाज) कायम करने के लिए हिन्दुस्तान में एक और क्रांति की जरूरत है। इस देश की जनता को, खासकर छात्रों- युवाओं को नेताजी के संघर्षो से बेशकीमती सीख हासिल करनी होगी। सिद्ध करना होगा उस अमूल्य सीख को, जिसमें वे कहते हैं, ''जुल्म होते देख कर भी जो व्यक्ति उसके खात्मे के लिए कोशिश नहीं करता, वह सिर्फ अपनी इंसानियत का ही नहीं, बल्कि सताए गए आदमी की इंसानियत का भी अपमान करता है। अन्याय अत्याचार को खत्म करने की कोशिश में जो व्यक्ति घायल होता है, जेल जाता है अथवा अपमानित होता है, वह उस त्याग और तिस्कार के जरिए इंसानियत के गौरवशाली आसन को प्राप्त करता है। स्कूल कॉलेजों में, सड़कों पर मैदानों में, घर बाहर जहां भी अन्याय जुल्म अत्याचार होते देखें वही वीरों की भांति आगे बढ़कर उसका विरोध करो। .... यदि मैंने अपनी छोटी सी जिंदगी से कुछ ताकत हांसिल की है, तो वह बस इसी रास्ते।'

लेकिन आज हम हमारे चारो ओर देख रहे हैं कि महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अश्लील साहित्य सिनेमा, लूट, हत्या सामूहिक बलात्कार, मानवता का पतन, शिक्षा का गिरता स्तर जैसी घटनाओं की बाढ़ सी आ गई है और लोगों को इन समस्याओं से राहत मिलने के बजाय संकट और तीव्र होता जा रहा है। वहीं अत्याचार शोषण और जुल्म के खिलाफ कुछ विरोध की आवाजें यहां-वहां उठ तो रही हैं बावजूद इसके समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने नए समाज का जो सपना देखा था कि हर तरह के शोषण, जुल्म से आम आदमी मुक्त हो। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर किसी भी प्रकार का शोषण नहीं करेगा। हर किसी को ऊँची शिक्षा, स्वास्थ सुविधा, रोजगार आदि मूलभूत आवश्यकताएं पूरी हो पाएंगी। उनका यह सपना आज भी अधूरा रह गया है। नेताजी ने एक दिन कहा था, 'करोड़ों भारतवासियों के हक में खड़े होकर उनकी मुक्ति के लिये मैं खुद को कुर्बान कर जाऊँगा। अगर सत्य की कोई कीमत है, तो मेरे देशवासी समझेंगे मेरे दिल की बात।' क्या इस देश के लोग सचमुच उनके दिल की बात समझ पाए हैं, सच्चाई की कीमत जान पाए हैं?

कितने तरूण सुभाषचंद्र बोस बनने का सपना देखते थे और आज आजाद भारत में कितने लोग उन्हें याद करते हैं? देश में ऐसा ही विकास हुआ है। नेताजी के इस अधूरे सपने को आज पूरा कौन करेगा? हम सब ही तो। हम छात्र नौजवान जो आज नेताजी सुभाषचंद्र बोस को अपने दिल में जगह देते हैं और उन्हें अपने जीवन में आदर्श मानकर चलना चाहते हैं।

000

(संकलित)

लघु कथा

चतुर किसान

जयराम
बी.ए. भाग-तीन

एक दिन सज्जनपुर का राजा अपने घोड़े पर सवार होकर अपनी प्रजा का हाल जानने निकला था, रास्ते में एक किसान अपने खेत में काम कर रहा था। किसान कड़ी मेहनत के कारण पसीने से तरबतर हो रहा था। राजा ने पूछा - इतनी मेहनत करके कितना कमा लेते हो? किसान ने कहा -

जितना चाहिए उतना! धरती माता की कृपा है मिल जाता है। जो भी मिलता है उसके चार हिस्से कर देता हूँ। एक हिस्सा अपने खाने के लिए, एक हिस्सा पिछला कर्ज चुकाने के लिए, एक हिस्सा आने वाले कल के लिए और एक हिस्सा पानी में फेंकने के लिए। राजा ने किसान से पूछा-'तुम्हारी बातें बड़ी रहस्य पूर्ण है।'

''जरा खुल कर बताओ!''

किसान ने समझाते हुए कहा - एक हिस्सा मेरे और बीवी बच्चों के खाने का, एक हिस्सा मेरे बूढ़े माँ-बाप का कर्ज, जो मेरा पुराना कर्ज का एक हिस्सा है । एक हिस्सा मेरे पारिवारिक पीढ़ी के लिए, यह हुआ आगे का कर्ज और एक हिस्सा दान में देना, यह हुआ पानी में फेंकना। किसान की बात राजा को जंच गई, उन्होंने कहा यह रहस्य कभी किसी को मत बताना जब तक की तुम मेरा मुँह 1000 बार ना देख लो । किसान ने राजा की बात मान ली।

अगले दिन राजा ने अपने दरबार में विद्वानों को बुलाया और इन बातों का रहस्य समझाने को कहा। सभी विद्वान चकरा गए। लाख कोशिश की पर उन्हें इन बातों का रहस्य समझ में नहीं आया। आखिरकार उन्होंने दरबारियों के माध्यम से पता लगवाया कि राजा कल किस किस के पास गए थे। और वे लोग अंततः उस किसान के पास पहुँच गए। उन सब ने किसान को रहस्य बताने को कहा। किसान पहले तो टालमटोल करता रहा फिर जब वे लोग नहीं माने तो कहा कि वह यह रहस्य तभी बताएंगे जब राजा की चेहरे वाली 1000 मोहरे उन्हें दी जाए। दरबारी विद्वानों ने राजा के कोप से बचने के लिए राजा के चेहरे वाली 1000 मोहरे लाकर दी तो उसने वह रहस्य उन्हें बदला दिया।

अगले दिन जब दरबारी ने राजा को हूबहू किसान की रहस्यमय बातें सुना दिया तो राजा को विश्वास हो गया कि कहीं न कहीं यह बातें किसान ने ही बताई होगी। किसान ने ऐसा करके उनका वचन भंग किया है । राजा ने उस किसान को बंदी बनाकर दरबार में हाजिर करने का हुक्म दिया।

राजा ने कहा - ''तुमने हजार बार हमारा मुंह देखे बिना रहस्य की बातें दूसरों को क्यों बतलाया। अब तुम्हें प्राण दंड दिया जाएगा''। किसान ने कहा - ''महाराज इन्होंने आपके चेहरे वाली 1000 सोने की मोहरे मुझे दी है मैंने एक एक करके आपका चेहरा हजार बार देखा तभी यह रहस्य बतलाया। मैंने वचन भंग कहाँ किया है''। महाराज! यह सुनकर राजा किसान की चतुराई पर प्रसन्न हुआ और उसे ईनाम भी दिया । ०००

(संकलित)

सोशल मीडिया और युवा

लक्ष्मी देवांगन
एम.एस-सी. चतुर्थ सेमेक्टर

सोशल मीडिया एक अपरंपरागत माध्यम है, यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है। सरल शब्दों में कहें तो सोशल मीडिया लोगों द्वारा जानकारी और सूचना को प्रदर्शित करने का मंच है। जैसे -फेसबुक, व्हाटसएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर इत्यादि।

सोशल मीडिया और युवा -

हम सभी इस बात को अनदेखा नहीं कर सकते कि आज सोशल मीडिया हमारे जीवन में मौजूद महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। सोशल मीडिया का प्रभाव युवाओं में सबसे ज्यादा हो रहा है। संपर्क के साधन के साथ-साथ राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में भी सोशल मीडिया का उपयोग तेजी से हो रहा है। आज देश की 58.7% आबादी सोशल मीडिया का उपयोग कर रही है। एक औसत आंकड़े के मुताबिक हर 2 घंटे 37 मिनट प्रतिदिन सोशल मीडिया का उपयोग किया जा रहा है। सोशल मीडिया हमारी अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है ।

सोशल मीडिया के द्वारा युवाओं के नैतिक दृष्टि और जीवन शैली में बदलाव देखने को मिल रहा है। आज कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें समाज में मान्यता नहीं मिली है जैसे लैसबियन, ट्रांसजेंडर, बायसेक्सुअल अभियान, किंतु सोशल मीडिया के द्वारा इन सभी के पक्ष में आवाज उठाया जा सकता है। कुछ धार्मिक अंधविश्वास जैसे कर्नाटक के कलबुर्गी में बच्चों को सूर्य ग्रहण के समय गर्दन तक दफन कर दिया जाता है । उनके माता-पिता का ऐसा मानना है कि ऐसा करने से बच्चों में चर्म रोग, विकलांगता समाप्त हो जाती है कुछ ऐसे अंधविश्वास भरी चीजें सोशल मीडिया के द्वारा सामने आती है। इसके अलावा सोशल मीडिया के द्वारा यौन उत्पीड़न, व बाल शोषण बढ़ रहा है।

युवा वर्ग सबसे ज्यादा सोशल मीडिया के द्वारा प्रभावित हो रहा है। सोशल मीडिया युवाओं के लिए दुधारी तलवार की तरह काम कर रहा है जिसका बुद्धिमान के साथ उपयोग करके ही इसकी अति से बचा जा सकता है।

सोशल मीडिया का युवाओं पर सकारात्मक प्रभाव -

1. कोरोना महामारी के दौरान वरदान -

एक अध्ययन के दौरान यह पाया गया है कि सोशल मीडिया वयस्कों में अकेलेपन को दूर करने में उपयोगी है। कोरोना महामारी के दौरान इसका चौतरफा प्रभाव देखने को मिला। कोरोना महामारी के दौरान आइसोलेशन में रहने वाले लोगों को सोशल मीडिया ने ही उनके प्रिय जनों से जोड़े रखा। इसके साथ-साथ शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखा।

2. शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव -

ऐसे युवा जो दूरदराज के इलाकों में रहते हैं जो शहरी क्षेत्रों में आकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते या ऐसे युवा जो आर्थिक रूप से मजबूत नहीं है लेकिन अपनी जिंदगी में आगे बढ़ना चाहते हैं उनके लिए सोशल मीडिया एक बहुत ही अच्छा माध्यम है।

इसका एक सकारात्मक उदाहरण हम 2018 बैच

की यू.पी.एस.सी. टॉपर 'सृष्टि जयंत' को ले सकते हैं । जिन्होंने ऑनलाइन ही अपनी तैयारी करके पहले प्रयास में ही अपना स्थान बनाया। इसके अलावा ऑनलाइन एजुकेशन फॉर्म जिसे फिजिक्स वाला के नाम से जानते हैं जिसमें अलख पांडे हैं, ऐसे बच्चों को affordableऔर comprehesive शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवा रहे हैं।

3. युवाओं के लिए रोजगार के अवसर –

सोशल मीडिया युवाओं के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध कराती है। युवा यू-यूट्यूब और ब्लागिंग के द्वारा अपना भविष्य बना सकते हैं । भारत के प्रसिद्ध यूट्यूबर अमित बढ़ई जो कि बहुत ही नॉर्मल फैमिली से आते हैं उन्हें लोगों को हंसाने तथा मिमिक्री करने का बहुत शौक था, वह हिंदी भाषा में कॉमेडी करते हैं और आज यूट्यूब के द्वारा लाखों की कमाई करते हैं । इसी तरह युवाओं को भी सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव को समझना चाहिए और अपनी ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग सोशल मीडिया के द्वारा करना चाहिए।

4. समाचार और करंट अफेयर्स

कोई समाचार आज के आधुनिक दौर में कुछ मिनटों में ही सोशल मीडिया के द्वारा लोगों तक पहुँच जाता है। युवा करंट अफेयर्स के द्वारा देश-दुनिया की खबरों से अवगत होता है और इसके द्वारा वे सभी क्षेत्रों में अपना विचार व्यक्त कर सकते हैं, देश का भविष्य बना सकते हैं। गूगल पर आज सारी सूचनाएं उपलब्ध है जिसका उपयोग कर वह अपनी जिज्ञासा समाधान कर सकते हैं।

सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया का कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है। आज युवा अपना ज्यादा से ज्यादा समय मित्रों से चैटिंग करने में और इंस्टाग्राम, ट्विटर पर व्यतीत करते हैं जिससे उनमें मानसिक व स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। इससे उनकी पढ़ाई तो प्रभावित हो ही रही है साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ रही है व इसके चलते उनकी रचनात्मकता में भी कमी आ रही है। सोशल मीडिया का सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों तरह युवाओं को प्रभावित कर रहा है। युवा हमारे देश के भविष्य हैं, उन्हें सोशल मीडिया की नकारात्मकता से दूर रखने का उपाय सोशल मीडिया में ही छुपा हुआ है। वह सोशल मीडिया को अपने विकास के लिए आवश्यकता के अनुरूप उपयोग करें यही उनके लिए एक अच्छा विकल्प है।

000

A Journey to AITSC - 2022

Sergeant - Abhishek Nema

NCC Aims at Unity and Discipline of a Cadet, and proves to be hundred percent in every aspect of life, whether it will be of time management or work with perfection.

Here, I, Sergeant Abhishek Nema, want to share my experience of NCC in our Govt. VYT. PG Autonomous College Durg and further for a life time experience of India Thal Sanik Camp 2022.

Firstly I would like to tell you about NCC (National Cadet Corps) it is the youth wing of the Indian Armed Forces with its Headquarters in New Delhi. It comprises Army, Air force and Navy wing. NCC develops discipline and patriotism in youths. It has 17 Directorate among them one is in MP& CG.

My Journey begins with shooting competition between 7 colleges. Among them one is our college in which 4 (SW) and 3 (SP) went for selection 2(SD) & (SW) got selected. We four went to attend our First camp in Bilaspur.

This Camp started from 01 Aug 2022 to 08 Aug 2022 at C.V. Raman University. This Thal Sanik Camp had various events 40 participate and compete with other cadets. It has obstacle Training, shooting Map Reading, Judging Distance and field signal, Hearth and Hygiene, Tent pitching (group event). On the first day we were addressed by our Camp commander sir, from next day selection started. There we had to participate in the event in which we can give our best. I had chosen map reading, Judging Distance and Health and Hygiene. In the starting Days we can with between our events so

by aiming to get selected any how for next level. I began with 3 events. Two PI Staff Bhupendra sirs and Vivekanand sir form TCG Battalion taught us and conducted tests and there continuous guidance helped me a lot. I got selected for next camp.

So in the next camp which was TSC-II started from 18 Aug to 26 Aug 2022.This was other level of selection for Inter group competition of TSC. All Cadets gained a lot of knowledge and various incorrigible experiences about Army life. For learning MR they took us to High areas. It was such a nice and unforgettable experience for us. Finding own position and judging various Distances Make us feel like we are a part of Arm. Our Instructor guided us from very beginning, helped us at every step. We learned how to find placed or thing on Map and from map to ground.

Also I learned about Health and Hygiene in this we were taught about physical and Mental Health, Personal Health, personal hygiene and also about sanitation. How to prevent from diseases issuers and many health related issues. Very soon result was declared I was In for Health and Hygiene and JDIFS.

Our Next Level of Thal Sainik camp was Inter group competitions at sagar, Madhya Pradesh. Out was Raipur group and we had to compete with other five groups of MP in order to get selected for next level. In the competition we all did our Best in our relative events and also in the line area competition in this competition we have to clean and make a

hygienic environment for our living area. Our Raipur group best in every single event. I stood first in Health and Hygiene. Raipur group stood second overall and Gwaliour group second It was such and amazing experience of interaction with cadets from all groups we taught group Management situation Handling and also how to come back with bad performances.

After this the next camp was a training camp, we all were becoming sharper and best in our respective field. My performance was up to the mark. Very soon comes pre-TSC. Totally based on high level of performance, tough competition between best of best. The last selection process to make team of MP/CG Dte after coming of results we all were happy it was like a dream come true of going Delhi for AITSC.

Every NCC Cadet Having a Dream of going Delhi to DG NCC Camp is and now I had achieved that. So from next day our friends who ware not selected left the Maharaja Regiment training centre. The next day we had ADG sir Visit, the Commander of Our MP & CG Directorate major general Ajay Kumar Mahayana sir came to visit to see our preparation for Inter Directorate competition which is going to be Held in Delhi. We got our Kit of TSC such an amazing experience. And on 12th September our who Directorate term with ANO and two PI Staff sir took train to Delhi and reached their next day early morning. During entry of DG NCC camp Area of Delhi, we all were excited to visit the place for the first time ever. The camp area was very beautiful and such and extra ordinary. I was very thankful to god to make me visit /camp t DG NCC camp area. We all reported their and then entered to living area, their we swami building with Different Directorate cadets.

We got Beds and Wardrobes. From next Day line area preparation started, cleaning of walls, equipment and many more. And on 16th Sep JD/FS competition was there in which I had to compete. Our team of JD/FS Having 8Boys - 4 for JD & 4 for FS, I Had chosen JD. We did our best. me by one events were held in which every one perform their best. We were also addressed by Director General of NCC Lt. General Gerberas see at Auditorium he gave us wished and congratulations fro result and gave many

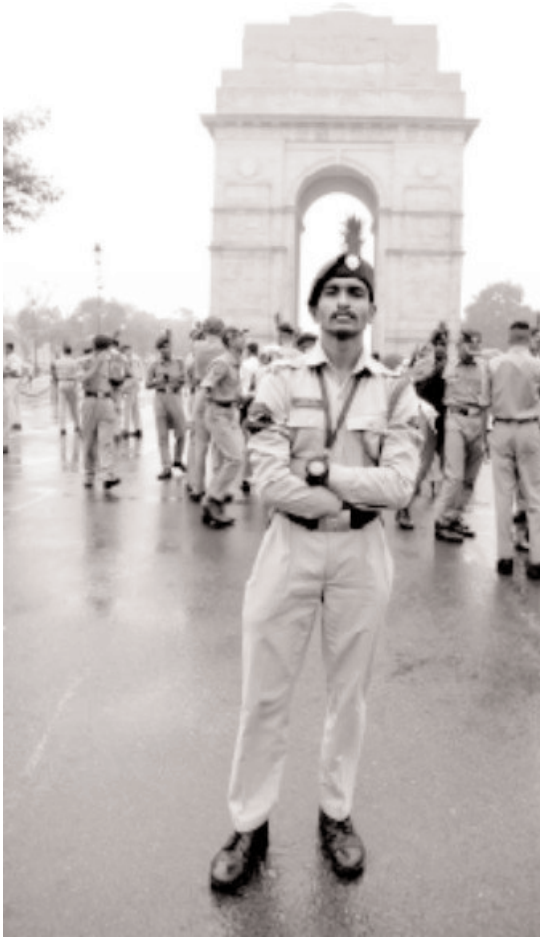

good teachings.

We all enjoyed the whole Camp Duration the food we eat the work we got and at evening we did spiritual music and dance. We had Delhi Darshan on 25 September we visited Air force museum. India gate, National war memorial, Rajghat and lotus temple. All the places were very amazing and then next day we had cultural program at auditorium. I had also participated in singing. And there next day which was our last day at DGNCC Camp dream be visited other Directorates and met all of them. And captured some pictures for memories. We all were happy as pre were going to our home now so finally we left Delhi on evening and reached sergeants for address of commander sir of sergeant group. Head mired us and … a joyful goodbye to us. And them we all restarted and gone to cell homes.

This Thal Sainik Camp was unforgettable and created a great Memoirs.

000

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

संगीता धृतलहरे
बी.एस-सी. भाग-दो

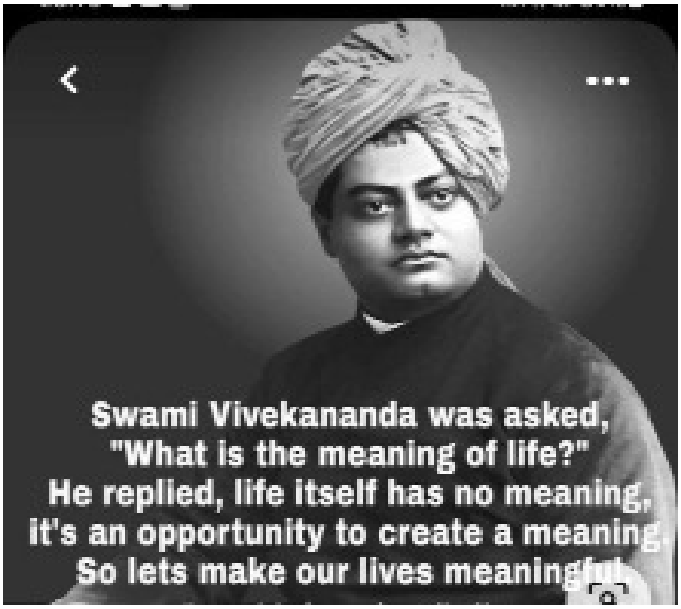

युवा राष्ट्र का संरचनात्मक और कार्यात्मक ढांचा है। हर राष्ट्र की सफलता का आधार उसकी युवा पीढ़ी और उनकी उपलब्धियां होती है। राष्ट्र का भविष्य इन युवाओं के सर्वांगीण विकास में निहित है। इसलिए राष्ट्र निर्माण में उनकी महती भूमिका को स्वीकार करते हुए उनके अधिकार को स्वीकार करना चाहिए। नरेन्द्र देव ने ठीक ही कहा है कि ''जो आज अधिकार रुढ़ हैं उनका कर्तव्य है कि वे अपने उत्तराधिकारियों को आज से तैयार करें।'' इसलिए राज्य की शक्ति का उपयोग करते हुए युवाओं के भविष्य निर्माण का कार्य किया जाना चाहिए। एक देश के निवासी विभिन्न जाति, धर्म और भाषा के बोलने वाले हो सकते हैं, देश के निवासियों को एकता के सूत्र में बांधने वाला सूत्र राष्ट्र है। देश के निवासियों की आपसी भाईचारा और एकता ही उसकी ताकत है। राष्ट्र का निर्माण विभिन्न जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर ही संभव है क्योंकि राष्ट्र किसी जाति धर्म और भाषा से ऊपर होता है।इसलिए युवाओं के बीच भी इस भावना का विकास आवश्यक है। वे अपने राष्ट्र के निवासियों, लोकजीवन एवं संस्कृति को पहचानें, यह दायित्व भी समाज के निर्माताओं का है ।

विवेकानंद ने एक बार कहा था - ''मेरा विश्वास युवा पीढ़ी, आधुनिक पीढ़ी में है और उनमें से ही मेरे कार्यकर्ता आएंगे।'' यह उद्धरण युवाओं की शक्ति और सामर्थ्य पर उनके अटूट विश्वास को स्पष्ट करता है। इतिहास बताता है कि दुनिया में जहां भी परिवर्तन हुए हैं, वहां उस देश के युवाओं ने की उस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस परिवर्तन के लिए युवाओं ने अपने साहस और शौर्य का परिचय दिया है। प्रथम विश्व युद्ध से टूट चुके जर्मनी को सबसे खराब परिस्थितियों से उबारने तथा उसके पुनर्निर्माण में वहाँ के 60% से अधिक युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसी तरह हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु विस्फोट से बर्बाद हुए जापान को फिर से खड़ा करने में उस देश के युवाओं की ही भूमिका रही है। आज विज्ञान और तकनीक की दृष्टि से ये देश दुनिया को अपना लोहा अपने युवाओं के दम पर मनवा रहे हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि आज दुनिया में लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और चिकित्सा के क्षेत्र में सुधार युवाओं के हाथों में है। गरीबी, असमानता, बेरोजगारी, ग्लोबल वार्मिंग, व अन्य कई प्रकार की समस्याएं हैं जिनका सामना आज दुनिया कर रही है इन समस्याओं का हल कोई कर सकता है तो वह युवा ही हैं।

विकासशील देशों में युवा आबादी बहुत अधिक है।

आंकड़े बताते हैं, कि उन देशों में जो आज सभी क्षेत्रों में तरक्की हुई है उन सब के पीछे उन देशों की युवा शक्ति ही हैं। आवश्यकता इसी बात की है की युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके अधिकारों की रक्षा की गारंटी दी जाए। क्योंकि आज के यही युवा कल के निर्माता और नवप्रवर्तक होंगे।

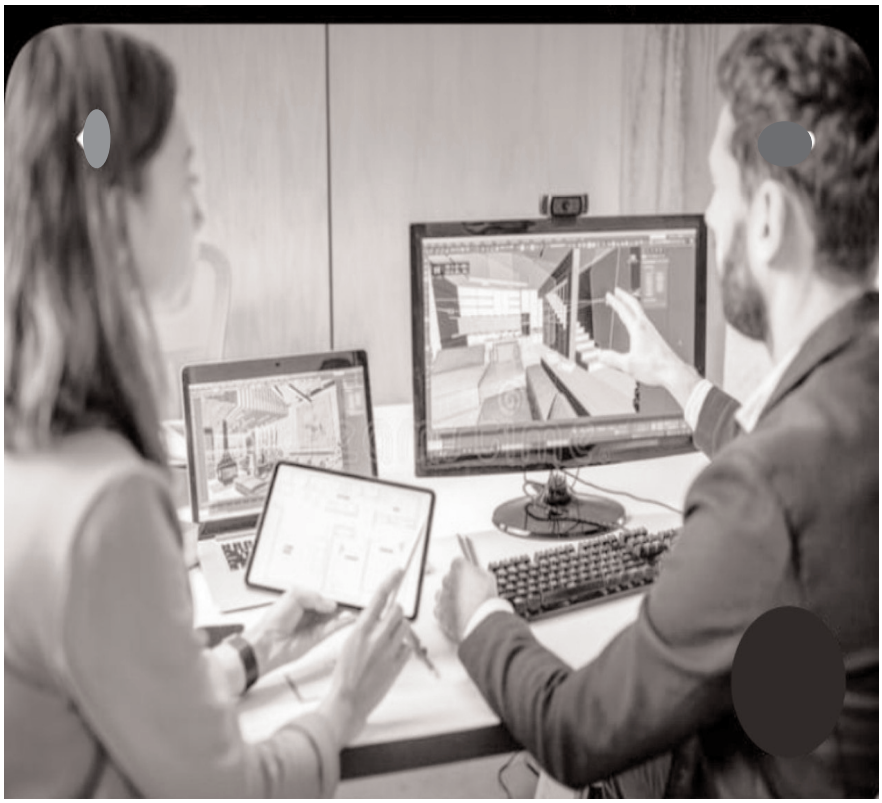

हम सभी जानते हैं कि दुनिया की आधी आबादी अब 25 वर्ष से कम आयु की और 1.8 विलियन लोग 11 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के बीच के हैं। इसे अब तक की सबसे युवा पीढ़ी माना जाता है। स्वीडन, जापान जैसे कई देशों ने पहले ही अपने युवाओं की शक्ति को पहचान कर विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें अवसर प्रदान करके उनसे लाभ लेना शुरू किया है । भारत जैसे विकासशील देश को उनसे सीख ले कर अपने देश के युवाओं को भी नियोजित करना चाहिए। हमारा देश बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहा है उनमें से अधिकांश समस्याओं को हल करने की शक्ति हमारे युवाओं के पास है ।आज युवाओं को खुद को साबित करने का मौका चाहिए, राष्ट्र का दायित्व है उन्हें यह मौका प्रदान करे। इसके लिए उनमें निरंतर राष्ट्रीयता की चेतना, देशभक्ति की भावना के साथ सामूहिकता, सामाजिक संवेदनशीलता एवं एकता की भावना का संचार करे। व्यक्ति राष्ट्र का पहला घटक होता है। जब तक उसके हृदय में राष्ट्र प्रेम की पवित्र भावना नहीं पनपेगी तब तक वह स्वहित तथा निहित स्वार्थ में लिपटा रहेगा। इसलिए युवाओं को इससे मुक्त कराने के लिए उचित शिक्षा तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता है। उनमें बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ विवेक जागृत होगा, तभी वे सही और गलत की पहचान कर सकेंगे। समाज और देश के हित में अपनी शक्ति का विनियोग कर सकेंगे।

युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र का प्राणतत्व है । वही उसकी गति, स्फूर्ति, चेतना और आज है। युवाओं की प्रतिभा, पौरुष और त्याग किसी भी राष्ट्र के लिए गर्व का विषय है। उन्हें संभालना, संवारना, उचित दिशा प्रदान करना राष्ट्र के नियामकों का काम है।

युवा शक्ति ही समाज और देश को नई दिशा देने का सबसे बड़ा औजार है, वह अगर चाहे तो किसी देश के स्वरूप को बदल सकता है ।अपने हौसले और जज्बे से समाज में फैली बुराइयों विसंगतियों को जड़ से उखाड़ फेंक सकता है। युवा शक्ति से संपत्ति और सहायक संसाधनों को अवसरों के साथ जोड़ते हैं तो वह अपने समुदाय के लिए सकारात्मक योगदान कर सकते हैं। इसलिए यह राष्ट्र का

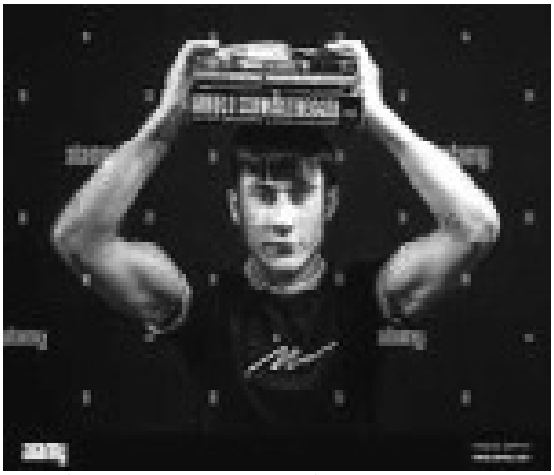

दायित्व है कि वह उसकी शक्ति और सामर्थ्य की पहचान कर देश व समाज के हित में उसका उपयोग करे।

युवा किसी भी राष्ट्र का नीव का पहला पत्थर होता है। जिसके कन्धों पर ही राष्ट्र की आधारशिला रखी जाती है।वह सीखने की क्षमता और प्रतिभा तथा रचनात्मकता से भरपूर होता है यदि वे किसी मुद्दे पर अपनी आवाज उठाते हैं तो समाज में व्यापक परिवर्तन लाने में सफल होते हैं।

युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक होते हैं, ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आँखों में भविष्य के इंद्रधनुषी स्वप्न होते हैं। वह समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान कर सकते हैं। इसीलिए युवाओं से वर्तमान तकनीक, शिक्षा राजनीति, देश की शांति व्यवस्था को आगे बढ़ाने की अपेक्षा की जाती है। दूसरी ओर युवाओं को सामाजिक मूल्यों, परंपराओं तथा विकास परियोजनाओं आदि को भी आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा जाता है।

युवा राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। जिस तरह से इंजन को चालू रखने के लिए ईंधन आवश्यक होता है, ठीक उसी तरह युवा राष्ट्र के ईंधन हैं। यह राष्ट्र की प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। राष्ट्र का सर्वांगीण विकास वहाँ रहने वाले लोगों की शक्ति और क्षमता पर निर्भर करता है कि वह अपने युवाओं की क्षमता का कितना किस तरह उपयोग करता है। हमारे ऐतिहासिक स्वतंत्रता समर से यह देखा जा सकता है। हमारे राष्ट्र के कई परिवर्तन, विकास, समृद्धि और समानता लाने में युवाओं की भूमिका रही है।

युवाओं को राष्ट्र की आवाज माना जाता है। युवा राष्ट्र के लिए कच्चे माल, संसाधन की तरह होते हैं। चाहे तरह जिस रूप में उन्हें ढालकर साकार रूप दिया जा सकता है । उनमें उसी तरीके से उभरने की संभावना होती है । राष्ट्र द्वारा विभिन्न अवसरों और सशक्त युवा प्रक्रियाओं को अपनाया जाना चाहिए जो युवाओं को विभिन्न धाराओं, क्षेत्रों में, करियर बनाने में सक्षम बनाए।

नेल्सन मंडेला का खूबसूरत कथन है कि - ''आज के युवा कल के नेता हैं।'' जो हरे क्षेत्र में लागू होता है। युवा ही राष्ट्र के विकास की नींव रखता है। आज युवाओं को लक्ष्यहीन, भ्रमित और दिशाहीन होने से बचाने की आवश्यकता है, उन्हें सही दिशा प्रदान करने की आवश्यकता है। उनके पास सीखने और पर्यावरण के अनुकूल होने की क्षमता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की ललक है, इसलिए उनके विचारों, अधिकारों को सुनने-समझने और समर्थन की आवश्यकता है। कोई भी राष्ट्र युवाओं के बिना चल नहीं सकता। राष्ट्र निर्माण का अर्थ यही है, कि राष्ट्र अपने इतिहास एवं संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए ऐसे युवाओं को सक्षम बनाये, समुदाय के प्रति आदर और सम्मान का भाव पैदा करे। तभी वह अपने मजबूत कंधों पर राष्ट्र का भार उठा सकता है। ०००

प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन

लक्ष्मी देवांगन
एम.एस.-सी III सेमेस्टर

दुनिया के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का जन्म 14 मार्च 1879 में जर्मनी में हुआ था। अल्वर्ट आइंस्टीन एक सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी थे। जो सापेक्षता के सिद्धांत और द्रव्यमान उर्जा समीकरण $E=me^2$ के लिए जाने जाते है उन्हें सैद्धांतिकी भौतिकी, खासकर प्रकाश विद्युत उत्सर्जन की खोज के लिए 1921 में नोबेल पुरस्कार उनका जन्म दिवस 'जीनियम डे' के नाम से विजेता के रूप में जाना जाता है ।

अल्बर्ट आइंस्टीन का जन्म जर्मनी के उल्म शहर में यहुदी परिवार में हुआ था। बचपन में उनका दिमाग सामान्य बच्चे के दिमाग से काफी बड़ा था हालांकि बढ़ती उम्र के साथ ही अल्बर्ट का दिमाग भी सही शेप में ढलने लगा। आइंस्टीन के दिमाग में एक औसत इंसान के दिमाग में मौजूद सेल से कई ज्यादा सेल थे इसी वजह से वो इतने बुद्धिमान थे।

एक बार अल्बर्ट आइंस्टीन को उनके गणित के प्रोफेसर ने 'लेजी डॉग' तक कह दिया था। क्योंकि वह पढ़ाई में बहुत ही ज्यादा कमजोर थे। अल्बर्ट आइंस्टीन की शिक्षा से सम्बधित एक रोचक कहानी है। एक बार उन्होंने अपनी माँ को एक पत्र देते हुए कहा - ''माँ अध्यापक ने यह पत्र आपको देने के लिए कहा है''। उसकी माँ ने जैसे ही वह पत्र पढ़ा वह मन ही मन मुस्कुराने लगी। माँ को मुस्कुराते हुआ देख आइंस्टीन ने कारण पूछा। जिस पर माँ ने बड़े प्यार से कहा, ''बेटा इसमें लिखा है आपका बेटा कक्षा में सबसे होशियार है हमारे पास ऐसे अध्यापक नहीं है जो आपके बच्चे को पढ़ा सके। इसलिए आप इसका एडमिशन किसी और स्कूल में करा दो।'' यह सुन

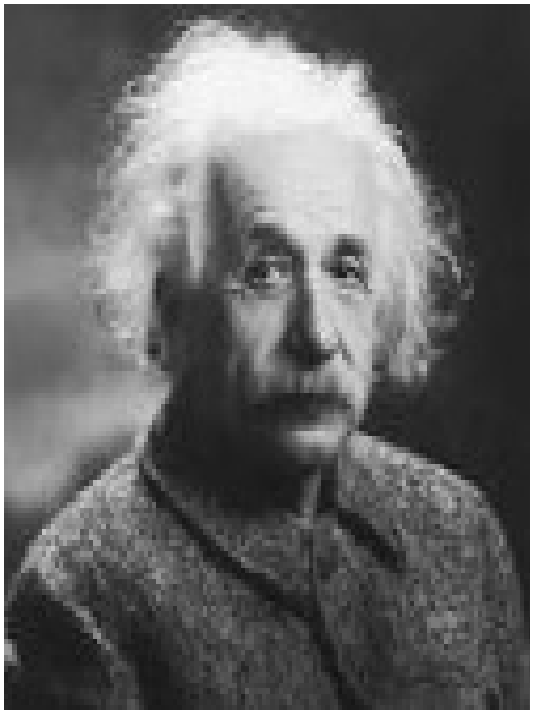

आइंस्टीन बहुत खुश हो गये। और पूरी लगन के साथ पढ़ाई में जुट गये, और बड़े होकर एक महान वैज्ञानिक बने। जब उनकी माँ का निधन हो गया तो एक दिन आइंस्टीन ने माँ की आलमारी खोली, तो पाया की उसमें उनके टीचर का लिखा हुआ वही पत्र था जो उन्होंने उस छोटे बच्चे को उसकी माँ देने के लिए कहा था। आइंस्टीन ने वह पत्र खोला और पढ़ने लगे। पत्र में लिखा था -

''आपको यह बताते हुए हमें बहुत दुख है कि आपका बेटा पढ़ाई लिखाई में बहुत कमजोर है, जिस तरह से उसकी उम्र बढ़ रही है, उस तरह से उसकी बुद्धि का विकास नही हो रहा है इसलिए हम इसे स्कूल से निकाल रहे हैं। आप इसका एडमिशन किसी दूसरे स्कूल में करवा

दीजिए, नहीं तो घर में इसे पढ़ाइए''। पत्र पढ़ते ही, आइंस्टीन ने अपनी माँ को हृदय से धन्यवाद दिया कि उनकी माँ ने अपनी आशावादी बातो से आइंस्टीन को सफलता की ओर अग्रसर किया।

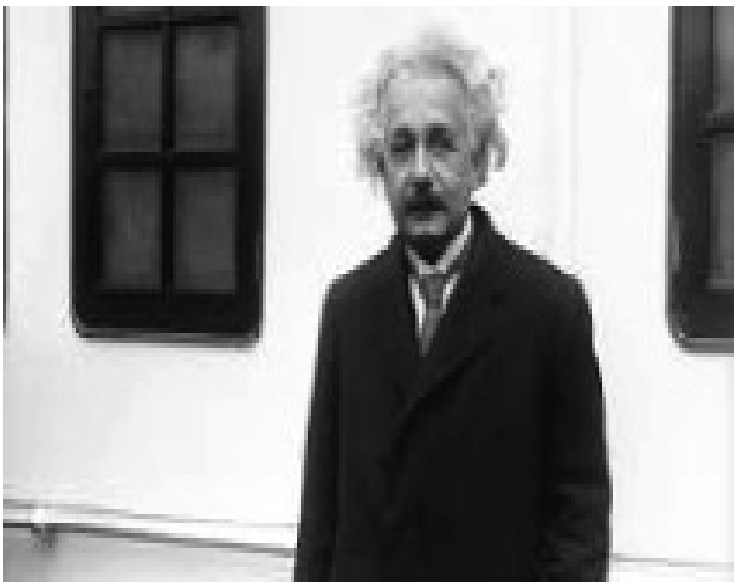

यह कहानी आइंस्टीन के जीवन की एक छोटी-सी प्ररेणादायक कहानी है जो हमें शिक्षा देती है कि सकारात्मक सोच, सच्ची लगन और निष्ठा के साथ दिया गया कार्य हमेशा सफल होता है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने 16 वर्ष की उम्र में ही सन् 1895 में अपना पहला वैज्ञानिक शोध पत्र निकाला था जिसका नाम उन्होंने रखा 'चुम्बकीय क्षेत्र में रखे ईयर की अवस्था की जांच। उन्हें गणित से अधिक रूचि भौतिक विज्ञान में थी उनकी विज्ञान के प्रति रूचि का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है। उन्होंने 15 साल की उम्र का होने से पहले ही अवकलन व समाकलन जैसी कठिन चीजो में महारत हासिल कर ली थी। जब वह 17 साल के थे तो कॉलेज एंट्रेस के सारे एग्जाम में गणित और विज्ञान को छोड़कर सभी विषयों में फेल हो गये थे। अल्बर्ट आइंस्टीन अपने पूरे जीवन एक मानसिक रोग Psychiatric Disorder से पीड़ित रहे, जिसके कारण वे हर चीजों को दो से तीन बार दोहराया करते थे। उन्हें चीजों को टेक्सर के बजाय पिक्चर्स के रूप में याद रखना ज्यादा पसंद था। अलबर्ट आईस्टीन दोनों हाथों से लिख सकते थे हॉलाकि ज्यादातर दाँए हाथ से लिखा करते थे।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में अल्वर्ट पूरे ब्रम्हाण्ड को एक साथ व्यक्त करने वाले सिद्धांत (UNIFIED THEORY) पर काम कर रहे थे, किन्तु उनके निधन के कारण इस थ्योरी पर काम नहीं हो पाया। आइंस्टीन ने मरने से पहले अपने अंतिम क्षणों में उनके कमरे में मौजूद नर्स को जर्मन भाषा में कुछ कहा, लेकिन उस नर्स को जर्मन भाषा नही आती थी, तो इसी के साथ आइंस्टीन के कहे अंतिम शब्द एक राज की तरह दफन हो गया। इस प्रकार आइंस्टीन एक प्रेरणादायी प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक रहे, जिन्होने अपनी खोज के द्वारा विज्ञान जगत को पलट कर रख दिया।

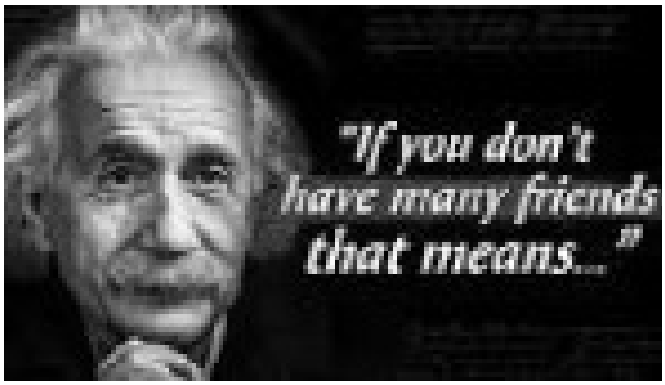

वर्षा ऋतु

नम्रता
बी.एस-सी., भाग-दो

गर्मी के बाद लोगों को दूँ सुकून
वर्षा की पहली बूँद से मिट्टी सौंधी कर दूँ
मिट्टी के सूखेपन को दूर कर दूँ ..
प्रकृति को हरियाली से भर दूँ
मैं हूँ वर्षा ऋतु !

चिड़ियों की चहचहाहट लौटा दूँ
किसानों की मुस्कान का कारण बन जाऊँ
खेत को सिचाई के लिए तैयार कर दूँ
फिर हरी चादर फसल की लहराऊँ
मैं हूँ वर्षा ऋतु !

नदी-नहर-ताल की प्यास बुझा दूँ
कहीं ज्यादा होने पर बाढ़ का कारण बन जाऊँ
किसी की पक्की छत की सफाई कर दूँ
तो किसी टपकटते छत के दुख का कारण बन जाऊँ
मैं हूँ वर्षा ऋतु !

असमान को काले बादल से ढक लूँ
कई दिनों तक सूरज की रोशनी छिपा लूँ
कपड़ों के न सूखने का कारण बन जाऊँ
लोगों की परेशानी का सबब बन जाऊँ
मैं हूँ वर्षा ऋतु !

हर प्राणी का मन मोहित कर दूँ
जब नभ पर इन्द्रधनुष दिखाँऊ
वातावरण को खुशमय कर दूँ
इसीलिए तो ऋतु की रानी कहलाऊँ
मैं हूँ वर्षा ऋतु !

हौसले

युगांश सांवरिया
बी.लिब. आई एम-सी.

तू कर वही, जो कल बनाए
हौसलों से यूँ बताएँ ।

उठ खड़ा हो चल चलें,
यह मंजिल हमसे दूर नहीं ।

सपनों को सपना नहीं,
अब तो हकीकत बनाएँ ।

हम बोल कर ही नहीं,
अब उसे करके दिखाएँ ।

ये हौसलों की उड़ान है,
कुछ कर गुजरने कुर्बान है।

तू कर वही जो कल बनाए
हौसलों से यूँ बताएँ ।।

आ गया सावन

शिल्पा निषाद
बी.एस-सी., भाग-दो

आज है बरसा नीर पावन
देख सखी आ गया सावन ।

घनघोर बरसती वर्षा की बूँदे
गिरते पर्वतो से झरने सुहावन ।

उमड़-उमड़ काले-काले आए बादल
कुहु-कुहु कर कोयल संग जन का गायन।

मेघ-सौदामिनी आई वर्षा ऋतु के साथ
छम-छम मोरों का नृत्य मन भावन।

सौंधी-सौंधी महक माटी की पा वर्षा की बौछारें
खिले नव पुष्प, हो रहे रंग-बिरंगे धरा पर पावन ।

बचपन की यादों में तैरती कागज की वो नाव
सावन की झड़ी में चाय, पकौड़े मन लुभावन ।

बारिश आयी खेती हो पाई
सूखे खेतों में फसल लहराई

देख हरियाली चहुँ ओर,
किसानो का मन हर्षित ।

देख सखी आ गया सावन
आज है बरसा नीर पावन ।।

Exams are like criket match

Prishita Tamrakar
B.A. Final

Exam are like cricket Match

Examination hall is the field.

Professor is the umpire

Question paper is the opposite

team.

Answer sheet is the pitch

Correct answers are the runs

Number of questions is the target

Pen is the bat

Wrong answer is out

Time out is no ball.

Submitting answer sheet is the

result of Match

कहानी

सिर्फ एक कोशिश और

डेनिस कुमार
बी.ए. भाग दो

मेरा ध्यान नहीं था, सुबह के 7:00 बज रहे थे। मैं अपने बड़े भाई को लेने उनके मित्र के गाँव गया था जो अपने महाविद्यालय से स्थानांतरण प्रमाण-पत्र लेने गया था। रात्रि अपने मित्र के निवास में बिताया। मैं उन्हें लेने मोटर साइकिल से धीमी गति से प्रातः काल का आनंद लेते हुए गया और उसी तरह आनंद लेते हुए 30 किलोमीटर वापस घर पहुँचा। घर में कोई नहीं था, पता करने पर पता चला मम्मी पापा छत में थे। भाई ने मुझसे पूछा-'आज कौन सा दिन है।' मैंने कहा- 26 सितंबर।

भाई ने .....''आज तो तुम्हारी परीक्षा है ना। तब मुझे याद आया कि मेरा पीएटी का एग्जाम है।

मैंने कहा - ''परीक्षा का समय प्रातः 9:00 से 12:00 बजे तक है । मैंने घड़ी देखी 8:20 हो रहे थे। झट से मामा के बेटे के पास फोन लगाया। क्योंकि हम दोनों परीक्षा दिलाने एकही स्थान पर जाने वाले थे।''

मैं.....''कहाँ हो जी'' उसने कहा - 'बस धमतरी पहुँच गया' और तू - ''अभी निकल रहा हूं'' तू अभी तक नहीं निकला! ''मैं तो तैयार भी नहीं हुआ हूं'' भाई अभी पता चला मुझे । चल तुरंत निकल, बाद में नहा लेना। मैंने कपड़ा बदला, मोबाइल पकड़ा, हेलमेट लगाया और स्कूटी लेकर निकल गया। अब तो लग रहा था, मैं परीक्षा में नहीं बैठ पाऊँगा। परीक्षा हाल में प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र नहीं था। प्रवेश पत्र मोबाइल में था । अपने गांव के कंम्प्यूटर दुकान में गया तो दुकान वाला भी नहीं था। फिर मैं अपने दोस्त के किराना दुकान में गया। उनके पिता जी से पूछा - 'आपका बेटा कहाँ है? उन्होंने मुझसे पूछा- परीक्षा कितने बजे से है? मुझे लगा वे मुझे चिढ़ा रहे हैं। और मैं तेज गति से 25 किलोमीटर धमतरी के लिए रवाना हो गया। पूरे रास्ते तक कंप्यूटर दुकान की ओर नजर गड़ाए हुए था। रास्ते में दो छोटे- छोटे शहर पूर्व में पड़ते हैं । मुख्य मार्ग होने के कारण बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ तेजी से आ जा रही थीं। मैं भी वहां कोई तूफान से कम ना था। साथ में 'दुर्घटना से देर भली' यह बात ध्यान में रखते हुए बहुत सावधानी व सुरक्षा के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा था। समय देखते-देखते गति का निर्धारण करता रहा जैसे तैसे 8:50 तक धमतरी पहुँच गया। घड़ी देखने के बाद अंदर से आवाज आई यह परीक्षा तो हाथ से निकल गयी। बेवजह जान जोखिम में डालकर इतनी दूर

आ गया । साथ में एक और धीमी सी आवाज आई कि 'जितना हो सके प्रयास करके देख ले।' मैंने इसी आवाज पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

परीक्षा केंद्र विद्यालय के नाम के अलावा उसका पता ही नहीं था। तब मैंने एक साइकिल सवार से पूछा- उन्होंने अपनी साइकिल रोक करके मुझे पता बताया। तभी दो लड़के उनसे पूछे। भैय्या - ''कंप्यूटर दूकान कहाँ पर है।'' मैंने भी उनसे बात की।

उन लोगों ने बताया - ''पूरा धमतरी छान मारे। अभी तक एक भी दुकान नहीं खुली है।''

मैं बहुत घबरा गया कि मेरा यहाँ तक आना, इतना रिस्क लेना व्यर्थ हो गया। रास्ते के दूकान वालों से पूछते पूछते परीक्षा केन्द्र पहुँचा तो 8.57 हो गया था। अंदर प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र नहीं था। आसपास दूकान पता किया लेकिन वह तो अभी तक खुले नहीं थे। अब तो मैं मन से पूरी तरह से हार मान चुका था कि अब मैं परीक्षा नहीं दिला सकूंगा। अब सिर्फ एक ही विकल्प बचा था की घर लौट जाऊँ।

परीक्षा केंद्र के सम्मुख पुलिस थाना था । उसे देखा और वहीं चला गया । वहाँ प्रांगण में एक पुलिस अफसर अपने कमरे से तैयार होकर पैदल कार्यालय चले आ रहे थे। मैं उनके पास गया और निवेदन किया।

सर! 'मैं परीक्षा दिलाने आया हूँ और मेरा प्रवेश पत्र मोबाइल में है। मैं उसकी हार्ड कापी नहीं निकाल पाया हूं।'

परीक्षा केन्द्र में प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र नहीं है तो ना तो मैं परीक्षा हाल में प्रवेश कर सकता हूं और ना ही परीक्षा दिला पाऊंगा। महोदय जी ने कह -'बाहर कंम्पयूटर दूकान मिल जाएगा' लेकिन सर वह तो अभी तक खुली नहीं है।' हाँ थोड़ी देर बाद दुकान खुलेगी।'तो सर, आपके थाने के निजी कंप्यूटर से निकाल लेते तो.... ....। सर..... 'कम्यूटर चलाने वाले तो थोड़ी देर बाद आएंगे।' (निराशा से) 'लेकिन मेरे पास तो समय नहीं है'

'तुम्हें चलाना आता है तो चलो तुम ही निकाल लेना।' (निराशा से) नहीं सर - 'मुझे तो नहीं आता' ठीक है - ''आओ मेरे साथ, देखते हैं'' ! जी .. सर! महोदय जी के साथ उनके कार्यालय में प्रवेश किया। महोदयजी ने भारत माता, अपनी कुर्सी, व टोपी को प्रणाम किया। वहाँ कंप्ययूटर, लैपटाप तथा प्रिंटर सभी रखे हुए थे जिसे वे बहुत दिनों बाद स्पर्श कर रहे थे। ऐसा उन्होंने बताया। अब मोबाइल को कंप्यूटर से जोड़ने के लिए तार चाहिए था। उन्होंने मुझे अपने कार्यालय के कर्मचारियों के पास भेजे। मैं उनके पास गया तो उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया। मैंने लौटकर

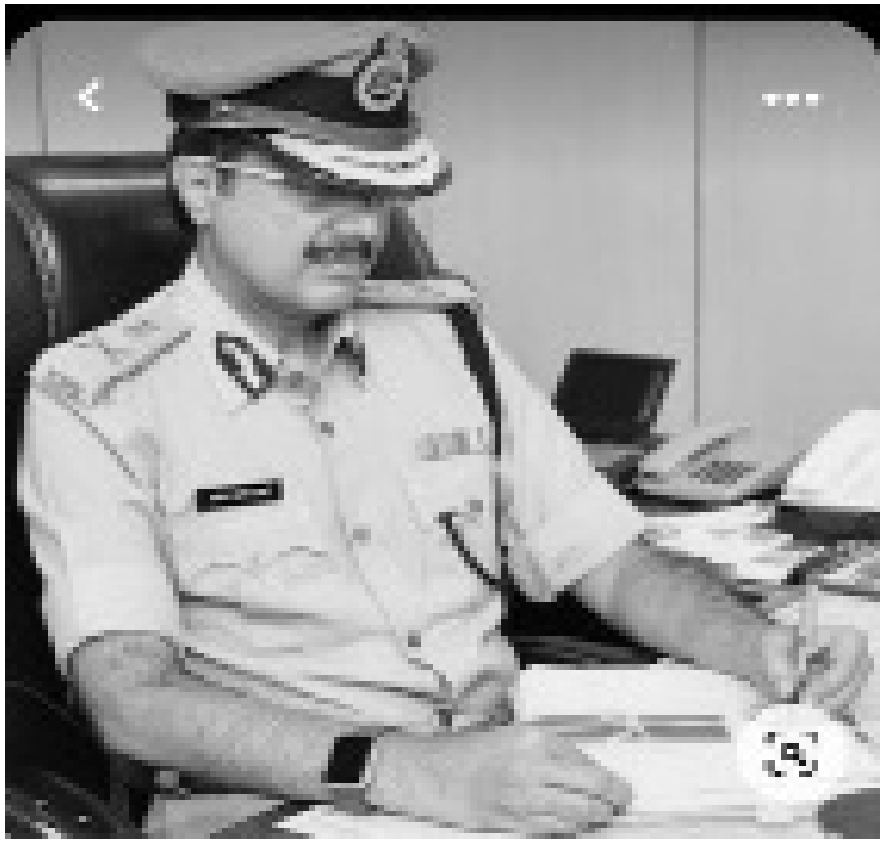

महोदय जी को बताया। उन्होंने घंटी बजाई। दोड़कर चपरासी आया। उन्हें आदेश दिया। 'जाओ कर्मचारियों के पास से मोबाइल को कम्प्यूटर से जोड़ने वाले कनेक्टर ले आओ।'

चपरासी ने तुरंत ला करके दिया। महोदय जी ने मेरे बारे में पूछा! थोड़ी बातचीत हुई। महोदय जी मेरे लिए बहुत मेहनत कर रहे थे। तभी मेरी नजर उनके कंधे पर लगे सितारों पर पड़ी। तीन सितारे लगे हुए थे। वे जिले के प्रमुख अफसर थे। बड़े दिनों बाद मशीन चालू कर रहे थे तो वह उन्हें परेशान कर रहा था ।

मैंने देखा 9:10 हो गया है। मैंने बोला - '' सर नहीं हो रहा है तो रहने दीजिए! सर समय भी तो हो चुका है।'' उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी वे लगातार मेहनत कर रहे थे। और उनके प्रयास से मुझे प्रवेश पत्र मिल गया। मैंने उन्हें कहा - सर आपको बहुत बहुत धन्यवाद!

'बेस्ट ऑफ लक' मैंने महोदय जी के चरण स्पर्श किया और वहाँ से निकला। परीक्षा केंद्र के सामने आया तो घड़ी में 9:30 बजा रही थी। मैं फिर से निराश हो गया क्योंकि 9:00 से परीक्षा शुरू हो जाती है मैं 9:30 बजे पहुँच रहा था। प्रवेश पत्र के लिए मेरे एवं महोदय जी के द्वारा किया गया मेहनत भी व्यर्थ हो गया। चपरासी दरवाजा बंद कर रहा था । छोटा-सा दरवाजा खुला था वहाँ अपना सिर घुसा के बोला - 'अंदर आ जाऊं । ''थोड़ी दूर भवन के दरवाजे में महिला पुलिस खड़ी थी उन्होंने कहा - 'जल्दी आ', 'जल्दी ....जल्दी!'

मैं अंदर से अत्यधिक प्रफुल्लित हो गया। मुझे परीक्षा में बैठने के लिए अवसर मिल गया। मैं अपने कक्ष में जाकर बैठ गया।

ठीक उसी समय निर्देश दिया जा रहा था कि प्रश्न का उत्तर देना शुरू कीजिए! मुझे लगा किस्मत मेरे भरोसे ही बैठा हुआ था। मैं तो अंदर से पूरी तरह से हार मान चुका था कि अब मेरा कुछ नहीं हो सकता। अंदर से भी एक ही आवाज आ रही थी कि तू किसी हालत में परीक्षा नहीं दिला सकता थोड़ा-सा समय है इसमें तू अपना कुछ अच्छा नहीं कर सकता । साथ में अंदर से एक और छोटी सी किरण आकर कह रही थी कि ''प्रयास करके देख, थोड़ा ही सही, अभी भी समय है।''

भले हर कोशिश में सफलता नहीं मिलती, लेकिन हर सफलता के पीछे कोशिश ही होती है।

ooo

स्मार्टफोन

अंकुश शुक्ला
एम.एस-सी. चतुर्थ सेमेस्टर (जियोलॉजी)

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने आज इतनी तरक्की कर ली है कि हम चमत्कृत हैं । आज हम धरती के अलावा अन्य ग्रहों में भी बसने का स्वप्न देख रहे हैं । विज्ञान और तकनीक ने हमें बहुत सारी चीजें दी है इसने दुनिया की दूरी कम कर दी है । हम एक साथ ग्लोबल और लोकल हो गए हैं । इससे दुनिया में काफी बदलाव आया है। यह सब विशेषतः सूचना क्रांति के विकास के फलस्वरूप हुआ है ।

कंप्यूटर के विकास के साथ डेस्टटॉप, फिर लैपटॉप और अब स्मार्ट फोन का जमाना है । विज्ञान की इस उपलब्धि ने समाज में एक क्रान्ति उपस्थित कर दी है।

भारत में स्मार्टफोन एक क्रान्ति के रूप में सन 2008 में आया और आते ही बाजार में छा गया । आज स्मार्ट फोन सभी के पास देखा जा सकता है ।

सन् 2008 के पहले तक 'की-पैड' का बोलबाला था लेकिन इन 10 सालों में इसका चलन कम हो गया और धीरे-धीरे यह बाजार से भी दूर ।

मेरी बात और है मैंने 'की-पैड' मोबाईल से शुरुआत की थी । मुझे स्मार्टफोन तब मिला जब इसकी आवश्यकता का आभास हुआ और तब से मैं इसका उपयोग कर रहा हूँ। पहले स्मार्टफोन की चोरियाँ होती थी क्योंकि यह संख्या में कम था । अब यह हर किसी के पास है । आज तो आप यदि अपना स्मार्टफोन बाजार में कहीं छोड़ दे तो वह दुकानदार उसे संभाल कर रखेगा, क्योंकि उसके पास आपसे महंगा वाला स्मार्ट फोन है ।

स्मार्टफोन एक ऐसा यंत्र है जिसे यदि सही तरीके से उपयोग में लाया जाए तो बहुत सुविधाजनक ढंग से आपको सुयोग्य बना देगा और यदि इसके यदि इसके महत्व को न समझ कर इसका दुरुपयोग करते हैं तो आपके वर्तमान, भविष्य के साथ स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

आज स्मार्टफोन का उपयोग बहुत अधिक होने लगा है।आज घर बैठे आप इसके माध्यम से खरीदारी कर सकते हैं, बैंक का काम कर सकते हैं, मीटिंग कर सकते हैं। आज तरह-तरह के कार्यों को स्मार्टफोन के माध्यम से अंजाम दिया

जा रहा है। बच्चों के लिए स्मार्टफोन एक मनोरंजन का माध्यम बन गया है तो बूढ़ों के लिए समय काटने का।

सोशल मीडिया का प्रयोग परस्पर संपर्क एवं आपस में जुड़ाव के लिए होता है जिसमें फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं व्हाटसएप की अहम् भूमिका है। लेकिन आजकल इसका उपयोग इस कदर बढ़ गया है इसके कारण कई सड़क हादसे देखने को मिलते हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक स्मार्टफोन से इस कदर चिपके रहते हैं कि उन्हें देखकर लगता है कि वे स्मार्टफोन को नहीं बल्कि स्मार्टफोन उन्हें चला रहा है। इसकी वजह से लोगों में चिड़चिड़ापन तथा मानसिक रोग बढ़ता जा रहा है। लोग पल पल में मोबाइल चेक करते रहते हैं। लोगों के इन्हीं प्रवृतियों को देखकर सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री संपत सरल जी ने एक बार व्यंग्य करते हुए कहा था कि ''आज के इस डिजिटल युग में भारत में बेरोजगारी नाम मात्र की रह गई है क्योंकि अब हर हाथ को काम मिल गया है।'' यदि हम इसका उपयोग दिन भर करेंगे या आदत ही बना लेंगे तो यह हमारे व्यवहार, स्वास्थ्य पर पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है। इसलिए हमें इस अति से बचना चाहिए। कहा भी गया है - 'अति सर्वत्र वर्जियेत।'

स्मार्टफोन का सकारात्मक उपयोग किया जा सकता है। आपके पास स्मार्टफोन है तो सब कुछ है। आप घर बैठे अपना हर काम कर सकते हैं। कई लोग स्मार्टफोन का उपयोग अकेलापन दूर करने के लिए करते हैं जो कि एक प्रकार से सही भी है । लेकिन यह अकेलापन आप बाहर जाकर, लोगों से मिलकर या किताबें पढ़कर भी दूर कर सकते हैं जिससे अकेलापन भी दूर होगा और बौद्धिक विकास भी होगा। अकेलापन दूर करने के लिए स्मार्टफोन पर ही निर्भर हो जाते हैं तो यह हमारी सोचने समझने की क्षमता को नष्ट कर देता है। कभी न कभी यह सभी ने अनुभव किया होगा।

स्मार्टफोन एक माध्यम है । यह माध्यम हमारे जीवन के लिए है, और हमें समझना होगा कि हमारा जीवन इस माध्यम के लिए नहीं है। अतः हमें स्मार्टफोन का उपयोग करें, लेकिन एक हद तक । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्मार्टफोन के अलावा भी दुनिया है। इसलिए अपनी सेहत का ध्यान रखते हुए इसका उपयोग करें।

000

My NSS Journey

Manasi Yadu
M.Sc. Final (Geology)

"NSS" a word which brings sense of discipline and Patriotism in many of us. A word which opens a floor of opportunities for overall development of a student. We look up to those students who were part of NSS and are now excelling in various fields of life.

NSS stands for National Service Scheme which was launched in year 1969, in the birth centenary of Mahatma Gandhi . With Moto of "NOT ME BUT YOU" Initially it was launched in universities with 40000 volunteers and is currently executing in more than 391 universities in 16278 colleges with more than 36.5 lakh volunteers serving for development of the nation.

NSS is an extension dimension to the higher education system to orient the student youth to community service while they are studying in educational institutions. It is being implemented by the Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. NSS is split into two levels. School level provides A Certificate after successful

Dalnayika (President) NSS Unit (2021- 22) got an opportunity to attend NATIONAL INTEGRATION CAMP- 2022 at Amleshwar. Being part of such camps is dream for every volunteer selection ratio is very low because out of volunteers from 150 college under university. Two to Six volunteers are only selected for this camp for getting selected you need to prove that you are multitalented among other volunteers and master of particular event. I got an opportunity to represent my college and university at National level and my excitement and curiosity was on peak. In this camp 210 NSS volunteers from Gujarat, Maharashtra, Madhya Pradesh, Rajasthan, Jharkhand and 12+ states. Exchanged their ideas their cultural practices. Our day in camp use to begin with Yoga and excersise followed by project work which included Gardening, campus cleaning etc. Lectures were arranged for volunteers where prominent guest guided volunteers on various topics like leadership, volunteer management etc.

completion of two years. College level provides B and C certificate after successful completion of 240hrs and 360hrs respectively. During this NSS journey we get opportunity to conduct and become part of various one day camps, Seven days special Unit camp, State camp, National Integration Camp, Adventure camp, Pre - RDC camp, RDC camp.

The best part of NSS is our Seven days special Unit Camp where every NSS volunteer comes up with a story and experience which is travelogue of their success. Every story is special in its own way and my story is one of them. To me NSS is a family where seniors and juniors share bond of respect for each other and stand for each other during hard times. Under the guidance of Program officer Dr. Meena Maan, I Mansi Yadu,

volunteers work to ensure that everyone who is needy gets help to enhance their standard of living and lead a life of dignity. In doing so, volunteers learn from peoplein villages how to lead a good life despite a scarcity of resources. It helps them to figure out problems exisisting in our society and come with solution for the same. During our seven day camp in Village- Thanoud we encountered one such problem. We found school students getting addicted to alcohol which is a very serious threat to society. In collaboration with Kalyani Social Welfare and Research Organisation, NSS Volunteers joined Kalyani Fighters group who are continuously working in this field. NSS has helped me to grow and to explore myself as individual with essence of selflessness, patriotism and discipline. It taught me importance of co-curricular activities in student's life, Time management, Team work, Event Management, Qualities of a good leader. NSS taught me not to give up at any point of time rather how to start again with fresh energy aiming to excel in life. Teachings from my entire NSS journey will help in every walk of my life.

Various Competitions were conducted out of which I represented my state in "Extempore" and "Street Play" where we team Chhattisgarh got Second position for Street play. Volunteers were also involved in Cultural programs conducted in evening every day. This programmes were designed to bring out creativity of volunteers and inculcate time management skills. Through this camp I got to know about my potential as leader and participant. We made friends and got attached tomany volunteers from our state and other states too and made a buddy pair. It feels good to see home after many days but we miss our camp place too. Memories of our seven days camp gets captured in our hearts forever.

The programme designed in NSS aims to instilling the idea of social welfare in students, and to provide service to society without bias. NSS

Dream of TSC

Sergeant - Kritika Dewangan

NCC stands for National Cadet Corps established in 1948. It Has three wings Army wing, Navy Wing and Air force Wing. Having 17 Directorate among which one of the Dte. is MP/CG that I was a part of. NCC Teaches us Discipline, Teamwork, Time Management, Team spirit, Courage and patriotism etc. for Every NCC Cadet there would Be a Long Story to tell which would Become a life time Memory. My story is also one of them i.e. Thal Sanik Camp. TSC 2022 (Thal Sanik Camp) I am Sergeant Kritika Dewangan from No. 37 C.G. BN NCC Durg (Chhattisgarh) and I am going to share my experience of TSC. My Journey was astonishing. I had never thought that I would be able to fulfill my dream of becoming a part of TSC. It was like a dream come true as for every NCC Cadet it's a dream to be a part of TSC.

The selection process started form the Battalion level where selected students form there respective colleges participated. At Battalion level, Two times selection was Done on the Basis of filling. The cadet whose grouping was less than team was selected and Mine was six cm. Before sharing my views further let me brief about Tsc. Thal Sanik Camp is the second largest camp after "RDC." One who completes TSC Camp is equal to a Indian army solder because it gives an exposure to the salient feature to Army training Helps you to gain a lots of knowledge related to Army. It Builds confidence and will power. TSC is a 12 days camp conducted by NCC in DG NCC cant area New Delhi every year. In which the cadets from all 17 Dte. Participate, 88 from each including SDS, SWs and reserve parties of Different Competitions. It Comprises of 7 Competitions i.e. Obstacle training, Tent pitching, Map reading, Judging Distance and field signal , Health and Hygiene, Line area and firing. The Cadets who participate in filling was not allowed to do other events and others had to Participate in remaining six Competitions, including firing. To lets proceed further.

After the Announcement of results all the selected Cadets from Battalions went to

Bilaspur for attending TSC - I Selection and Training camp Conducted by CG Battalion NCC, Bilaspur from 01 Aug 2022 to 08 Aug 2022 of Dr. C.V. Raman University Kota. The camp area was amazing and their facilities as well. On reporting day we were addressed by the commanding officer of TCG BN and the very next day selection procedure started, for getting selected you need to prove that you are multitalented among other cadets and Master of a particular event. We were required to do all the event and had to put more focus on one single event in which we were Best.

My main event was Judging Distance and field signal so I put more focus on this event over others. I was scoring better everyday. I was happy with my performance. For practicing map reading and JDIFS we used to go to beautiful hilly areas, there we learnt by having fun. The memories I made there is priceless and unforgettable everyday our instructor (Ustaad) took us to the new spot and tough us How to find /judge the distance and own position including map to ground vice versa and field signal. We all were improving day by day and competition was becoming even more harder. But luckily I was selected for the best camp TSC-II training and launch camp conducted at same place and by same unit form 19 Aug to 26 Aug 2022.

I was focused from the very first day and clear that my destiny is Delhi that's why I studied Hard. Daily Morning I woke up at 3:00 AM for studying and continued till the time of roll call i.e. 6:00 AM. At night I studied till l11:00 PM and throughout the Day I studied whenever I got the time. It was little bit difficult to study in that tough routine where we get tired and undusted a lot. But any how I managed to do it. This time also I got selected for IGC (Inter group competition) where sing ours participate to make combined group /Dte. Of MP/CG. IGC was conducted by 33 MP Battalion NCC Saugor (MP) From 27th Aug to 29th Aug 2022, Before coming to IGC every cadet was told their respective one or two events. Mine was JD/FS and health and hygiene. Unfortunately I did not do much

in H/H (Health & Hygiene) but my hardship pays out of 48 SWs of judging distance event of all the groups, I got first position with total marks 52 out of 55, included (practical & Theory). All the achievers were honored by honorable commanding officer of MP BN. Overall among sin groups Raipur group got second position in IGC. After IGC was over and non selected cadets were gone home, training camp started form 1 sep 2022 to 4 sep 2022. Competition was becoming even more tougher from IGC onwards they allotted us chest number, We were identified or known by our chest number only . Mine was 497 which I will never forget during the selection process they basically call your chest number, so one can conclude that He /She is selected.

However I selected for pre TSC camp it was from 5 sep to 12 sep2022 and the selected cadets were sent directly from saugor to Delhi. Practice maked a man perfect this statement becomes true as I ameliorate day by day and made it pre TSC. I was in pre TSC none and my main event was JD/IF . Now it was our last day in Saugor, so all the Cadets were invited for BADA KHANA, We had our dinner with many respectable officers. Proud movement for all of us. Next day we had to leave for Delhi. Our kits were distributed. This feeling cannot be laid dawn in words. No doubt our dream was about to come true but some of our friends were out form pre TSC, I really missed them. Next day we to leave for Delhi.

All India Thal Saink Camp was form 14 sep to 25 sep 2022. Held at DG NCC cantt

area New Delhi. On reaching DG NCC cantt area we had to open our backpacks for routine check ups, after instructions we were sent to the building of MP/CG Dte. It was home for us. Our beds were distributed and within no time we had our dinner. It was a rush day so everyone was very tired and went to sleep early. In Delhi our event competition was of one day only and the rest of the day s we had to attend attend lectures I work shops, Drill class etc. and rest of the days you can have fun. Till the line Area competition was over we worked like labor, tired and a lost all our energy everyday for line area competition. Every morning we had our roll call where

everyday instructions were given after this we go for playing. After coming back some cadet go for drill practice, lecture, cleaning and preparing for LAC and remaining cadets go for their Respective competition.

One of the best thing was that you won't regret your Birthday there because daily we used to cut cake. Every day was a new chapter there. Beside daily events we had a new experience. Some of the best memories are from Delhi Darshan. How one can forget that day. The day when we visited Qutub Minar, India gate, Lotus temple, museums etc. Overall our dte. Got the 9th rank from SWS and 10th rank from SDS and got 4th position in line area competition both from SDS and SWS and in JD/FS our dte. got 5th rank from SWS side which was my event. Performance in other event was also outstanding like in Map reading MP/CG got second prize and in shooting one JD got second prize. After coming back to sager form Delhi. We were addressed and welcomed by our honorable Additional Director General sir ji further, our experience and reviews were recorded in a video and photo were taken. After this we came back to our home town.

NCC has helped me to grow and strive as an individuals It provides not only aspirants for armed forces but and idea being in all walks of like. I am proud to be the part of NCC and I also aim to join the Indian armed forces soon. Lastly I would like to thank my friends, parents, teacher, who supported and motivated me in this journey.

मटपरई शिल्प कला

जय कुमार
एम.ए. (इतिहास)

मटपरई क्या है- इसके संबंध में यह कहना पूर्णतया उचित होगा कि यह मिट्टी, खली और कागज और मनचाहा रंगो का प्रयोग करके घरों में सजावट का सामान या दैनंदिन उपयोग में आने वाली आवश्यक वस्तुओं का निर्माण है।

'मटपरई कला' छत्तीसगढ़ अंचल की एक सांस्कृतिक धरोहर है। यह पारंपरिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती चली आई है। गाँव में लोग अपने घरों में छोटे-छोटे सामान रखने के लिए ऐसे ही टोकरियों तथा बच्चों के खेलने के लिए सामान बनाया करते थे। वर्तमान परिवेश में आधुनिक तकनीकी सभ्यता ने हमारी इस विरासत को विलुप्ति के कगार पर ला खड़ा किया है।

इस शिल्प को हमारी दादी नानी तथा उनसे भी पूर्व कि कई पीढ़ियों ने संरक्षण कर संवर्धित किया था, अब हमारा दायित्व है कि हम इसका संरक्षण तथा संवर्धन करें। इसी योजना के तहत हमारे महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों को इस विलुप्त प्राय मटपरई कला से अवगत कराने, अपनी संस्कृति को जानने तथा सहेजने के साथ व्यवसाय के रूप में अपनी आजीविका का साधन बना सके; यह उपक्र म किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय की अनुमति तथा इतिहास विभाग के अध्यक्ष, डॉ. अनिल कुमार पांडे के मार्गदर्शन में मटपरई शिल्प कला प्रशिक्षण हेतु पन्द्रह दिनों का कार्यशाला का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षक के रूप में इस कला के जाने-माने शिल्पकार श्री

अभिषेक सपन को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने अपनी कला के साथ-साथ अपना अनुभव इस शिल्प कला से जुड़े सांस्कृतिक महत्व को विद्यार्थियों के बीच साझा किया।

उन्होंने बताया किसके लिए आवश्यक है अनाज (तिलहन) की खली, रद्दी कागज, चिकनी मिट्टी, प्लास्टिक की टोकरियां, मनचाहे रंग, पेंट और ब्रश। इसे बनाने की विधि बहुत सहज, सरल है। सर्वप्रथम कागज की लुग्दी बनाने के लिए उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर पानी में भिगो देते हैं। दो तीन दिनों तक भीगने के बाद उसे बाहर निकाल कर अच्छी तरह से निचोड़ कर मूसल या खलबत्ता की सहायता से कूटकर लुगदी बनाया जाता है। फिर चिकनी मिट्टी को अच्छे से पानी में भिगोकर उसमें से कंकड़-पत्थर आदि को निकालकर पूर्णता साफ करने के बाद मिट्टी और कागज की लुगदी को खली के साथ मिलाया जाता है। खली, कागज की लुगदी और मिट्टी को आपस में अच्छी तरह से मिलाने के बाद फिर अलग-अलग आकृति तथा मनचाहा वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। जब वस्तुओं का निर्माण पूरा हो जाए तब उसे दो-तीन दिन तक धूप में सुखाया जाता है। धूप में सुखाने के बाद उन वस्तुओं के ऊपर विभिन्न चित्रकारी तथा भित्ति शिल्प के द्वारा अलंकृत किया जाता है । पूर्ण रूप से वस्तु तैयार हो जाने के बाद उसे रंगा जाता है। उकेरी गई भित्ति चित्रों को सुरक्षित रखने हेतु उस पर टच वुड का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त सभी विधि के अनुसार मटपरई कला का निर्माण किया जाता है।

मटपरई भित्ति कला के अंतर्गत खिलौने, पशु - पक्षियों, विभिन्न जीव-जंतुओं तथा कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। मटपरई शिल्प इतने आकर्षक तथा सुन्दर होते हैं कि लोग इसे खरीद कर अपने घरों में बड़े शौक से ड्राइंग रूम में सजाते हैं।आज यह कला रोजगार का एक अच्छा जरिया बन गया है।

000

बसन्त मन का उल्लास है, हृदय का हुलास है

ओमकुमारी देवांगन
अतिथि व्याख्यता (हिन्दी)

माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी को वसन्त पंचमी मनाया जाता है। वसन्त प्रकृति के श्रृंगार का, मन के हुलास का पर्व है। प्रकृति आदिकाल से मनुष्य को आकर्षित करती रही है। उसकी विविध छवियों में मनुष्य अपने हास परिहास, राग द्वेष, सुख दुःख, स्वप्न यथार्थ, आशा आकांक्षा, राग विराग को देखता रहा है। साल भर के समस्त ऋतुओं में वसन्त सर्वाधिक आकर्षक होता है। वसन्त आते ही परिवेश में चारों ओर एक अलग मादकता आ जाती है।

वातावरण में प्रकृति की खुशबू घुल मिल जाती है। प्रकृति नयी श्रृंगार से सज जाती है। रंग बिरंगे फूलों की महक से समग्र वातावरण सुवासित हो उठता है। खेतों में सरसों के पीले पीले फूल धरती की धानी चुनर बन जाती है। आम में बौर आ जाते हैं। पलाश के पेड़ लाल पीले फूलों से लद जाते हैं। कोयल भी अपनी मदमस्त मीठी तान से मन को आकर्षित करने लगती है। खेतों में गेहूँ का फूटना, महुआ की मादकता और शीतल मन्द सुवासित समीर से तन मन प्रफुल्ल हो जाता है। मौसम में तापमान सन्तुलित हो जाता है। समशीतोष्ण; न ज्यादा ठंड न ज्यादा गर्मी। आकाश स्वच्छ रहता है। रंग बिरंगे मनमोहक फूलों का खिलना, भौंरों का गुंजार और तितलियों की चंचलता हमें विपरीत ध्रुव के प्रति सहज आकर्षित कर हमारी अर्धनारीश्वर प्रकृति को, हमारी सम्पूर्णता को, हमारे अस्तित्व को सार्थक करने के लिए हमें उद्दीप्त करती है ।

वसन्त सृष्टि के संचालन का मौसम है। यह अभिसार का मौसम है। वसन्त का सौन्दर्य समस्त प्राणियों को कामोद्दीप्त कर सृष्टि की निरन्तरता का मार्ग प्रशस्त करता है। इसीलिए प्राचीन काल में वसन्तोत्सव को मदनोत्सव भी कहा जाता रहा है। यह प्रकृति के फलने फूलने के साथ ही सृष्टि के भी फलने फूलने और सन्तति के क्रम को निर्बाध

रखने का प्राकृतिक उपक्रम है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह मौसम सर्वोत्तम होता है। वसन्त मेरे लिए धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व से कहीं ज्यादा प्राकृतिक महत्व रखता है। बसन्त मेरे लिए मन का उत्सव है। मेरे अन्तस का उत्सव है। बसन्त का मौसम साल भर की हमारी जड़ता को दूर कर अन्तस को नवीन चेतनता से भर देता है । कहने का तात्पर्य है, कि वसन्त प्रकृति परिवर्तन का, प्रकृति की नवलता का, प्रकृति के श्रृंगार का उत्सव है । यह मनुष्य को पुरुषार्थ से जोड़ता है ।

प्रकृति का रूप श्रृंगार और गति क्रम मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों को मूल दायित्व और प्राकृतिक कर्त्वय के लिए प्रेरित करता है। वसन्त का यह मधुमास सृष्टि कीवसन्त मन निरन्तरता का मूल उत्स है। बसन्त ऋतु में ही महाशिवरात्रि भी मनाया जाता है। शिव रात्रि अर्थात कल्याण की रात्रि । विश्व के, मनुष्य के, सृष्टि के, चराचर जगत के अन्यान्य जीवों के यानी अखिल ब्रह्माण्ड के कल्याण की रात्रि। देवाधिदेव महादेव भगवान शिव के अतिरिक्त अन्य देवी देवताओं के जन्मदिवस या अवतरण दिवस मनाने की परम्परा है। भगवान शिव और भगवती पार्वती हैं, जो

जन्मोत्सव न मनाकर विवाहोत्सव मनाते हैं । शिवरात्रि हमें सृष्टि संचालन की महती दायित्व से अनुप्रेरित करता है। महाशिवरात्रि शिव और शक्ति के मिलन की रात है। आध्यात्मिक रूप से इसे प्रकृति और पुरुष के मिलन की रात्रि मानी जाती है। शिवलिंग भी सृष्टि के मूल उद्भव का पूजन है । शिवलिंग सृष्टि के उद्यम का श्रृंगार है ।

प्रकारान्तर से बसन्त ऋतु में मनायी जाने वाली शिवरात्रि हमें समस्त सृष्टि के कल्याण का, शिवत्व का और प्रकृति की अनश्वरता का बोध कराता है। कहा जाता है, इसी दिन कामदेव मदन का जन्म हुआ था। लोगों का दाम्पत्य जीवन सुखमय हो और सृष्टि का क्रम अनवरत रहे इसके निमि.ा रति कामदेव की पूजा अर्चना का भी विधान है। वाग्देवी सरस्वती का अवतरण वसन्त पंचमी को हुआ था। इसीलिए इस दिन सरस्वती पूजा की जाती है। इसी दिन लक्ष्मी का भी अवतरण दिवस माना जाता है। इसीलिए इस तिथि को श्री पंचमी भी कहा जाता है।

वसन्त पंचमी पर वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा का मह.व है। वाग्देवी सरस्वती ब्रह्म स्वरूप कामधेनु और सभी देवताओं की प्रतिनिधि है। वह विद्या, बुद्धि, ज्ञान, स्वर और सुर की देवी है। अमित तेजस्विनी और अनन्त गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा और आराधना के लिए माघ शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि निर्धारित की गयी है । इस दिन विद्यादायिनी सरस्वती का आह्वान कर कलश स्थापना की जाती है और उसकी पूजा की जाती है । वसन्त पंचमी का पौराणिक ऐतिहासिक महत्व भी है। त्रेतायुग में शबरी ने अपने प्रेम से पगे जूठे बेर श्री राम को इसी दिन खिलाये थे। राजा भोज का जन्मदिवस वसन्त पंचमी के दिन ही माना जाता है। हिन्दी साहित्य की अमर विभूति महाकवि महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म वसन्त पंचमी के दिन ही हुआ था। मनुष्य के जीवन में जिस प्रकार यौवन का आगमन होता है, उसी प्रकार वसन्त प्रकृति का यौवन है। वसन्त को ऋतुराज कहा गया है। वसन्त आदिकाल से कवियों का प्रिय वर्ण्यविषय वस्तु रहा है। शायद ही ऐसा कोई कवि होगा जो वसन्त के सौन्दर्य से प्रभावित नहीं होगा । संस्कृत तथा हिन्दी दोनों ही साहित्य के कवियों मनीषियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से वसन्त का ब़डा ही मनोहारी चित्रण किया है। कालिदास ने ऋतुसंहार में लिखा है -

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं,
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः;
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः,
सर्वं प्रियं चारुतरं वसन्ते।

मैथिल कोकिल विद्यापति ने वसन्त का चित्रण करते हुए कहा है -

नव वृंदवन नव - नव तरुगण
नव - नव विकसित फूल।
नवल वसन्त नवल मलयानिल
मातल नव अलि कूल।

वसन्त प्रकृति में नये फूलों, नये पुष्पों, भौंरों की गुंजन और कोयल की कूक के साथ धीरे -धीरे अवतीर्ण होता है । मलिक मुहम्मद जायसी ने नागमती वियोग खण्ड के प्रसिद्ध

बारहमासा में वसन्त का वर्णन उद्दीपक रूप में किया है -

चैत वसंता होइ धमारी, मोहि लेखे संसार उजारी ।
पंचम विरह पंच सर मारै, रकत रोई सगरौं बन ढारै ।
वसन्त यदि संयोग काल में मधुर मिलन के लिए , अभिसार के लिए प्रेरित करता है, तो वियोग काल में अकथनीय कष्टप्रद भी बन जाता है। वसन्त बहार में होने वाले परिवर्तन प्रियपात्र की स्मृति को असह्य और हृदय विदारक बना देता है ।
रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों में प्रकृति चित्रण प्रमुख विषय रहा है। कवि सेनापति का गतु वर्णन प्रसिद्ध है। वसन्त का सजीव चित्रण करते हुए कवि सेनापति कहते हैं -
बरन बरन तरु फूले उपवन, सोई चतुरंग संग दल लहियतु है;
बंदी जिमि बोलत विरद वीर कोकिल है, गुंजत मधुप गान गुन लहियतु है।
पण्डित जनार्दन ने वसन्त का मोहक वर्णन करते हुए लिखा है -
फूली द्रुम लता बेल बनन में बागन में,
कोमल पलास रंग नये दरसाये री;
कोकिला कलापि मिलि कूकती है कुंजन में,
अलि अरि वेदन में गजब सुहाये री।

वसन्त की मादकता और सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कवि
देवनाथ पाण्डेय ने लिखा है -

कोकिल कलाप की सुरीली किलकारी मधु ,
कानन में गूँज गूँज उर में समाति है ;
सौरभ प्रपूर्ण पुष्प पुंज के पराग हेतु ,
कुंज कुंज भ्रमी भ्रमराली मदमाति है।

आचार्य कवि देव ने वसन्त के आगमन को एक नवजात शिशु के रूप में देखा है। उन्होंने वसन्त के जन्म को इस रूप में व्यक्त किया है

- डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के
सुमन झिगुला सोहै नन छवि भारी दे ;
पवन झुलावे केकी कीर बहरावै देव ,
कोकिल हलावे हुलसावे कर तारी दै ।

पदमाकर प्रकृति के कवि माने जाते हैं ।
वसन्त वर्णन का सर्वाधिक लोकप्रिय और मनोहारी चित्रण कवि पद्माकर के पद में देखने मिलता है। उन्होंने लिखा है -
कूलन में केलिन में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन में कलीन किलकंत है;
कहै पद्माकर परागन में पौनहू में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है ।

महाकवि बिहारी ने अपनी दृष्टि से वसन्त का अत्यन्त मादक चित्रण किया है । उन्होंने लिखा है -
छकि रसाल सौरभ सने मधुर माधवी गन्ध।
ठौर ठौर झौरत झम्पत, झौंर झौंर मधु अन्ध।

एक अन्य दोहे में वसन्त का मादक चित्रण करते
हुए कविवर बिहारी ने लिखा है -

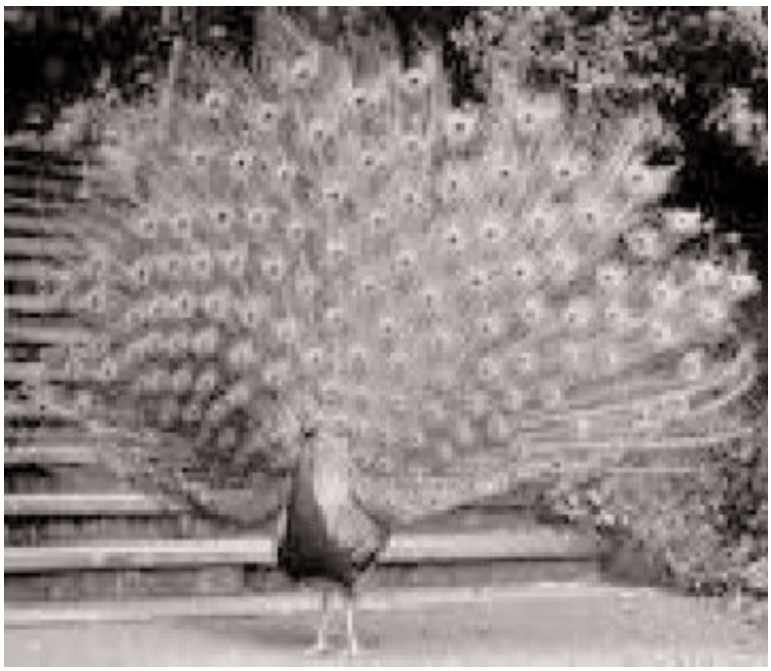

रनित भृंग घण्टावली, झरित दान मधु नीर ;
मन्द मन्द आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर ।

छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद ने जीवन को वसन्त से जोड़ते हुए प्रथम यौवन का मनोहर चित्रण किया है -

मधुमय वसन्त जीवन वन के,
वह अन्तरिक्ष की लहरों में;
कब आये थे तुम चुपके से,
रजनी के पिछले पहरों में।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने वसन्त जैसे मधुमास में भी देशभक्ति के लिए प्राणोत्सर्ग का सौन्दर्य देखा । उन्होंने वीरों का कैसा हो वसन्त नामक कविता में देशप्रेम के लिए सर्वस्व न्योछावर कर शहादत का आह्वान किया है । महाप्राण पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला वसन्त पंचमी के दिन अपना जन्मदिन मनाते थे। उन्होंने लिखा है -

अभी अभी तो आया है, मेरे जीवन का मृदुल वसन्त ।

अभी न होगा मेरा अन्त । वसन्त से अक्षय ऊर्जा प्राह्श्वत यह कवि की अदम्य जिजीविषा है । सखि वसन्त आया कविता में वे लिखते हैं सखि वसन्त आया, भरा हर्ष वन के मन, नवोत्कर्ष छाया । इस तरह हम देखते हैं, कि वसन्त का यह मधुमास हमें नयी उष्मा प्रदान कर, हृदय में जीवनानुराग उत्पन्न कर हमें सकारात्मक ऊर्जा देता है। वसन्त का आगमन वसन्त को अन्तस में महसूस करने का, वसन्त को जीने का, सकारात्मक दृष्टि आत्मसात कर मनुष्य के अस्तित्व की अनश्वरता का सन्देश देता है। वसन्त प्रकृति में नियत क्रम से आता है ; किन्तु वसन्त का परिवर्तन, वसन्त का पर्व बाह्य सौन्दर्यावलोकन के साथ ही आन्तरिक सौन्दर्यानुभूति का विषय है । वसन्त पंचमी के दिन से होलिकोत्सव के लिए लकड़ियाँ एकत्र कर फाग की भी शुरुआत होती है। वसन्तोत्सव, होलिकोत्सव, मदनोत्सव वस्तुतः हमारे जीवन में राग रंग, रस रंग प्रवाहित होने का नाम है । वसन्त ग तु आते ही प्रकृति का कण कण खिल उठता है । मनुष्य और समस्त प्राणी उल्लास से भर उठते हैं । इस ऋतु में प्रत्येक सूर्योदय एक नयी उमंग और उल्लास प्रदान करता है। वसन्त प्रकृति में नवीन चेतना, नयी स्फूर्ति, नव श्रृंगार, नयी सृष्टि का प्रतीक है। वसन्त तन मन में, समग्र परिवेश में नवलता का सूचक है। वसन्त हमारे अवसादमना शिथिल जीवन में नयी ऊर्जा, नयी ऊष्मा, नये उत्साह का संचार करता है। वसन्त का आगमन हमारी जीवनोत्कंठा, जीवनानुराग, जीवनाकर्षण को बढ़ाता है।

वसन्त हमारे निराश मानस में सरसता प्रवाहित कर हृदय को झंकृत करता है। तमाम प्रतिकूलताओं, विपरीतताओं के बीच वसन्त हमें जीवन के प्रति आश्वस्ति देता है । यह हमारे मनुष्य होने का, हमारी संघर्षशीलता का, हमारी दुर्धर्ष अजेयता का परिचायक है। हजारों कष्टों और मूल्यविरोधी तत्वों के बीच हमारे मनुष्य होने और हमारी संघर्षशीलता का निदर्शक है। वसन्त मनुष्य जीवन की रस स्निग्धता और अस्तित्व का मूल है । वसन्त पंचमी का दिन सभी प्रकार के शुभ कार्यों के लिए अत्यन्त सिद्धिदायक और पावन माना जाता है। हमारी संस्कृति में वसन्त पंचमी को विद्यारम्भ, गृहप्रवेश और विवाहोत्सव के लिए बहुत ही शुभ माना गया है। अन्त में छत्तीसगढ़ के प्रख्यात लोकप्रिय कवि लक्ष्मण मस्तुरिहा की पंक्तियों से अपने आलेख का समापन करती हूँ।

मन डोले रे माघ फगुनवा
रस घोले रे माघ फगुनवा
राजा बरोबर लगे मऊरे आमा
रानी सही परसा फुलवा ।
मन डोले रे माघ फगुनवा
रस घोले रे माघ फगुनवा ।।

प्राचीन शिव मन्दिर, घटियारी (गंडई)

प्रीषिता ताम्रकार
बी.ए. भाग-तीन

मानव सतत् भ्रमण करने वाला प्राणी है। नवीन स्थलों के प्रति उसके मन में सदैव जिज्ञासा का भाव रहता है । मानव जीवन में सर्वाधिक जिज्ञासु काल विद्यार्थी जीवन है । ऐसे ही जिज्ञासावश हम गंडई क्षेत्र के एक ऐसे धार्मिक स्थल पहुंचे, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। यह मंदिर गंडई से लगभग 5 किलोमीटर दूर बिरहा घटियारी में स्थित है। जिज्ञासा वाली बात यह है 41 साल पहले तक कोई जानता भी नहीं था कि इस जगह पर प्राचीन शिव मंदिर है। जमीन पर दफ़न यह मंदिर वर्ष 1979 में एक टीले को स्वर्गीय माता प्रसाद ताम्रकार के द्वारा उत्खनन से प्रकाश में आया। हालांकि सैकड़ों वर्ष तक जमीन में दफ़न रहने की वजह से मंदिर की ज्यादातर मूर्तियों का हिस्सा खंडित हो चुका है।

पूर्वामुखी है शिवालय -

छत्तीसगढ़ संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के सर्वे रिपोर्ट के अनुसार यह पूर्वामुखी मंदिर है, जिसका निर्माण पत्थरों से किया गया है। इस मंदिर के मंडप और गर्भ गृह दो भाग हैं। कवर्धा के फनी नागवंशी राजाओं के राज्य काल में करीब दसवीं- बारहवीं ई. सदी में इस मंदिर का निर्माण कराया गया, ऐसा पुरातत्व वेत्ताओं का मानना है । रोचक तथ्य यह है कि इस मंदिर के दोनों ओर कुंड पानी एकत्र करने के लिए बनाए गए थे, इसी पानी से स्वतः ही गर्भ गृह के जलधारी में स्थापित शिवलिंग का जलाभिषेक होता था।

सागवान वृक्षों से घिरा है टीला -

मंदिर का पूरा परिसर सागौन के वृक्षों से घिरा हुआ है। शिवलिंग में चढ़े जल के प्रवाह की दिशा उत्तर की ओर है। गर्भगृह की भित्तियां अलंकार विहीन है, केवल पश्चिम दिशा की दीवार में एक आले में गणेश जी की भव्य प्रतिमा विराजित है। घटियारी मंदिर के पास दो टीले और हैं, जिनके उत्खनन से इस मंदिर का पुरातात्विक महत्व और

सुदृढ़ होगा। सागवान वृक्षों से घिरे यह टीले अपने गर्भ में महत्वपूर्ण जानकारियाँ समेटे हुए है।

मंडप में भगवान गणेश, भैरव, महिषासुर मर्दिनी तथा अन्य खंडित प्रतिमाँ रखी हुई हैं। गर्भ गृह के अलंकृत द्वार के चौखट पर द्वारपाल और कृति मुख का अंकन है। दाएं और बाएं द्वार के चौखट पर नीचे के भाग में त्रिभंगी मुद्रा में चतुर्भुजी शैव प्रतिहार प्रदर्शित है।

इस मंदिर परिसर में प्राचीन काल में अन्य शिव मूर्तियों का भी निर्माण होता रहा है, स्थान- स्थान पर बिखरे पड़े ध्वस्त अवशेष इसके प्रमाण हैं। स्थानीय लोगों की माने तो इस मंदिर के संबंध में ज्यादा लोग नहीं जानते हैं। मंदिर पहुंचने के लिए पक्की सड़क का भी निर्माण किया गया है । उत्खनन से प्राप्त घटियारी की यह मूर्ति वर्तमान में रायपुर के गुरु घासीदास संग्रहालय में संरक्षित है।

स्त्रोत-रामप्यारी ताम्रकार (लुसू)
अनिल ताम्रकार, जितेश ताम्रकार

मिलेट मिशन (मोटे अनाज) 2023

यामिनी साहू
एम.एस-सी., रसायनशास्त्र

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से भारत द्वारा बांग्लादेश, केन्या, नेपाल, नाइजीरिया, रूस एवं सेनेगल के साथ 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर के रूप में चिन्हित करने के प्रस्ताव को स्वीकृत किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ का यह कदम वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित करने में मदद करेगा जो पोषण और पारिस्थितिक रूप से आवश्यक और लाभकारी फसलें भी मानी जाती हैं।

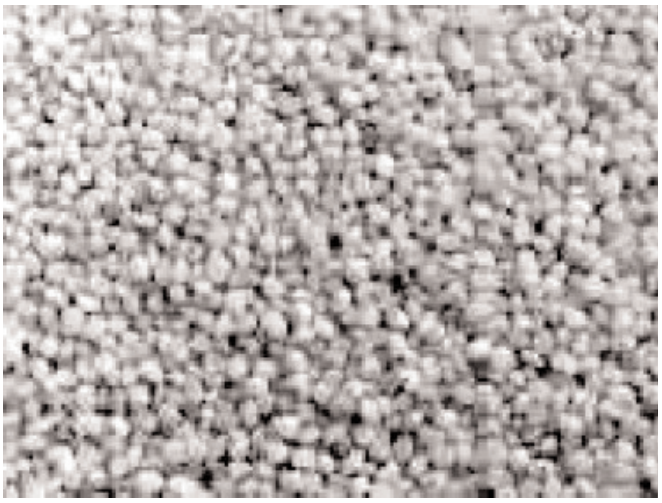

मिलेट ऐसी पारंपरिक घास या फसल है जो स्वस्थ वातावरण के अनुकूल है। खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार सूखे जैसी स्थिति में अच्छा प्रदर्शन (उत्पादन देने) वाली मानी जाती है। 'लोकल फॉर वोकल' अभियान के तहत स्वदेशी फसल मिलेट (मोटे अनाज) जैसे कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा आदि फसलों को अधिक समर्थन और इसके प्रति ध्यान देने की आवश्यकता है । इसे आगे बढ़ाने का एक स्थायी तरीका महिला किसानों एवं स्व-सहायता समूह को उन्नत पैकेजिंग तकनीक, एडवांस पैकेजिंग टेक्निक्स से लैस करके सशक्त बनाना है।

मिलेट मिशन या मिलेट रिवॉल्यूशन में आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं जैसी जमीनी कार्यकर्ताओं को शामिल किया जा सकता है।

वन एवं कृषि उपज के लिए उचित बाजार संपर्क के अभाव में मिलेट की खपत ग्रामीण हाट बाजारों पर्यटन स्थल और त्योहारों तक ही सीमित रहा है हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार ने मोटे अनाज (मिलेट) की खेती को बढ़ावा देने के लिए कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार और बाजरा के लिए मिनिमम सपोर्ट प्राइस की घोषणा की है।

छत्तीसगढ़ सरकार के मिलेट मिशन को लागू करने के लिए राज्य सरकार ने 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च' आई.आई.एम.आर. हैदराबाद और राज्य के 14 जिलों के कलेक्टरों के साथ एम. ओ. यू. समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। मिशन मैप अगले 5 वर्षों में 170 के इन्वेस्टमेंट का प्लान तैयार किया गया है। तथा दो कुटकी का एमएसपी 3000 क्विंटल निर्धारित किया गया है। हरित क्रांति से पहले मोटा अनाज बाजरा, गेहूं, मक्का और जौ प्रमुख फसलें पैदा की जाती थी। कोदो, ज्वार, बाजरा, अरहर, पटवा, तिलहन, मूंग, उड़द, का किसान संयुक्त रूप से उत्पादन करता था। यह गेहूं और मक्का के उत्पादन से अधिक था। विशेष रुप से छत्तीसगढ़ में जहाँ कम वर्षा का क्षेत्र है उन क्षेत्रों में ज्वार बाजरा की अच्छी तरह से खेती होती रही है और इसकी घरेलू खपत और स्थानीय बाजार ही इसकी खेती का मुख्य आधार हुआ करता था।

मिलेट गरीबों का खाद्य पदार्थ समझा जाता था। किसान इसका उत्पादन करते भी थे तो इस अनाज को मजदूरी के रूप में मजदूरों को दिया करते थे। इसका स्वास्थ्य लाभ की जानकारी उस समय तक ज्यादातर लोगों को नहीं थी। लाभकारी, व्यवसायिक फसलों के चलते मिलेट के उत्पादन को भुला दिया गया। इसका उत्पादन दूरस्थ आदिवासी अंचलों में ही सिमट कर रह गया था।

खाद्य पदार्थों के संबंध में वैज्ञानिक अनुसंधान तथा खोज के फलस्वरुप आज मिलेट (मोटे अनाज) के स्वास्थ्यगत लाभ की जानकारी धीरे-धीरे लोगों तक पहुंच रही है। उन्हें इस बात का पता चल रहा है कि इसमें पौष्टिकता अधिक है। यह स्वास्थ्यवर्धक है। कोदो, कुटकी, रागी जैसे फसलों की मांग बढ़ी है क्योंकि इसे शुगर के मरीजों के लिए उपयुक्त माना जाता है। बाजरे में प्रोटीन, विटामिंस, मिनरल्स अधिक होते हैं। यह नेचुरल कैल्शियम का मुख्य स्रोत है। महिलाओं तथा बच्चों में कुपोषण को दूर करने के लिए माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की कमी को इसके द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। इसके उत्पादन को बढ़ावा देने का प्रयास राज्य सरकार के द्वारा किया जा रहा है।

मिलेट (मोटे अनाज) ऐसे अनाज होते हैं जिनके लिए वाटर रिक्वायरमेंट कम होती है। मिलेट्स फार्मर फ्रेंडली भी होते हैं क्योंकि उनके उत्पादन में कम लागत आती है। यह बहु फसली खेती के रूप में की जा सकती है।

आज भी आदिवासी परिवारों में संरक्षित बीजों और पारंपरिक खेती के तरीकों का उपयोग करके मुख्य रूप से घरेलू खपत के लिए छोटी मात्रा में बाजरा की खेती की जाती है । बाजरे का उपयोग देवताओं को प्रसाद के रूप में या शुभ अवसरों पर घरों में बाजरें के दानों को लटकाने के लिए किया जाता है । किसानों और पर्यावरण दोनों के लिए बाजरा लाभदायक है। एक समय था जब महाराष्ट्र, गुजरात राजस्थान, कर्नाटक जैसे राज्यों में ऐसे मोटे अनाजों का बड़े पैमाने पर उत्पादन हुआ करता था, लेकिन लाखों कमाने के लालच में व्यवसायिक फसल की ओर आकर्षित होकर किसानों ने इनका उत्पादन कम कर दिया और मोटे अनाजों के उत्पादन का रकबा घट गया।

आज इसके तरफ फिर से ध्यान लोगों का गया है सरकारी स्तर पर भी इसके उत्पादन के संबंध में प्रयास किया जा रहा है। लेकिन इसके लिए कई मोर्चों पर सरकारी समर्थन की आवश्यकता होगी। उत्पादन बढ़ाना, घरेलू खपत को बढ़ावा देना, बाजरा के लिए लोकल मार्केट का विकास

करना, स्थानीय उचित मूल्य की दुकानों पर उपलब्ध कराना, पीडीएस में शामिल करना आवश्यक है।

भूमि सुधार (लैंड रिफॉर्म)-

खेती के उचित प्रबंधन के लिए भी मोटे अनाज का उत्पादन महत्वपूर्ण है। पहले किसान एक वर्ष खरीफ फसल के रूप में मोटे अनाज की खेती करता था, तो दूसरे वर्ष उसी खेत में रबि फसल की खेती करता था। फसल चक्र बदलते रहने से खेतों की उर्वरता भी बनी रहती थी, इस प्रक्रिया को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है। किसानों को फसल की क्षति होने की स्थिति में उचित मुआवजे और बीमा की व्यवस्था को मजबूत करना आवश्यक है।

मिलेट (मोटे अनाज) का सेवन एवं उठाव-

इसके लिए आवश्यक है स्थानीय उचित मूल्य की दुकानों, एकीकृत बाल विकास योजना के तहत संचालित आंगनबाड़ी, मध्यान्ह भोजन योजना के तहत स्कूलों और छात्रावासों के बीच लिंकेज बढ़ाना।

मिलेट (मोटे अनाज) पर शोध -

मिलेट (मोटे अनाज) पर शोध पोषण एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन, उसकी पहुँच क्षमता और और बाजार की ग्राह्यता के बारे में महत्वपूर्ण होगा। इस संबंध में शोध कार्य से निश्चित रूप से खानपान के संबंध में लोगों का ज्ञान बढ़ेगा। लोग जागरूक होंगे तो कीटनाशक तथा रासायनिक खाद का उपयोग किए गए हानिकारक खाद्य पदार्थो से अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकेंगे।

बीज उत्पादन और संरक्षण -

आदिवासी क्षेत्रों में वंशानुगत बीज संरक्षण की परंपरा चलती चली आ रही थी बीजों के मामले में आदिवासी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता थी, धीरे-धीरे अधिक उत्पादन वाले बीजों की ओर आकर्षित होने के कारण बीजों का संरक्षण कम होता चला गया और अब बीज कंपनियों तथा बाजार पर आश्रित हो गए। उनकी आत्मनिर्भरता खतरे में पड़ गई। उन्हें बीज संरक्षण की पुरानी परंपराओं को याद दिलाते हुए पुनः पारंपरिक देशी बीजों के संरक्षण के लिए प्रेरित करना होगा। इसके लिए बीज संरक्षण कार्यक्रम को एक अभियान की तरह चलाना होगा।

देश तथा विदेशों में मिलेट्स जैसे -कोदो, कुटकी, रागी, मड़िया, ज्वार और बाजरे की मांग को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि मिलेट मिशन ना सिर्फ किसानों की आमदनी को बढ़ाएगा, बल्कि राज्य को एक अलग पहचान भी देगा ।

मिलेट प्रोसेसिंग तथा वैल्यू एडेड प्रशिक्षण शिविर से स्थानीय स्तर पर महिलाओं, युवा समूहों को रोजगार मिलेगा तथा उनकी आमदनी भी बढ़ेगी। और तब वह दिन भी आयेगा जब यह कहना गलत नहीं होगा कि छत्तीसगढ़ न सिर्फ धान का कटोरा है, अपितु मिलेट (मोटे अनाज) का भी कटोरा है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ०००

व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई

तनु बघेल
बी.ए. भाग-दो

हरिशंकर परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1923 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ था। इनकी स्नातक तक की शिक्षा मध्यप्रदेश में हुई और नागपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। इसके पश्चात कुछ समय जंगल विभाग में नौकरी की। फिर इसको छोड़कर उन्होंने स्कूली शिक्षा विभाग में नौकरी की। सरकारी नौकरी में मन नहीं रमा तो नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और स्वतंत्र लेखन कार्य में जुट गए ।

अध्यापन के साथ-साथ इन्होंने साहित्य सृजन भी किया। अपनी साहित्य साधना को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इन्होंने जबलपुर में रहकर 'वसुधा' नामक पत्रिका का संपादन का कार्य भी किया। लेकिन धनाभाव के कारण या पत्रिका बंद करनी पड़ी। परसाई जी ने कई व्यंग्य, निबंध तथा कहानियों की रचना की है जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं । जैसे - बेईमानी की परत, भूत के पांव, पीछे इत्यादि उन्होंने नियमित रूप से कालम भी लिखे जैसे - सुनो भाई साधो, तुलसीदास चंदन घिसे, पूछिये परसाई से। जो पाठकों के बीच बहुत सराहा गया । इसके माध्यम से परसाई जी ने जन शिक्षण का कार्य किया। इस यशस्वी व्यंग्यकार का निधन 10 अगस्त 1995 को हो गया।

कृतियां-

निबन्ध संग्रह- विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार का ताबीज, बेईमानी की परत, तब की बात और थी ,शिकायत मुझे भी है, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, वैष्णव की फिसलन, पगडंडियों का जमाना, निठल्ले की डायरी, सुनो भाई साधो।

उपन्यास- रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज।

कहानी संग्रह- हंसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे।

परसाई जी ने अनेक समाचार पत्रों के लिए व्यंग्य के कालम लिखें । उनका देशबंधु में प्रकाशित होने वाला पूछिए 'परसाई' से कॉलम बहुत प्रसिद्ध था। जिसे पढ़ने के लिए लोग देशबंधु के रविवारी अंक की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते थे। परसाई जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम

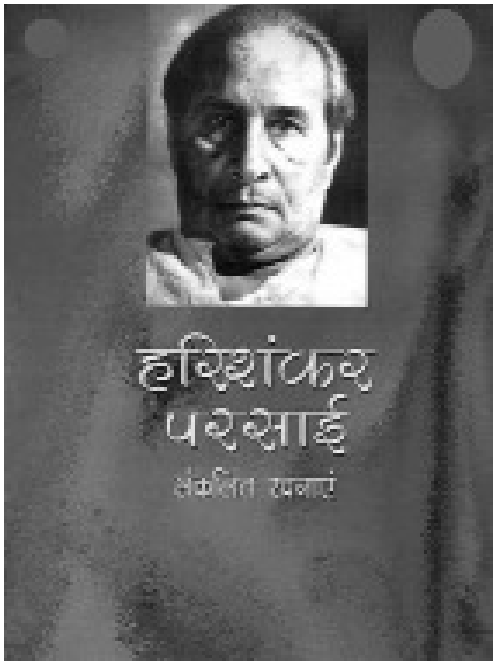

से आजादी के बाद के भारत की राजनीतिक, आर्थिक भष्ट्रचार, धार्मिक पाखंड तथा सामाजिक रूढ़ियो, अंधविश्वासों पर करारा प्रहार किया है।

सदाचार का ताबीज, बईमानी की परत, वैष्णव की फिसलन, अन्न की मौत, चूहा और मैं, गेहूँ का सुख, मातादीन चाँद पर, ठिठुरता हुआ गणतंत्र जैसी सैकड़ों व्यंग्य रचनाएँ हैं जो पाठकों को गुदगुदती हैं और लक्ष्य पर तीखे मार करती है ।

परसाई जी ने अपनी रचनाओं में पाठकों की रूचि का विशेष ध्यान रखा और उसी के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया। उनकी रचनाओं में बोलचाल के शब्दों के अलावा तत्सम, तद्भव, देशी-विदेशी सभी तरह की भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है । उन्होंने लोक मुहावरों तथा कहावतों का भरपूर प्रयोग किया है। यहां तक की व्यंग्य को धारदार बनाने के लिए मिथकों का प्रयोग भी किया है।

परसाई जी की रचनाओं की शैली में विविधता दिखाई पड़ती है। व्यंगात्मक शैली का जहां प्रयोग करते हैं उसमें व्यंग्य की धार इतनी तीक्ष्ण है कि जिसे लक्ष्य लिखा जाता है वह तिलमिला उठता है ।

इसका पता इस उदाहरण से चलता है-

''सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफान की तरह कमरे में घुसे, साइक्लोन की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गई।''

इसमें भाषा सरल है तथा छोटे-छोटे वाक्य हैं जो इसकी व्यंजना शक्ति को बढ़ा देते हैं।

परसाई जी प्रश्न का सहारा लेकर भी व्यंग्य रचते हैं। प्रश्नों की झड़ी लगा देते और इसका उत्तर भी स्वयं देते हैं। यहाँ इस शैली का एक उदाहरण देखिए - 'क' से ''क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेट कर कलेजे से लगा लिया? हरगिज़ नहीं । मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला

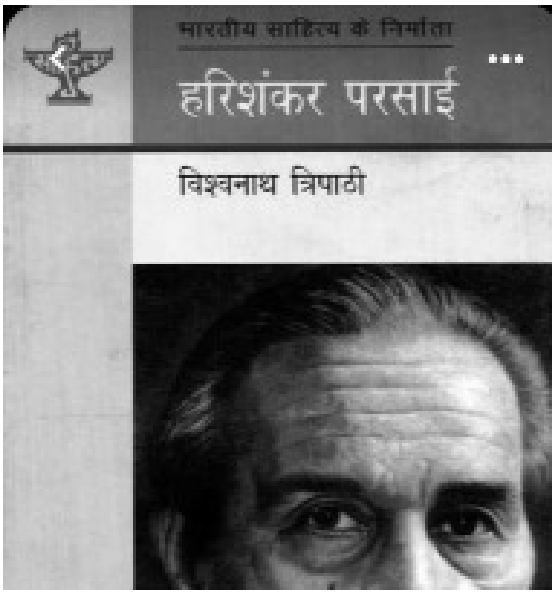

इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूं।'' अपनी व्यंग्य रचनाओं में कहीं किसी परिस्थिति का विश्लेषण, विवेचन करते हैं तो उनकी भाषा संस्कृत निष्ठ हो जाती है। ऐसा चिंतन परक निबंधों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने भी किया है। भाव और मनोविकार संबंधी उनके निबंधों में ऐसे बहुत से उदाहरण मिल जाएंगे। परसाई जी ने भाषा के स्तर पर अपनी पूर्व परंपराओं का ही अनुसरण किया है। उदाहरण देखिए-

''निंदा का उद्भव ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है।वह दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वह सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। इससे उसके अहम की तुष्टि होती है।''

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे निबंधकारों ने अपने निबंधों में सूत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है । बात पहले सूत्र रुप में कह देते हैं फिर बाद में उसकी व्याख्या करते चलते हैं। परसाई जी ने भी इस शैली का भरपूर उपयोग किया है। निबंध 'निंदा रस' का कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-

*कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं।

*ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है।

परसाई जी जहाँ जीवन के कटु यथार्थ को व्यक्त करते हैं वहां उनकी भावना प्रबल हो जाती है। उसके लिए वे बहुत भावुक होकर भावात्मक शैली में अपनी बात कहते हैं। हिंदी साहित्य में ऐसा उदाहरण विरल है।

परसाई जी अर्थाभाव, पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते दुख तथा अभावों में जीये । व्यंग्य लेखन के कारण उन पर कई वैचारिक ही नहीं, उन शारीरिक हमले भी हुए। पर अपने विचारों के प्रति किसी तरह का समझौत नहीं किया। लंबे समय तक अस्वस्थ रहते हुए भी उन्होंने विपुल मात्रा में रचनाएं की जो परसाई रचनावली के रूप में प्रकाशित है। राजनीतिक, सामाजिक, रूढ़ियों, विडंबना हो तथा सामाजिक समस्याओं पर जिस तरह से व्यंग्य किया है वह उनके व्यंग्य की मौलिकता को प्रदर्शित करते हैं। इन्हीं कारणों से एक रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में उन्हें बड़े आदर और सम्मान पूर्वक याद किया जाता है। परसाई जी की व्यंग्य रचनाओं के कारण व्यंग्य जो एक स्प्रिट है एक शैली है उसे एक विधा के रूप में स्थान प्राप्त हुआ।

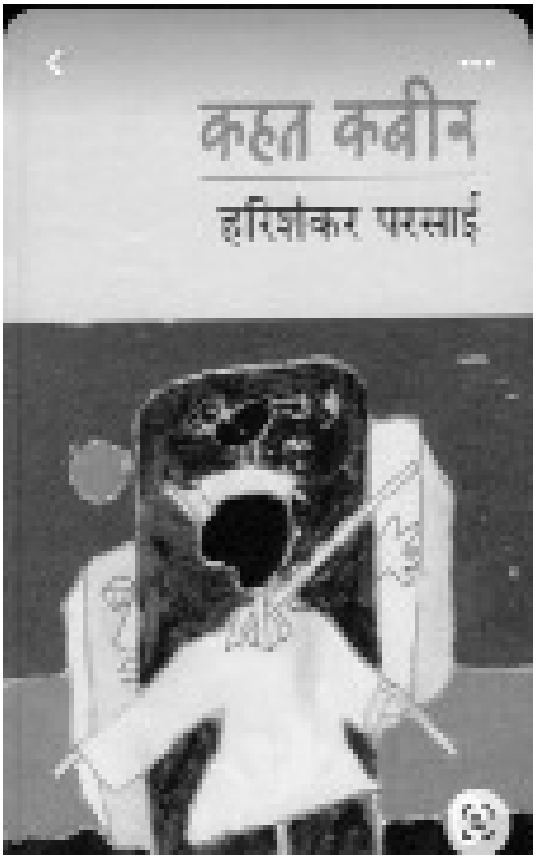

संस्कृत साहित्य की महान विभूति महाकवि कालिदास

संध्या बघेल
बी.ए. भाग - तीन

महाकवि कालिदास संस्कृत भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं । संस्कृत के कवियों में इनका नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। महाकवि कालिदास का समय अत्यंत विवादित रहा है। अनेक विद्वानों ने कालिदास के समय को उनकी कविताओं के माध्यम से बताने का प्रयास किया है किंतु उनके समय को लेकर आज भी कई मतभेद हैं। अपनी श्रेष्ठ और सुंदर रचनाओं के कारण कालिदास भारत में ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व में विख्यात है। कालिदास की नाट्य कृति 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' विश्व विख्यात है। यह कई भाषाओं में अनूदित है। इस नाटक के कारण कालिदास को भारत का शेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा कालिदास के दो और भी महत्वपूर्ण नाटक हैं - मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीय। महाकवि कालिदास की रचनाओं में भारतीय जीवन दर्शन के मूल तत्व विभिन्न रुपों में निरुपित है।

महाकवि कालिदास के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। आज भी उनके जन्म स्थान एवं काल का हमें पूर्ण रूप से पता नहीं चल पाया है। कश्मीर के विद्वान उन्हें कश्मीरी सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं तो बंगाल के बंगाली, मिथिला के विद्वान उन्हें मैथिली बताते हैं और उज्जैन के विद्वान उन्हें उज्जैन निवासी घोषित करते हैं । इन विवादों के कारण जिनका मत एक समान है उसे ही मान लिया गया है। अतः कालिदास को उज्जैनी का माना जाता है।

कहा जाता है कि महाकवि कालिदास का विवाह विद्योत्तमा नाम की खुबसूरत एवं कला प्रवीण राजकुमारी से छल पूर्वक करा दिया गया। राजकुमारी विद्योत्तमा को इस बात का पता नहीं था कि कालिदास मूर्ख है। विवाह उपरांत उन्हें इस बात का पता चला तब राजकुमारी में कालिदास को

अपमानित करके घर से निकाल दिया। अपमानित कालिदास ने यह प्रण किया कि वह विद्वान बनकर ही घर वापस लौटेगा। कहते हैं कि कालिदास देवी कालिका के भक्त थे, जिनकी आराधना कर कालिदास ने विद्या प्राप्त की तथा विद्या प्राप्त करके विश्व के महान कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। विद्या धन प्राप्त करने के पश्चात महाकवि कालिदास वापस घर लौटे और विद्योतमा ने कालिदास को फिर से स्वीकार कर लिया।

महाकवि कालिदास कालि के भक्त थे इसलिए उनका नाम कालिदास रखा गया। इस तरह कालि के भक्त कालिदास नाम से प्रसिद्ध हुए।

कालिदास का काल खंड भी अत्यंत विवादित रहा है।अनेक विद्वानों ने अपने मतानुसार अपने-अपने ढंग से उनके समय को निर्धारित करने का प्रयास किया है। जिसमें प्रथम मत के मानने वाले उन्हें ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी के विदिशा नरेश अग्निमिशुंङ्ग का समकालीन और उसके

आश्रित कवि के रूप में स्वीकार करते हैं। अग्नि मित्र शुंग वंश के राजा थे जिनका समय प्रायः द्वितीय सती ईसवी पूर्व माना जाता है। कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् में इन्हें नायक ही नहीं बनाया है, अपितु भरत- वाक्य में भी इनके नाम का उगेख किया है । परंतु कालिदास के अन्य ग्रंथों से स्पष्ट है कि उन्हें जो आसक्ति उज्जैनी से थी वह विदिशा से नहीं थी। विदिशा और उज्जैनी के संबंध में आए वर्णन से यह बात स्पष्ट हो जाती है। दूसरे वर्ग के विद्वानों के मतानुसार कालिदास गुप्त काल के विभूति हैं। कीथ महोदय के अनुसार शकों को भारत से बाहर करने वाले, विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाले तथा पूर्व के मालव संवत को विक्रम संवत के नाम से प्रचारित करने वाले द्वितीय गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (375 से 423) थे। इन्हीं के समय कालिदास ने अपनी कीर्ति का विस्तार किया था। कहा जाता है कि विक्रमादित्य कालिदास की रचनाओं से इतना अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने कालिदास को अपने नवरत्नों में शामिल कर लिया था । अर्थात् कालिदास श्रेष्ठ कवि तो थे ही साथ में विक्रमादित्य के नवरत्नों में से भी एक थ। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि कालिदास उज्जैनी के राजा विक्रमादित्य के आश्रित कवि थे। कालिदास ने विक्रमोर्वशी में नायक पुरूरवा के स्थान पर विक्रम नाम 'विक्रमादित्य' के ही स्मरण में रखा है इसी ग्रंथ में उनके पिता नरेंद्र आदित्य के स्तु-त्यार्थ उन्होंने इंद्र शब्द के लिए महेंद्र शब्द का प्रयोग किया है। कहा तो यह भी जाता है कि कालिदास कभी शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं करते थे किंतु विक्रमोर्वशीय के प्रथम अंक में ही 6 बार महेंद्र शब्द आया है।

तीसरे वर्ग के विद्वान वह हैं जो कालिदास को छठी शताब्दी का मानते हैं फर्गुसन महोदय का मत है कि, ''उज्जैनी के राजा हर्ष विक्रमादित्य ने 544 ईस्वी में शकों को कहकरे की लड़ाई में हराया । इसी उपलक्ष्य में विक्रम संवत चलाया। इस संवाद को प्राचीन और चिर स्मरणीय बनाने हेतु उन्होंने इसे 600 वर्ष आगे चलाकर उसका आरंभ माना । अतः इस मतानुसार कालिदास का समय छठी शताब्दी होना चाहिए।''

छठी सदी के वाराहमिहिर ने वर्षा त्रतु का प्रारंभ आषाढ़ से माना है और कालिदास ने भी मेघदूतम में आषाढ़ से ही वर्षा त्रतु का आरंभ माना है । कालिदास ने मेघदूत में 'निचुल' और 'ढिंड्नाग' शब्दों का प्रयोग किया है। ढिंड्नाथ का काल छठी शती से है। अतः कालिदास उनके समकालीन होंगे।

महाकवि कालिदास की रचनाएं-

महाकवि कालिदास संस्कृत वांग्मय को कई ऐसी कृतियाँ दी हैं जो विश्व में प्रसिद्ध है। कालिदास की रचनाओं में मुख्य रूप से उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है जो महाकवि कालिदास की रचनाओं के काव्य सौंदर्य को और भी अधिक बढ़ा देती है। कालिदास की रचनाओं में उपमा अलंकार के आधिक्य होने के कारण 'उपमा कालिदासस' भी कहा जाता है।

कालिदास की रचनाओं में अलंकार छंद का इस प्रकार संयोजन किया गया है कि यह कालिदास की कृतियों को अति सुंदर बना देती हैं।

उज्जैयिनी नरेश महाराज विक्रमादित्य की सभा को अलंकृत करने वाले कालिदास के नाम लिखित 6 ग्रंथों को विद्वानों ने कालिदास रचित माना है-

1- रघुवंश
2- कुमारसंभव
3- मेघदूत

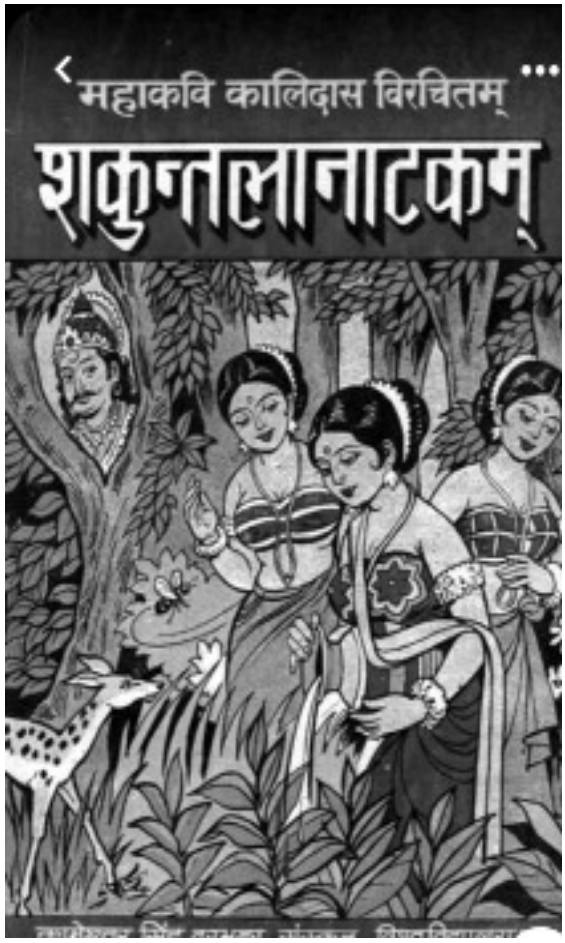

4- मालविकाग्निमित्रम्

5- विक्रमोर्वशीय और

6- अभिज्ञान शाकुन्तलम्

सातवां ग्रंथ ऋतु-संहार है। जिसके बारे में विद्वानों में मतभेद है। विद्वान इसे प्रौढ़ कृति ना होने के कारण कालिदास कृत नहीं मानते हैं। और कुछ इसे कालिदास के अपरिपक्व अवस्था में प्रणीत मानते हुए इसे कालिदास की ही कृति मानते हैं।

कालिदास की कृतियों को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है-

1-काव्य-ऋतुसंहार, कुमार संभव, मेघदूत और रघुवंश।

2-नाटक- मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञान शकुंतलम् ।

कालिदास के ग्रंथों को दो भागों में विभक्त किया गया है ।

काव्य ग्रंथ -

1. ऋतुसंहार - ऋतुसंहार महाकवि कालिदास की प्रथम रचना है इसके संबंध में विद्वानों का कहना है कि शायद कालिदास ने इसी गीतिकाव्य से अपनी काव्य राचना का प्रारंभ किया होगा। ऋतुसंहार में प्रकृति के मनोहर रूपों का हृदयग्राही चित्रण है। यहाँ कवि ने विप्रलंभ श्रृंगार को प्रधानता दी है। इसमें ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और बसंत ऋतु का सुंदर और स्वाभाविक वर्णन किया है । कुछ विद्वान इसे कालिदास की कृति नहीं मानते क्योंकि इसमें कालिदास जैसी शिल्पगत रमणीयता, हार्दिकता तथा लालित्य का अभाव है। परंतु अधिकांश विद्वान इसे कालिदास की रचना ही स्वीकार करते हैं।

2. कुमारसंभव –

यह कालिदास की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा को प्रकट करती है । इसमें 17 सर्गों में से प्रारंभ के आठ सर्ग कालिदास के माने जाते हैं। बाकी सर्गों के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। विद्वानों का कथन है कि बाकी के सर्ग कालिदास के नहीं हैं।

3. मेघदूत–

मेघदूत एक गीतिकाव्य है। इसमें प्रिय के वियोग से व्यथित यक्ष मेघ के द्वारा प्रियतमा के पास अपना संदेश भेजता है। कवि ने पूर्व मेघ में रामगिरी से लेकर अलकापुरी तक के मार्ग की प्राकृतिक सुषमा का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है। उत्तर मेघ में मानव मन के

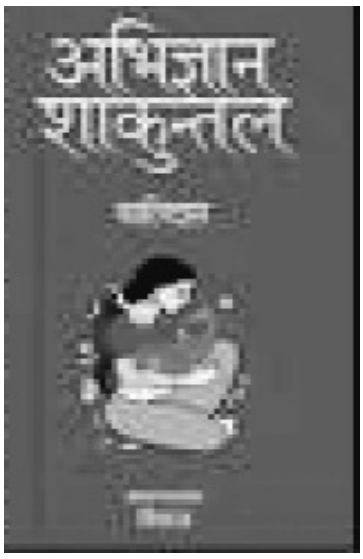

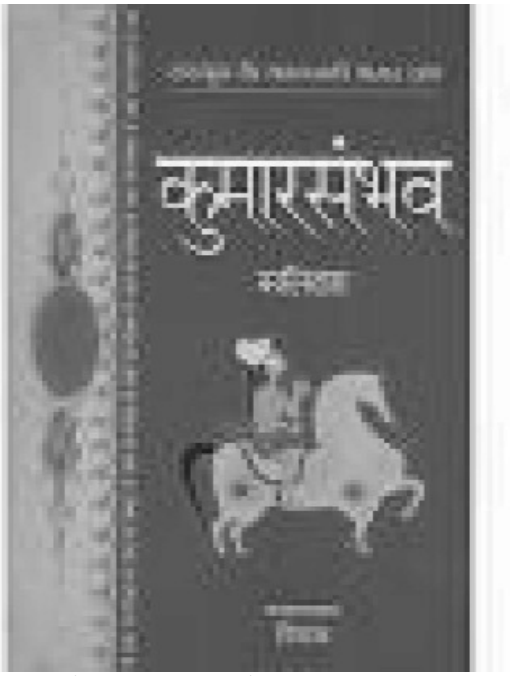

नैसर्गिक सौन्दर्य का चित्रण है। युवतियों का स्वाभाविक व्यापार यहां सुंदर बन पड़ा है -अलकापुरी की ललनाएं हाथ में नील कमल लिए हुए हैं, अपनी वेणियों में नवीन खिले हुए कुंदकुसुम को लगाए हुए हैं, अपने मुख श्री को लोध्रपुष्पों के पराग से द्युतियुक्त कर रखीं हैं। अपने केश पाश में नव कुरवक के पुष्प लगाती हैं। शिरीष के फूल को कर्ण में तथा कदंब कुसुम को सीमांत पर शीर्ष फूल की तरह सजाती हैं। इस प्रकार यक्षिणियों का सौन्दर्य वर्णित है। इस खंडकाव्य की 50 से अधिक टीकाएँ लिखी जा चुकी है जो इसके महत्व को प्रतिपादित करती है।

4. रघुवंश –

रघुवंश कालिदास का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसके 19 सर्गों में अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं- दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक का वर्णन किया गया है। दिलीप द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए नंदिनी गाय की सेवा, रघु का जन्म और उनके द्वारा विश्वजीत यज्ञ का अनुष्ठान, वरतंतु कौत्स का कुबेर के खजाने से धनला कर देना, रघु से अज का जन्म विदिशा कुमारी इंदुमती के साथ उनका विवाह, अज से राजा दशरथ का जन्म आदि 9 सर्गों में वर्णित है। 10 से 15 सर्गों तक रामचरित और अंत के सर्गों में विभिन्न राजाओं का साधारण वर्णन है।

राजा अग्निवर्ण से काव्य का समापन हुआ है। इस महाकाव्य के माध्यम से कवि ने समाज को यही संदेश दिया है कि जिस सूर्यवंश के प्रतापी राजा स्वर्ग तक जाया करते थे उसी वंश का एक उत्तराधिकारी अपने विषय वासनाओं में फंस कर इतना नीचे गिर जाता है। कवि यहाँ कहना चाहता है कि मनुष्य को विषय वासनाओं से दूर रहना चाहिए। इस ग्रंथ की 40 से अधिक टिकाएँ इसके महत्व को प्रदर्शित करती है।

2 – नाट्य ग्रंथ–

महाकवि कालिदास कवि के साथ-साथ एक सफल नाटककार भी थे । उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण नाटकों की रचना भी है-

1. **मालविकाग्निमित्रम्** - मालविकाग्निमित्रम् कालिदास

का प्रथम नाटक माना जाता है ।5 अंकों के इस नाटक में मालव देश की राजकुमारी मालविका तथा विदिशा के राजा अग्निमित्र का प्रेम और उनके विवाह का वर्णन है। राज महलों में चलने वाले प्रणय, षड्यंत्रों का उन्मूलक है। इस नाटक का समग्र सूत्रधार विदूषक है। यह एक शृंगार रस प्रधान नाटक है इसे कालिदास की प्रथम नाट्य कृति माना जाता है। क्योंकि इसमें लालित्य तथा माधुर्य तथा भाव गांभीर्य दृष्टिगोचर नहीं होता जो इसके बाद के नाटकों विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञान शाकुंतलम् में है।

2. विक्रमोर्वशीय –

इस नाटक में कालिदास ने वैदिक प्रेमाख्यान को प्रदर्शित किया है। इसमें राजा पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी की प्रेम कहानी है। यह नाटक 5 अंकों में विभक्त है। शिल्प की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

3. अभिज्ञान शाकुंतलम् –

अभिज्ञान शाकुंतलम् कालिदास की विश्व विख्यात कृति है। इसमें राजा दुष्यंत और शकुंतला की प्रेम गाथा का वर्णन किया गया है। नाटक में दुष्यंत - शकुंतला का प्रेम, मिलन, ऋषि दुर्वासा द्वारा शकुंतला को श्राप एवं दोनों के विरह तथा पुनर्मिलन का सुंदर चित्रण किया गया है। इसमें कालिदास जी ने प्रकृति का मनोहारी रूप प्रस्तुत किया है। इस नाटक का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। यह नाटक विश्व प्रसिद्ध नाटकों में गिना जाता है । इसी नाटक के कारण कालिदास को संस्कृत नाटकों का शेक्सपियर कहा जाता है। इस नाटक में छंद विधान, अलंकार, रस आदि का परिपाक इतना सुंदर बन पड़ा है कि यह पाठकों का मन मोह लेता है। अंको में विभाजित इस नाटक में महाकवि कालिदास ने श्रृंगार रस को प्रधानता दी है जिसमें श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का मार्मिक चित्रण हुआ है।

कालिदास : काव्य एवं नाट्य कला –

कालिदास ने प्रकृति मनोहारी रूप चित्रित किया है।

उनके प्रकृति वर्णन की सबसे बड़ी विशेषता है, प्रकृति में चेतना और मानवीकरण का आरोपण कालिदास ने अपनी अलौकिक कल्पना और प्रतिभा द्वारा प्रकृति की जड़ता समाप्त कर उसमें भाव प्रवणता, गतिशीलता तथा चेतनता का संचार किया है। कालिदास प्रकृति के प्रति मनुष्य के प्रेम को चित्रित करते हुए मनुष्य के प्रति प्रकृति के प्रेम को चित्रित करने लग जाते हैं।

दार्शनिक मान्यताओं के तहत भले ही प्रकृति को जड़ तथा आत्माहीन पदार्थ के रुप में देखा जाता रहा है। परन्तु कालिदास की सूक्ष्म दृष्टि प्रकृति के भीतर सहानुभूति और सुख-दुख की स्थिति में संवेदना का अनुभव कराती है। महाकवि कालिदास के काव्य तथा नाटक दोनों में ही प्रकृति के सौंदर्य का अद्भुत चित्रण है।

काव्य सौन्दर्य - कालिदास ने अपनी रचनाओं में रस अलंकार और छंदों का प्रयोग जिस तरह से किया है उससे उनके काव्य का सौन्दर्य और भी अधिक बढ़ गया है। कवि कालिदास अपनी कृतियों में विशेषकर उपमा अलंकार का प्रयोग किया है। उपमा का विशेष रूप से प्रयोग होने के कारण वे 'उपमा कालिदासस्य' भी कहे जाते हैं।

सौन्दर्य प्रेम उनके काव्य में चमत्कार पैदा करते हैं। कवि अपनी प्रतिभा के बल से विभिन्न अलंकारों की सृष्टि करते

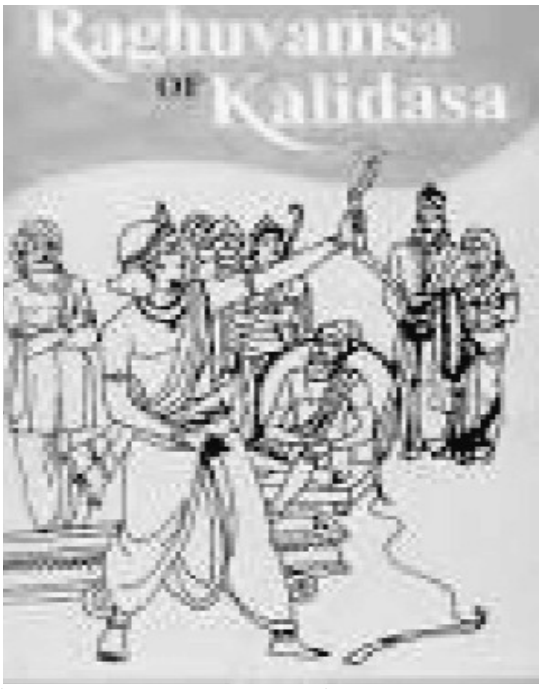

हैं। कालिदास अपने सभी काव्य और नाटकों में - भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों का सुंदर समन्वय करते हैं । उनके नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् के चतुर्थ अंक में शकुंतला की विदाई के समय ऋषि कण्व की मनोदशाका मर्मस्पर्शी चित्रण करते हैं तो उनके विदाई में प्रकृति और पशु पक्षी भी विषाद का अनुभव करते हैं। उदाहरण-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं सम्पृष्टमुत्कण्ठया
कंठः स्तम्भितदास्यवृत्तिकलुषश्चिंत जडं दर्शनम्
वैक्लव्यं मम तावदीदृश्यमिदं स्त्रेहारण्यौकसः ।
पीड्यन्ते गृहिणः कथं तनयाविश्वषदुः खैर्नर्वैः।।

इस श्लोक में यह कहकर कि गृही लोग जब वधु को तरह-तरह से पीड़ित करते हैं तो कन्या के विश्लेष का दुख क्यों न हो?

कालिदास को प्रकृति और मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत कवि माने जाते हैं। उन्होंने प्रकृति को सजीव व सुन्दर वर्णन किया है। उनके काव्य में प्रकृति भी मनुष्य की भांति दुख में सहानुभूति करते दिखाई पड़ती है। यहाँ कवि प्रकृति के माध्यम से हमें शिक्षा देते हैं। सूर्य, वायु और शेषनाग सदा अपने कर्तव्य में लगे रहते हैं वैसे ही राजा को भी कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए।

कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम् के पंचम अंक के इस श्लोक में इसी भावना के अभिव्यक्ति हुई है-

भानुःसकृद्यक्ततुरंग एवं रात्रिन्दिवं गंधवहः प्रयाति।
शेषः सदैवाहितभूमिभारः षष्णांशवृत्तेरपि धर्म एणः।।

उपर्युक्त श्लोक में कवि ने बताया है कि राजाओं को सदैव कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। अपने काव्य में कालिदास ने अलौकिक तत्वों का बहुत सुंदर सन्निवेश किया है। कालिदास की पर्यवेक्षण शक्ति अप्रतिम है वह प्रकृति के बाह्य रूप तक सीमित न रहकर उसके भीतर तक पहुंचकर अनुभूत सत्य को प्रकट करते दिखाई देते हैं और उसे संपूर्ण सौंदर्यात्मक कौशल के साथ चित्रण करते हैं। यह पाठक के लिए हृदयग्राही बन पड़ा है।

भाषा –

बड़े लेखक या कवि अपने अभिव्यक्ति के लिए व्याकरणिक नियमों का अतिक्रमण भी करते हैं, कालिदास भी इसके अपवाद नहीं है। उनके अधिकांश उदाहरणों में या किसी न किसी उक्ति में इसका अपवाद देखा जा सकता है। अन्य स्थलों पर इतिहास काव्य परम्परा के प्रभाव परिलक्षित होता है और भी स्पष्ट है। कालिदास की भाषा सरज, सरल और मनोरम है। कालिदास अपनी भाषिक कौशल से भावों को चित्र रूप में उपस्थित कर देते हैं। अभिज्ञान शाकुंतलम् का यह श्लोक इसका अनुपम उदाहरण है-

इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तयः क्षमं साधयितुं य इच्छति ।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया रमीलतां छेतृमृषिव्यर्र्वस्यति।।

इस श्लोक में भाषा अत्यंत सुंदर तथा अपने प्राकृत रूप में उपस्थित हुआ है। कालिदास की समस्त कृतियों में भाषागत सौष्ठव विद्यमान है। भावों को वे जिस सुंदरता व कल्पनाशीलता के साथ उपस्थित करते हैं वह अप्रतिम है।

शैली-शिल्प-

कालिदास की रचनाएं शिल्प की दृष्टि से अनुपम हैं। उनके काव्य में जो लालित्य है वह मनोहारी है। कालिदास अपने काव्य में वैदर्भी रीति का प्रयोग करते हैं। वे इसके सिद्धहस्त लेखक हैं। इसीलिए उनके बारे में यह कहा भी गया

है -

'वैदर्भीरीतिसंदर्भे कालिदासो विशिष्यते।'

ललित पद विन्यास के साथ माधुर्य से युक्त समास रहित या समास युक्त रचना वैदर्भी कहलाती है। कालिदास की रचनाओं में बड़े-बड़े सामासिक पदों का अभाव है। यह भाषा के स्वाभाविक प्रवाह को मधुर तथा विशिष्ट बनाता है। जहां उनकी रचना में समास आए हैं वहां भी समासों के कारण पद लालित्य में किसी प्रकार की कमी नहीं दिखाई पड़ती है, बल्कि उसमें उसकी अभिवृद्धि ही हुई है।

कालिदास की भाषा ध्वन्यात्मक है। वे किसी बात को शब्दों में कहने के बजाय व्यंजनावृत्ति का सहारा लेते हैं। यह शैली उनके नाटकों में भी देखी जा सकती है।

'अनाघ्रान्त पुष्पं' के द्वारा शकुंतला के कन्या भाव एवं दुष्यंत द्वारा ग्रहण के योग्य होने की ध्वनि इसी शैली को सूचित करते हैं। कालिदास ने जनसाधारण को ध्यान में रखते हुए संस्कृत के साथ ही प्राकृत का भी यथा स्थान प्रयोग किया है। इसमें महाराष्ट्री प्राकृत को सर्वोत्तम प्राकृत माना गया है। उनके परवर्ती नाटकों में तथा कृतियों में इसका प्रयोग हम देख सकते हैं। जहां गद्य की उक्तियां है उसके लिए वे शौरसेनी का प्रयोग करते हैं तो पद्य रचनाओं के लिए महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग करते हैं। उनके नाटक का जो रुप उपलब्ध है उसमें राजा प्रायः शौरसेनी का प्रयोग करते हैं।

अलंकार प्रयोजन – काव्य शास्त्रियों ने कालिदास की उपमाओं की भूरी भूरी प्रशंसा की है। उन्होंने उनके शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों के प्रयोग संबंधी निपुणता से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। उदाहरणों में विविधता है। कालिदास की स्वभावोक्ति निबन्धना अत्यंत श्रेष्ठ हैं। दुष्यंत जिस मृग का पीछा करते हुए तपोवन तक आए हैं उस मृग का चित्रण इसका सुन्दर उदाहरण है।

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुवपति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा युर्वकायम्
दर्भैरर्धावलाढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकभुर्व्या प्रयाति।।

उसकी दृष्टि रथ पर लगी हुई है वह गर्दन में मोड़ता हुआ बार-बार चौकड़ी भरता है, बाण लगने के भय से अपने शरीर के पिछले भाग को अगले भाग में समेट लेता है। आधी चबायी हुई घास को थकावट के कारण खुले मुख से बिखेर कर मार्ग को व्याप्त कर रहा है। वह इतनी ऊँची चौकड़ी भरता है कि पृथ्वी की अपेक्षा आकाश में दौड़ता अधिक प्रतीत होता है।

छंद विधान तथा रस व्यंजना –

कालिदास के काव्य तथा नाटकों में छंदविधान तथा रस नियोजन देखते बनता है। इससे उनके नाटकों और काव्यों की सुंदरता और भी बढ़ जाती है । अभिज्ञान शाकुंतलम् में प्रयुक्त शब्दों में विविधता है लेकिन उनमें आर्या छंद की अधिकता है जो अपने सापेक्ष स्थिति को बनाए हुए हैं। इसके बाद वसंततिलका और शार्दुलविक्रीड़ित छंद की आवृत्ति हुई है। इन जटिल छंदों के प्रयोग से यह ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास छंद शास्त्र में निपुण थे। महाकवि कालिदास की प्रतिभा उनके छंद एवं रस प्रयोजन से प्रकट होती है। अभिज्ञान शाकुंतलम् के श्लोक में छंद विधान की एक बानगी देखिए -

स्निग्धं वीक्षितमन्यतोअपि मयने यत् प्रेरयन्त्या।
तया यातं यज्च नितम्बयोर्गुरुतया मंद विलासासादिव।।
भा गा इत्युपरूद्धया यदपि तत्सासूयमुक्ता सखो
सर्वे तत् किल मत्यरायणमहो कामी स्वतां पश्यति।।

उपर्युक्त श्लोक में शार्दूल विकृत छंद का प्रयोग बहुत सुंदर बन पड़ा है।

000

शंकर शैलेन्द्र की तीन कविताएं

कवि तुम किनके? कविता किसकी?

कवि तुम किनके? कविता किसकी?
जिनके सीने में सुईयों सा गड़ता है दर्द
विवशता का,
जिनके घर में घुस बैठा है अंधा राक्षस
परवशता का,
जो दुनिया भर का बोझ उठाए रंजोगम से लड़ते हैं
जो अपनी राहें आप बना पर्वत की चोटी चढ़ते हैं,
कवि उनका है,
कविता उनकी।
जिनकी दो खाली जेबें जब दुकान - हाट पर जाती हैं,
तोल माल का देख दूर से आहें भर रह जाती हैं।
पर जिनके कड़ियल सीने में है राजों के राजों-सा दिल,
इस आसमान के नीचे ही जुड़ जाती हैं
जिनकी महफिल ...
कवि उनका है,
कविता उनकी ।

पूछ रहे हो क्या अभाव है

पूछ रहे हो क्या अभाव है
तन है केवल प्राण कहाँ है?

डूबा-डूबा सा अन्तर है
यह बिखरी सी अब लहर है,
अस्फुट मेरे स्वर हैं लेकिन
मेरे जीवन के मान कहां है?

मेरी अभिलाषाएं अनगित
मेरी अभिलाषाएं अनगित
पूरी होगी? यही हैं कठिन
जो खुद ही पूरी हो जाएं
ऐसे मेरे अरमान कहाँ हैं?

लाख परायों से परिचित है
मेल - मोहब्बत का अभिनय है,
जिनके बिन जग सूना सूना
मन के वे मेहमान कहाँ हैं?

कल हमारा है -

ग़म की बदली में चमकता एक सितारा है

आज अपना हो न हो, पर कल हमारा है

धमकी गैरों की नहीं अपना सहारा है

आज अपना हो न हो, पर कल हमारा है।

ग़र्दिशों से हारकर ओ बैठने वाले

तुमको खबर क्या अपने पैरों में भी छाले हैं

पर नहीं रुकते कि मंजिल ने पुकारा है

आज अपना हो न हो, पर कल हमारा है।

ये कदम ऐसे जो सागर पाट देते हैं

ये वो धाराएं हैं जो पर्वत काट देते हैं

स्वर्ग उन हाथों ने धरती पर उतारा है

आज अपना हो न हो, पर कल हमारा है।

सच है डूबा सा है दिल जब तक अंधेरा हैं

इस रात के उस पार लेकिन फिर सबेरा है।

हर समंदर का कहीं पर किनारा है

आज अपना हो न हो, पर कल हमारा है।

2022-23 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है । उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है। हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है । इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं ।

रांगेय राघव

(17 जनवरी 1923 - 12 सितंबर 1962)

रांगेय राघव का जन्म उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के वैर गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम तिरूमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य था। उन्होंने अपना साहित्यिक नाम 'रांगेय राघव' रखा। उनके पिता का नाम रंगाचार्य और माता कनकवल्ली थी। वह मूल रूप से तमिल भाषी थे, लेकिन उन्होंने संपूर्ण साहित्य हिंदी मे रचा। उनकी शिक्षा आगरा के सेंट जोंस कॉलेज और आगरा कॉलेज से हुई। उन्होंने शांति निकेतन में रहकर 'गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर पीएचडी की। रांगेय राघव हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। उन्होंन बहुत कम उम्र पाई लेकिन इस कम समय में भी वे अपने लेखन से कालजयी हो गए। 1942 में बंगाल के अकाल पर लिखी उनकी रिपोर्ट 'तूफानों के बीच' काफी चर्चित रही।1946में प्रकाशित 'घरौंदा' उपन्यास के जरिए वे देश भर में चर्चित हुए। उनकी 'गदल' कहानी हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। उन्होंने अंग्रेज़ी,जर्मन और फ्रांसीसी के कई साहित्यकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया। उन्हें 'हिंदी के शेक्सपीयर' भी कहा जाता था।

प्रमुख कृतियां :- उपन्यासः घरौंदा, कब तक पुकारूँ, पक्षी और आकाश,विषाद मठ,मुरदों का टीला, सीधा-साधा रास्ता,मेरी भव बाधा हरो, धरती मेरा घर,आग की प्यास, भारती का सपूत, आँधी की नावें आदि।

कहानी संग्रह : साम्राज्य का वैभव, देवदासी, समुद्र के फेन,अधूरी मूरत,जीवन के दाने, अंगारे न बुझे, ऐयाश मुरदे, इन्सान पैदा हुआ,एक छोड़ एक आदि काव्यः अजेय, पिघलते पत्थर, मेधावी, राह के दीपक, पांचाली, रूपछाया आदि ।

रिपोर्ताज : तूफ़ानों के बीच,

नाटक : स्वर्णभूमि की यात्रा,रामानुज,विरूढ़क आदि आलोचना : गोरखनाथ और उनका युग, भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका, प्रगतिशील साहित्य के मानदंड, भारतीय संत परंपरा और समाज,संगम और संघर्ष, प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास, समीक्षा और आदर्श,काव्य यथार्थ और प्रगति, काव्य कला और शास्त्र, महाकाव्य विवेचन, तुलसी का कला शिल्प, आधुनिक हिंदी, कविता में प्रेम और शृंगार, आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली, आदि । उन्होंने डेढ़ सौ से ज्यादा किताबें लिखीं।

सम्मान : हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (1951), डालमिया पुरस्कार (1954), उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार (1957 व 1959), राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार (1961) तथा मरणोपरांत (1966) महात्मा गांधी पुरस्कार से सम्मानित।

हरिशंकर परसाई

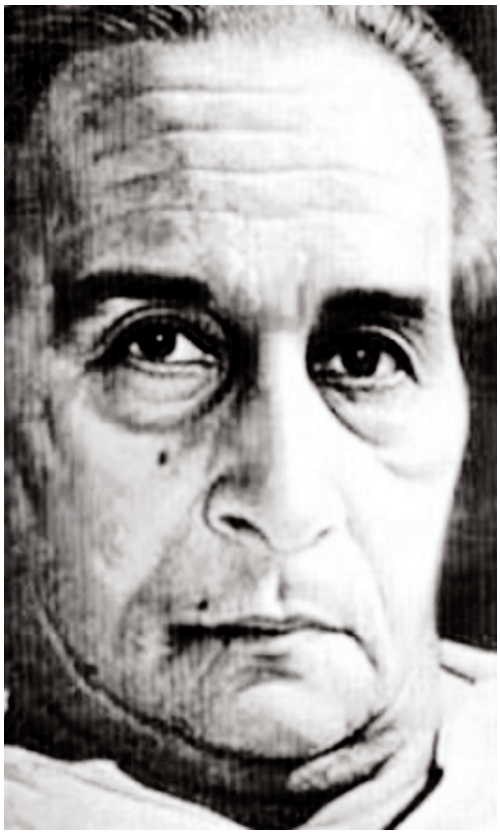

22 अगस्त 1923 - 10 अगस्त 1995

व्यंग्य के हस्ताक्षर कहे जाने वाले हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गांव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा अपने ही गांव में हुई। उच्च शिक्षा के लिए नागपुर गए जहां उन्होंने हिन्दी में एम.ए. और डिप्लोमा इन टीचिंग की उपाधि हासिल की 1953 से 1957 तक अध्यापन किया जिसके दौरान जीवन के विविधता पूर्ण अनुभव ने उनके लेखन को सामाजिक आधार दिया। वे लगातार शिक्षक संघ की गतिविधियों से भी जुडे रहे। बाद में नौकरी करने के बजाय लेखक बनकर जीवनयापन करने का निर्णय किया । हिंदी में लेखन के आधार पर आजीविका चलाना आसान काम नहीं है लेकिन परसाई जी जीवन पर्यंत अपने निश्चय पर अडिग रहे। उन्होंने जबलपुर से वसुधा नाम की साहित्यिक मासिक पत्रिका का संपादन किया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में वर्षों तक उन्होंने स्तंभ लेखन किया।

1982 में 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए उन्हें केंद्रीय साहित्य अकादमी सम्मान व कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। परसाई जी कई क्षेत्रों में लगातार सक्रिय रहे। वह मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के समय से ही अध्यक्ष मंडल के अध्यक्ष रहे व मजदूर आंदोलन से जुड़े रहे।

हरिशंकर परसाई लगभग पांच दशकों तक साहित्य लेखन में सक्रिय रूप से जुडे रहे। हरिशंकर परसाई जी के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने कहानी और निबंध की विधा को निरंतर तोड़ा है। उनके लेखक का केंद्रीय तत्व है व्यंग्य। व्यंग्य को आमतौर पर लेखन की शैली माना जाता रहा है, लेकिन परसाई जी ने उसे स्वतंत्र विधा का रूप दे दिया।

परसाई जी का संपूर्ण लेखन छह खंडों में परसाई रचनावाली में संकलित है।

कहानी संग्रह : 'हंसते हैं रोते हैं', जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव।

उपन्यासः रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज।

निबंध संग्रहः तब की बात और थी, भूत के पांव पीछे, बेईमानी की परत, पगडंडियों का जमाना, सदाचार का ताबीज, शिकायत मुझे भी है, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर।

अन्य विधाएं: निठल्ले की डायरी, तिरछी रेखाएं, एक लड़की पांच दीवारें, बोलती रेखाएं, माटी कहे पुकार से , पाखंड का आध्यात्म तथा सुनो भाई साधो।

सम्मान - 1982 में 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए साहित्य अकादमी सम्मान।

शंकर शैलेन्द्र

30 अगस्त, 1923- 14 दिसंबर 1966

साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित शैलेंद्र का जन्म रावलपिंडी में हुआ था । उनका असली नाम शंकर दास केसरीलाल था। आर्थिक हालात खराब होने के चलते उनका परिवार रावलपिंडी छोड़कर मथुरा चला आया। शैलेंद्र का बचपन मथुरा में ही बीता और स्कूली शिक्षा मथुरा के सरकारी स्कूल से हुई। उन्होंने इंटर तक की पढ़ाई वहीं के राजकीय इंटर कॉलेज से की। ये हिंदी सिनेमा जगत के प्रमुख गीतकार के रूप में अपनी विशेष पहचान रखते हैं। उन्होंने कई प्रसिद्ध फिल्मी गीतों की रचना की। उनके गीतों में जनवादी स्वर प्रमुखता से उभरते रहे हैं। गीतकार शैलेंद्र को टाइटल सॉन्ग का निर्माता भी कहा जाता है।

1948 में फिल्म 'बरसात' से बतौर गीतकार अपने करियर की शुरुआत करने वाले शैलेंद्र ने अनेक ऐसे गीत लिखे, जो आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। उन्होंने लगभग 800 गीत लिखे । शैलेंद्र को हिंदी सिनेमा का आज तक का सबसे बड़ा गीतकार कहा जाता है। उनके गीतों को खुरच कर देखें तो आपको सतह के नीचे दबे नए अर्थ प्राप्त होंगे। उनके एक ही गीत में न जाने कितने गहरे अर्थ छिपे होते थे।

वे1962 में फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचना पर फिल्म 'तीसरी कसम' के निर्माता बने । इस फिल्म को बनने में लगभग चार साल लग गए। इतने लम्बे कार्यकाल तक चली

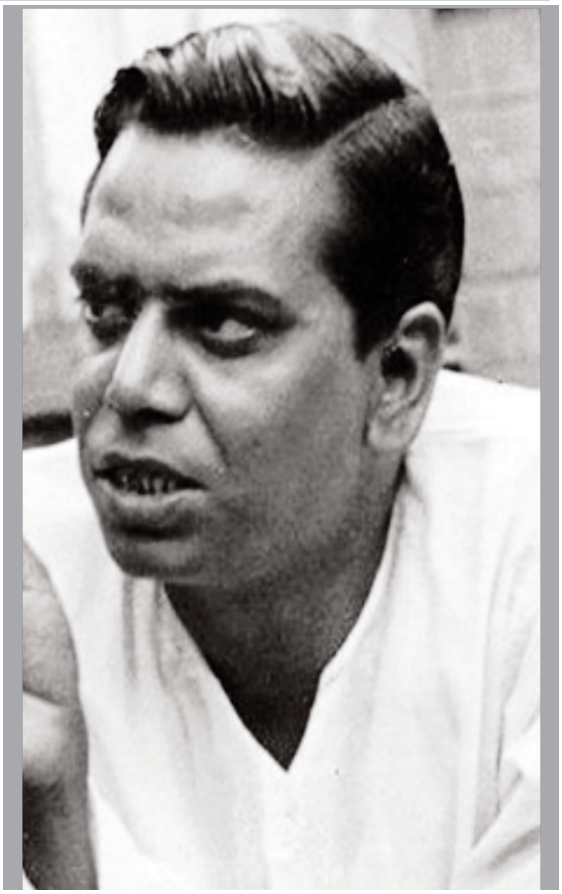

इस फिल्म की शूटिंग ने उन्हें कर्जदार बना दिया। यह फिल्म शुरुवात में बुरी तरह फ्लॉप हो गई ।

दोस्तों के भरोसे शैलेंद्र निर्माता बने लेकिन उन्हें नुकसान हुआ। वे इसे बर्दाश्त नहीं कर पाए और बुरी तरह टूट गए । माना जाता है कि यही उनकी मौत का कारण बना।

हबीब तनवीर

(1 सितंबर 1923 – 8 जून 2009)

हबीब तनवीर का जन्म रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ था। वे प्रख्यात नाट्यकार, निर्देशक, लेखक, नाट्य निदेशक, कवि और अभिनेता थे। हबीब तनवीर के पिता हफीज अहमद खान पेशावर (पाकिस्तान) के रहने वाले थे। हबीब तनवीर ने स्कूली शिक्षा रायपुर में पूरी की। इसके पश्चात नागपुर विश्वविद्यालय से स्नातक और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। फिर वे मुंबई चले गए। वहां उनका जुड़ाव इप्टा और प्रगतिशील लेखक संघ से हुआ। बम्बई मे वह ऑल इंडिया रेडियो से जुड़े, कविताएं लिखीं, फिल्मों में अभिनय भी किया। इसके पश्चात उन्होंने रॉयल एकादमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट लंदन से ट्रेनिंग ली। उन्होंने 1959 में नया थिएटर कंपनी स्थापित की थी। हबीब तनवीर ने थिएटर के साथ साथ टी वी सीरियल एवं बॉलीवुड की फिल्मों में भी अपने अभिनय की छाप छोड़ी। वे 1972 से 1978तक राज्यसभा सांसद भी रहे। वे राज्य सभा सांसद बनने वाले दूसरे रंगकर्मी थे । उनसे पहले यह सम्मान पृथ्वीराज कपूर को मिला था।

आगरा बाजार (1954) के पश्चात अन्य नाटकों के बीच ही हबीब तनवीर ने अपनी छत्तीसगढ़ी मंडली के साथ चरणदास चोर (1975) नाटक तैयार किया, जिसने नाटकों की एक नई परिभाषा गढ़ी। 1982 में एडिनबरा ड्रामा फेस्टिवल में चरणदास चोर के लिए जब हबीब तनवीर को एडिनबरा फ्रिंज अवार्ड मिला तो पूरी दुनिया का ध्यान हबीब तनवीर की ओर गया । चरणदास चोर एडिनबरा इंटरनेशनल ड्रामा फेस्टीवल (1982) में पुरस्कृत होने वाला पहला भारतीय नाटक था।

प्रमुख नाटक - आगरा बाजार,चरणदास चोर, लाला शोहरत राय, मिट्टी की गाड़ी, देख रहे हैं नैन, शतरंज के मोहरे, कामदेव का अपना बसंत ऋतु का सपना, जिन लाहौर नहीं वेख्या, बहादुर कलारिन, मोर नाव दामाद गांव के नाम ससुराल और हिरमा की अमर कहानी आदि ।

सम्मान - हबीब तनवीर को संगीत नाटक एकेडमी अवार्ड (1969), पद्मश्री अवार्ड (1983) संगीत नाटक एकादमी फेलोशीप (1996), पद्म विभूषण (2002)

गतिविधियाँ 2022-23

इतिहास विभाग - बांस शिल्प कला कार्यशाला में प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थीगण

एन.सी.सी केडेट कृतिका देवांगन एवं अभिषेक नेमा थल सैनिक कैम्प, दिल्ली में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु स्वर्ण पदक से सम्मानित

कलबुर्गी विश्वविद्यालय, कर्नाटक में आदिवासी लोकनृत्य प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय के विद्यार्थी

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थी गण

महाविद्यालय में आयोजित सेक्टर स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता का एक दृश्य

मानसी यदु एन.एस.एस. के राष्ट्रीय एकता शिविर अम्लेश्वर में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित

गतिविधियाँ 2022-23

मुख्य अतिथि मा. श्री अरुण वोरा, विधायक, दुर्ग तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष मा. श्री धीरज बाकलीवाल महापौर, नगर निगम दुर्ग, वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए

सांस्कृतिक संध्या - नैक पियर टीम के समक्ष प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक

वनस्पति शास्त्र विभाग - स्नातकोत्तर कक्षा के स्व सहायता समूह के विद्यार्थियों द्वारा स्वनिर्मित कला-शिल्प प्रदर्शनी

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in